विशद
चालीसा संग्रह

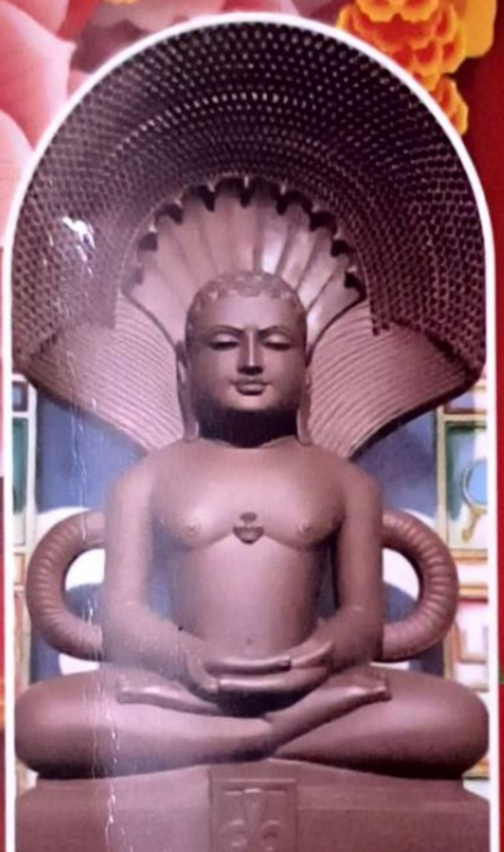

रचयिता

परम पूज्य क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर

आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

New
20-6-2012

।। श्री चतुर्विंशति जिनाय नमः।।

«h

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

New
20-6-2012

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।
दोहा– वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।
सर्वार्थ–सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।
चिह्न बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।

छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया।।
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।
प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए।।
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जगह–जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावे भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्।।

New
20-6-2012

श्री अजितनाथ चालीसा

दोहा- नमन मेरा अरिहंत को, सिद्धों को भी साथ।
आचार्य उपाध्याय साधु को, झुका रहे हम माथ ।।
जिनवाणी जिनधर्म जिन, चैत्यालय शुभकार।
अजित के पद युगल, वन्दन बारम्बार ।।

(चौपाई)

जय जय अजितनाथ जिन स्वामी, हो स्वामी तुम अन्तर्यामी।
तुमने सर्व चराचर जाना, जैसा है उस रूप बखाना ।।
आप हुए प्रभु केवलज्ञानी, कल्याणी प्रभु तेरी वाणी।
तुमने प्रभु शिवमार्ग दिखाया, आत्मबोध इस जग ने पाया ।।
देवों के तुम देव कहाते, सारे जग में पूजे जाते।
विजय अनुत्तर है शुभकारी, चयकर आये हे त्रिपुरारी ।।
जम्बूद्वीप लोक में गाया, भरत क्षेत्र उसमें बतलाया।
जिसमें कौशल देश बखाना, नगर अयोध्या अतिशय माना ।।
जितशत्रु राजा कहलाए, रानी विजया देवी पाए।
ज्येष्ठ अमावस को जिन स्वामी, गर्भ में आये अन्तर्यामी ।।
गर्भ नक्षत्र रोहिणी गाया, ब्रह्ममुहूर्त श्रेष्ठ बतलाया।
माघ शुक्ल दशमी शुभकारी, जन्म लिए जिनवर अविकारी ।।
तभी इन्द्र का आसन डोला, लोगों ने जयकारा बोला।
आसन से तब उठकर आया, सप्त कदम चल शीश झुकाया ।।
ऐरावत पर चढ़कर आया, साथ में शचि को अपने लाया।
मेरु गिरि पर लेकर जावें, पाण्डुक शिला पर न्हवन करावे ।।
इन्द्र ने पद में शीश झुकाया, पग में गज लक्षण शुभ पाया।
हाथ अठारह सौ ऊँचाई, अजितनाथ के तन की गाई ।।
लाख बहत्तर पूरब भाई, जिनवर ने शुभ आयु पाई।
उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा धारे अन्तर्यामी ।।

माघ शुक्ल नौमी दिन गाया, संध्याकाल का समय बताया।
देत पालकी सुप्रभ लाए, उसमें प्रभुजी को बैठाए ।।
ले उद्यान सेहुतक आए, सप्त वर्ण तरु तल पहुँचाए।
केशलुंच कर वस्त्र उतारे, सहस मुनि सह दीक्षा धारे ।।
वेलोपवास किए जिन स्वामी, ध्यान किए निज अन्तर्यामी ।।
ब्रह्मदत्त पड़गाहन कीन्हें, क्षीर खीर आहार जो दीन्हें।
पूर्वांग हीन लख स्वामी, तप धारे मुक्ति पथ गामी।
पौष शुक्ल एकादशी पाए, केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए ।।
धनपति स्वर्ग से चलकर आया, समवशरण अनुपम बनवाया।
साढ़े ग्यारह योजन जानो, छियालिस कोष श्रेष्ठ पहिचानो ।।
प्रातिहार्य से युक्त कहाए, पदमासन में शोभा पाए।
नब्बे गणधर प्रभु के गाए, प्रथम केसरी सिंह कहाए ।।
एक लाख मुनि संख्या गाई, श्रेष्ठ यक्षिणी अजिता गाई।
महायक्ष शुभ यक्ष बताया, श्रोता चक्री सागर कहाया ।।
तीन लाख श्रावक शुभ जानो, पाँच लाख श्राविकाएँ मानो।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सिद्धवर अतिशय पाये ।।
योग निरोध प्रभु ने पाया, एक माह का समय बताया।
चैत शुक्ल पाँचे शुभ गाई, प्रातः तुमने मुक्ति पाई ।।
कायोत्सर्गासन जिन पाए, सहस मुनि सह मोक्ष सिधाए।
प्रतिमाएँ कई मंगलकारी, रहीं लोक में अतिशयकारी।
जिनका आलम्बन हम पाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।

सोरठा- पढ़े भाव के साथ, चालीसा चालीस दिन।
चरण झुकाए माथ, सुख-शांति सौभाग्य हो ।।
पावे धन सन्तान, दीन दरिद्री होय जो।
विशद मिले सम्मान, नाम वंश यश भी बढ़े ।।

New
20-6-2012

श्री सम्भवनाथ चालीसा

दोहा– पञ्च परमेष्ठी लोक में, अतिशय रहे महान।
सम्भव जिन तीर्थेश का, करते हम गुणगान।।

(चौपाई)

सम्भव जिन शुभ करने वाले, भविजन का दुःख हरने वाले।
जो अनुपम महिमा धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
गुण गाने के भाव बनाए, जिन चरणों से प्रीति लगाए।
देवों के भी देव कहाए, शत इन्द्रों से पूज्य बताए।।
श्रेष्ठ दिगम्बर मुद्रा धारे, कर्म शत्रु प्रभु सभी निवारे।
मोह विजय तुमने प्रभु कीन्हा, उत्तम संयम मन से लीन्हा।।
जम्बू द्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र पावन शुभकारी।
आर्य खण्ड जिसमें बतलाया, भारत देश श्रेष्ठ शुभ गाया।।
श्रावस्ती नगरी है प्यारी, सुखी सभी थी जनता सारी।
भूप जितारी जी कहलाए, रानी आप सुसीमा पाए।।
स्वर्गों से चयकर प्रभु आए, सारे जग के भाग्य जगाये।
फाल्गुन सुदी अष्टमी जानो, मंगलमय ये तिथि पहचानो।।
सम्भव जिनवर गर्भ में आए, रत्नदेव तब कई वर्षाये।
छह महिने पहले से भाई, हुई रत्नवृष्टि सुखदायी।।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा गाई, पावन हुई जन्म से भाई।
इन्द्र कई स्वर्गों से आए, बालक का अभिषेक कराए।।
पग में अश्व चिह्न शुभ पाया, इन्द्र ने प्रभु पद शीश झुकाया।
सम्भवनाथ नाम बतलाया, जिन गुण गाकर के हर्षाया।।
जन्म से तीन ज्ञान प्रभु पाए, अतः त्रिलोकीनाथ कहाए।
साठ लाख पूरब की भाई, आयु जिनवर की बतलाई।।
धनुष चार सौ थी ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का था भाई।
अश्विन सुदी पूनम दिन आया, प्रभु ने संयम को अपनाया।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, महाव्रती बन के अविकारी।

देव कई लौकान्तिक आए, श्रेष्ठ प्रशंसा कर हर्षाए।।
देवों ने तब हर्ष मनाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।
पूजा करके प्रभु गुण गाए, जयकारों से गगन गुँजाए।।
स्वर्ण पेटिका दिव्य मँगाई, उसमें केश रखे शुभ भाई।
देव पेटिका हाथ सम्हाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डाले।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, निज स्वभाव में निज को पाया।
कार्तिक वदी चौथ प्रभु पाए, अनुपम केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाए, गंधकुटी अतिशय बनवाए।
प्रातिहार्य जिसमें प्रगटाए, कमलासन अतिशय बनवाए।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, गणधर आदि चरण में आए।
बारह सभा लगी मनहारी, दिव्य ध्वनि पाई शुभकारी।।
श्रावक कई चरणों में आए, भिन्न-भिन्न वह पूज रचाए।
मनवांछित फल वह सब पाए, अपने जो सौभाग्य जगाए।।
प्रभु सम्मेदशिखर पर आए, शाश्वत तीर्थराज कहलाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि कीन्हें, निज स्वभाव में दृष्टि दीन्हें।।
धवल कूट है मंगलकारी, ध्यान किए जाके त्रिपुरारी।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, एक माह निज में चित्त दीन्हें।।
चैत्र सुदी षष्टी को स्वामी, बने कर्म नश शिवपथ गामी।
एक समय में शिवपद पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।
हम यह नित्य भावना भाते, प्रभु पद अपने हृदय सजाते।
जिस पद को प्रभुजी तुम पाए, वह पद पाने पद में आए।
इच्छा पूर्ण करो हे स्वामी, तव चरणों में विशद नमामि।।
जागें अब सौभाग्य हमारे, कट जाएँ भव-बन्धन सारे।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, प्रतिदिन चालीस बार।
पढ़ने से शांति मिले, मन में अपरम्पार।।
स्वजन मित्र मिलकर सभी, करते हैं सहयोग।
इस भव में शांति 'विशद', परभव शिव का योग।।

New
20-6-2012

श्री अभिनंदननाथ चालीसा

दोहा- नव देवों के चरण में, नव कोटि के साथ।
भक्ति करते भाव से, चरण झुकाते माथ।।
अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
मुक्ति पद के भाव से, लिखते अपरम्पार।।

(चौपाई)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका कहीं न होता अंत।
बीच में तीनों लोक महान्, मध्य लोक में मध्य प्रधान।।
जिसमें जम्बूद्वीप विशेष, दक्षिण में है भारत देश।
नगर अयोध्या रहा महान्, नृपति संवर जिसका जान।।
कश्यप गोत्र रहा शुभकार, वंश इक्ष्वाकु मंगलकार।
रानी सिद्धार्था के उर आन, गर्भ में आए जिन भगवान।।
बेला प्रत्यूष रही प्रधान, पुनर्वसू नक्षत्र महान्।
वैसाख शुक्ला षष्ठी जान, पाए प्रभु गर्भ कल्याण।।
माघ शुक्ल बारस शुभकार, जन्म लिए जिन मंगलकार।
पुनर्वसु नक्षत्र प्रधान, राशि स्वामी बुध पहिचान।।
पीत वर्ण तन का शुभकार, बन्दर चिह्न रहा मनहार।
पचास लाख पूरब की जान, आयु पाये जिन भगवान।।
साढ़े तीन सौ धनुष महान्, अवगाहन प्रभु तन का जान।
प्रभु ने देखा मेघ विनाश, धारण किए आप सन्यास।।
माघ शुक्ल बारस मनहार, प्रत्यूष बेला अपरम्पार।
चित्रा हस्त पालकी जान, पुनर्वसु नक्षत्र महान्।।
नगर अयोध्या रहा महान्, दीक्षा स्थल उग्र उद्यान।
दीक्षा वृक्ष असन पहिचान, धनु बयालिस सौ उच्च महान्।।
सहस भूप सह दीक्षित जान, कर बेला उपवास महान्।
दो दिन बाद लिए आहार, क्षीर खीर का प्रभु मनहार।।

नगर अयोध्या मंगलकार, राजा इन्द्रदत्त गृहवार।
शुभ अष्टादश वर्ष विशेष, रहे आप छद्मस्थ जिनेश।।
पौष शुक्ल चौद, दिनमान, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
इन्द्र राज धनपति के साथ, आकर चरण झुकाए माथ।।
समवशरण रचना शुभकार, साढ़े दश योजन विस्तार।
पद्मासन में बैठ जिनेश, दिव्य-देशना दिए विशेष।।
गणधर एक सौ तीन महान्, वज्रनाभि थे गणी प्रधान।
तीन लाख मुनिवर अनगार, प्रभु के साथ रहे शुभकार।।
यक्षेश्वर था यक्ष प्रधान, यक्षी वज्र शृंखला जान।
छठ वैसाख शुक्ल की जान, श्री सम्मेद शिखर स्थान।।
खड्गासन से आप जिनेश, कूटानन्द स्थान विशेष।
सर्व कर्म का किए विनाश, सिद्ध शिला पर कीन्हें वास।।
पाए ज्ञान अनन्तानन्त, सुख अनन्त पाए भगवन्त।
आप हुए अभिनन्दन नाथ, चरण झुकाते तव हम माथ।।
कई जिनबिम्ब रहे शुभकार, सर्व जहाँ में मंगलकार।
अनुपम रहा दिगम्बर भेष, देते शिवपद का उपदेश।।
भक्ति करे भाव के साथ, प्रभु के चरण झुकाए माथ।
उसका होय 'विशद' कल्याण, शीघ्र प्राप्त हो केवलज्ञान।।
नश जाए क्षण में संसार, मुक्ति पद पाए शुभकार।
हम भी करते प्रभु गुणगान, प्राप्त हमें हो पद निर्वाण।।

दोहा- अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
पढ़े सुने जो भाव से, उसका हो उद्धार।।
सुख-शांति सौभाग्य पा, जग में बने महान्।
कर्म नाश कर जीव वह, पद पावे निर्वाण।।

New
20-6-2012

श्री सुमतिनाथ चालीसा

दोहा- नव देवों को पूजते, पाने को शिव धाम।
सुमतिनाथ के पद युगल, करते विशद प्रणाम।।

चौपाई

सुमतिनाथ के पद में जावे, उसकी मति सुमति हो जावे।
प्रभु कहे त्रिभुवन के स्वामी, जन-जन के हैं अन्तर्यामी।।
अनुपम भेष दिगम्बर धारी, जिन की महिमा जग से न्यारी।
वीतराग मुद्रा है प्यारी, सारे जग की तारण हारी।।
नगर अयोध्या मंगलकारी, जन्मे सुमतिनाथ त्रिपुरारी।
पिता मेघरथजी कहलाए, मात मंगला जिनकी गाए।।
वंश रहा इक्ष्वाकु भाई, महिमा जिसकी जग में गाई।
वैजयन्त से चयकर आये, श्रावण शुक्ल दोज शुभ पाए।।
मघा नक्षत्र रहा मनहारी, ब्रह्ममुर्हूर्त पाए शुभकारी।
चैत्र शुक्ल ग्यारस दिन आया, जन्म प्रभुजी ने शुभ पाया।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाए, जा सुमेरु पर न्हवन कराए।
चकवा चिह्न पैर में पाया, सुमतिनाथ शुभ नाम बताया।।
स्वर्ण रंग तन का शुभ जानो, धनुष तीन सौ ऊँचे मानो।
जाति स्मरण देखकर स्वामी, बने आप मुक्तिपथ गामी।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी गाई, मघा नक्षत्र पाए सुखदायी।
तेला का व्रत धारण कीन्हे, सहस्र भूप संग दीक्षा लीन्हे।।
गये सहेतुक वन में स्वामी, तरुवर रहा प्रियंगु नामी।
पौष शुक्ल पूनम शुभकारी, हस्त नक्षत्र रहा मनहारी।।
नगर अयोध्या में फिर आए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।
समवशरण तव देव बनाए, दश योजन विस्तार बताए।।

गणधर एक सौ सोलह गाए, गणधर प्रथम वज्र कहलाए।
मुनिवर तीन लाख कहलाए, बीस हजार अधिक बतलाए।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, कर्म नाश कर मुक्ति पाए।
कृपा करो भक्तों पर स्वामी, बनें सभी मुक्ति पथगामी।।
इस जग के सारे दुःख पाए, अन्त में भव से मोक्ष सिधाए।
विनती चरणों विशद हमारी, बनो सभी के प्रभु हितकारी।।
चालिस लाख पूर्व की स्वामी, आयु पाए शिवपद गामी।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अन्तर्यामी।
चैत्र शुक्ल दशमी शुभ गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ति पाई।।
सहस्र मुनि सह मुक्ति पाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अविचल कूट रहा शुभकारी, तीर्थ क्षेत्र पर मंगलकारी।।
तीर्थ वन्दना करने आते, प्राणी अपने भाग्य सजाते।
सीकर जिला रहा शुभकारी, रैंवासा में अतिशयकारी।।
प्रतिमा प्रगट हुई मनहारी, सुमतिनाथ की मंगलकारी।
दर्शन प्रभु का है सुखदायी, शांतिदायक है अति भाई।।
जसों का खेड़ा ग्राम बताया, जिला भीलवाड़ा कहलाया।
मूलनायक जिन प्रतिमा सोहे, भव्यों के मन को जो मोहे।।
कई ग्रामों में प्रतिमा प्यारी, शोभित होती है मनहारी।
दर्शन पाते हैं नर-नारी, श्री जिनवर का मंगलकारी।।
जो भी प्रभु का दर्शन पाए, बार-बार दर्शन को आए।
हम भी प्रभु का ध्यान लगाएँ, निज आतम की शांति पाएँ।।

दोहा- चालीसा चालिस दिन, सद् श्रद्धा के साथ।
शांति मन में हो विशद, बने श्री का नाथ।।

* * *

New
20-6-2012

श्री पदमप्रभु चालीसा

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, करते बारम्बार।
चालीसा जिन पदम का, गाते अपरम्पार।।

चौपाई

जय-जय पद्म प्रभु जिन स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी।
भेष दिगम्बर तुमने पाया, सारे जग का मोह नशाया।।
शांति छवि मुद्रा अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अस्त्र-शस्त्र त्यागे तुम सारे, रहे न कोई शत्रु तुम्हारे।।
उपरिम ग्रैवयक से चय कीन्हे, स्वर्ग संपदा छोड़ जो दीन्हे।
कौशाम्बी नगरी शुभकारी, चयकर आये प्रभु अवतारी।।
धरणराज के लाल कहाए, मात सुसीमा के उर आए।
वंश इक्ष्वाकु तुमने पाया, इस जग में अनुपम कहलाया।।
माघ कृष्ण षष्ठी शुभकारी, चित्रा नक्षत्र रहा मनहारी।
प्रातःकाल गर्भ में आये, मात-पिता के भाग्य जगाये।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि जानो, शुभ नक्षत्र चित्रा पहचानो।
इन्द्र करें जिनकी पदसेवा, जन्मे पद्म प्रभ जिनदेवा।।
कौशाम्बी में मंगल छाया, जन्मोत्सव तव वहाँ मनाया।
इन्द्र मेरु पर न्हवन कराए, कमल चिह्न प्रभु के पद पाए।।
धनुष ढाई सौ उच्च कहाए, लाल रंग तन का प्रभु पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, प्रभु के मन वैराग्य समाया।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस तिथि जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो।
तृतिय भक्त प्रभु जी पाए, सहस्र भूप सह दीक्षा पाए।।
समवशरण आ देव बनाए, साढ़े नौ योजन का गाए।
बाड़ा गाँव एक बतलाया, मूला जाट वहाँ का गाया।।

उसको तुमने स्वप्न दिखाया, मन ही मन मूला हर्षाया।
उसने गृह की नींव खुदायी, उसमें मूर्ति निकली भाई।।
आस-पास के लोग बुलाए, सबको वह मूर्ति दिखलाए।
कमल चिह्न था उसमें भाई, जय बोले सब मिलके भाई।।
दर्शन करने श्रावक आए, बाधा प्रेत की दूर भगाए।
मनोकामना पूरी करते, दुःखियों के सारे दुःख हरते।।
पद्म प्रभु के गुण हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
यही भावना रही हमारी, सुखी रहे प्रभु जनता सारी।।
धर्मी हों इस जग के प्राणी, पढ़ें-सुनें हर दिन जिनवाणी।
नर जीवन को सफल बनावें, सम्यक् श्रद्धा संयम पावें।।
निज आतम का ध्यान लगावें, कर्म नाशकर शिवपुर जावें।
मुनिवर तीन सौ चौबिस भाई, साथ में प्रभु के मुक्ति पाई।।
बारह सभा जुड़ी वहाँ भाई, दिव्य देशना श्रेष्ठ सुनाई।
गणधर एक सौ ग्यारह गाए, प्रथम चमर गणधर कहलाए।।
तीस लाख पूरब की स्वामी, आयु पाये हैं प्रभु नामी।
छदमस्थ काल छह माह का पाए, ज्ञानी बनकर शिवसुख पाए।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, योग निरोध महिने का पाए।
फाल्गुन शुक्ल चौथ शुभकारी, मुक्ति पाए प्रभु अविकारी।।
मोहन कूट से मोक्ष सिधाए, अग्निदेव भक्ति से आए।
नख केशों को तभी जलाए, प्रभु पद भक्ति कर हर्षाए।।
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुख अनन्त अविनाशी पाए।

दोहा- चालीसा प्रभु पद्म का, दिन में चालिस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़े, पावें शांति अपार।।

* * *

New
20-6-2012

श्री सुपार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, जग में अपरम्पार।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार।।
चालीसा लिखते यहाँ, जिन सुपार्श्व के नाम।
तीन योग से चरण में, करके विशद प्रणाम।।

(चौपाई)

जिन सुपार्श्व महिमा के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के अनुपम त्राता।।
मोह मान माया को त्यागा, केवल ज्ञान हृदय में जागा।
अतः आपके गुण सब गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जम्बू द्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
काशी देश बनारस नगरी, प्रजा सुखी जानो तुम सगरी।।
सुप्रतिष्ठ राजा शुभ गाए, पृथ्वी सेना रानी पाए।
भादव शुक्ला षष्ठी जानो, प्रत्यूष बेला शुभ पहिचानो।।
मध्यम ग्रैवेयक से चय आये, समुद्र विमान वहाँ पर पाए।
विशाख नक्षत्र रहा शुभकारी, गर्भ प्रभु पाए मनहारी।।
देव स्वर्ग से चलकर आए, रत्नों की वृष्टी करवाए।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाख बखानो।।
अग्निमित्र योग शुभकारी, तुला राशि जानो मनहारी।
शुक्र राशि का स्वामी गाया, जिसमें जन्म प्रभु ने पाया।।
हरित वर्ण तन का शुभ जानो, स्वस्तिक चिह्न आपका मानो।
इन्द्रराज चरणों में आया, पद में सादर शीश झुकाया।।
सहस आठ कलशा शुभ लाया, मेरू गिरि पर न्हवन कराया।
बीस लाख पूरब की भाई, आयु पाये हैं सुखदायी।।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, प्रभु के तन की मंगलदायी।
पतझड़ देख भावना भाए, मन में प्रभु वैराग्य जगाए।।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस पहिचानो, सायंकाल श्रेष्ठ शुभ मानो।
विशाख नक्षत्र श्रेष्ठ शुभ पाए, देव स्वर्ग से चलकर आए।।
पालकी श्रेष्ठ मनोगति लाए, सहस्राभ वन में पहुँचाए।
शिरीष वृक्ष रहा शुभ भाई, धनुष श्रेष्ठ दो सौ ऊँचाई।।
एक सहस्र भूपति संग आए, प्रभु के साथ में दीक्षा पाए।
सोम खेट नगरी शुभ जानो, महेन्द्रदत्त नृप के गृह मानो।।
प्रभु आहार क्षीर की कीन्हें, विषयों की आशा तज दीन्हें।
शुभ छद्मस्थ काल सुखदायी, प्रभु नौ वर्ष बताया भाई।।
फाल्गुन कृष्णा षष्ठी जानो, तिथि शुभ केवलज्ञान की मानो।
सौ-सौ इन्द्र शरण में आए, चरणों में नत शीश झुकाए।।
धनपति साथ में इन्द्र के आया, जो शुभ समवशरण बनवाया।
सौ योजन का है शुभकारी, तरुवर श्रेष्ठ अशोक मनहारी।।
गणधर पञ्चानवे शुभ गाये, बलदत्त प्रथम गणी कहलाए।
मुनिवर ढाई लाख बतलाए, जो शुभ उत्तम संयम पाए।।
काली यक्षी प्रभु की गाई, यक्ष विजय था अनुपम भाई।
गिरि सम्मेद शिखर जिन आए, कूट प्रभास प्रभुजी पाए।।
फाल्गुन वदि साते शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाखा मानो।
खड्गासन से श्री जिन स्वामी, जिन मुक्ति पाए अनुगामी।।
जिनवर श्री सुपार्श्व कहलाए, जो उपसर्ग जयी शुभ गाए।
प्रभु की प्रतिमाएँ शुभकारी, इस जग में अति मंगलकारी।।
कई इक जगह नागफण वाली, प्रतिमाएँ शुभ रही निराली।
प्राणी शुभ जिन दर्शन पाएँ, शिवपद का जो बोध कराएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
शुभ तन मन सौभाग्य पा, बने श्री के नाथ।।
सुख समृद्धि बुद्धि बल, बढ़ता अपने आप।
'विशद' ज्ञान जागे परम, कट जाते हैं पाप।।

New
20-6-2012

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, करते योग सम्हाल।
चन्द्र प्रभु के चरण में, वन्दन है नत भाल।।

(शम्भू -छन्द) तर्ज- आल्हा

भव दुःख से संतप्त मरुस्थल, में यह भटक रहा संसार।
चन्द्र प्रभु की छत्र छाँव में, आश्रय मिलता है शुभकार।।
जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्रपुरी है मंगलकार।
यहाँ सुखी थी जनता सारी, महासेन नृप का दरबार।।1।।
महिषी जिनकी वही सुलक्षणा, शुभ लक्षण से युक्त महान।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ में आये थे भगवान।।
इक्ष्वाकु वंश आपका, सारे जग में अपरम्पार।
चैत कृष्ण पाँचे को प्रभु ने, भारत भू पर ले अवतार।।2।।
शुभ नक्षत्र विशाखा पावन, अन्तिम रात्रि थी मनहार।
देव-देवियों ने हर्षित हो, आके किया मंगलाचार।।
पौष कृष्ण ग्यारस को जन्में, हर्षित हुआ राज परिवार।
इन्द्रों ने जाकर सुमेरु पर, न्हवन कराया बारम्बार।।3।।
दाँये पग में अर्द्ध चन्द्रमा, देखके इन्द्र बोला नाम।
चन्द्र प्रभु की जय बोली फिर, चरणों में कीन्हा विशद प्रणाम।।
बढ़ने लगे प्रभु नित प्रतिदिन, गुण के सागर महति महान।
आयु लाख पूर्व दश की शुभ, पाए चन्द्र प्रभु भगवान।।4।।
धनुष डेढ़ सौ थी ऊँचाई, धवल रंग स्फटिक के समान।
तड़ित चमकता देख गगन में, हुआ प्रभु को निज का भान।।
मार्ग शीर्ष शुक्ला सातें को, धारण कीन्हें प्रभु वैराग्य।
अनुराधा नक्षत्र में भाई, सहस्र भूप के जागे भाग्य।।5।।
वन सर्वार्थ नाग तरु तल में, प्रभु ने कीन्हा आतम ध्यान।
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी को प्रभु, पाए अनुपम केवलज्ञान।।
समवशरण की रचना आकर, देवों ने की मंगलकार।

साढ़े आठ योजन का भाई, समवशरण का था विस्तार।।6।।
गणधर रहे तिरानवे प्रभु के, उनमें रहे वैदर्भ प्रधान।
गिरि सम्मेद शिखर पर प्रभु जी, ललित कूट पर किये प्रयाण।।
योग निरोध किया था प्रभु ने, एक माह तक करके ध्यान।
भादों शुक्ल सप्तमी को शुभ प्रभु, ने पाया पद निर्वाण।।7।।
ज्येष्ठा शुभ नक्षत्र बताया, काल बताया है पौवाह्ण।
एक हजार साथ में मुनियों, ने भी पाया पद निर्वाण।।
वीतराग मुद्रा को लखकर, बने देव चरणों के भक्त।
मनोयोग से जिन चरणों की, भक्ति में रहते अनुरक्त।।8।।
समन्तभद्र मुनिवर को भाई, भस्म व्याधि जब हुई महान।
शिव को भोग खिलाऊँगा मैं, राजा से वह बोले आन।।
छुपकर उत्तम भोजन खाया, हुआ व्याधि का पूर्ण विनाश।
पता चला राजा को जब तो, राजा मन में हुआ उदास।।9।।
राजा समन्तभद्र से बोले, शिव पिण्डी को करो नमन।
पिण्डी नमन झेल न पाए, कर दो सांकल से बन्धन।।
आप स्वयंभू पाठ बनाए, शीश झुकाकर किए नमन।
पिण्डी फटी चन्द्र प्रभु स्वामी, के सबने पाए दर्शन।।10।।
प्रगट हुए देहरा में प्रभु जी, लोग किए तब जय-जयकार।
सोनागिर में आप विराजे, समवशरण ले सोलह बार।।
टोंक जिला के मैंदवास में, प्रकट हुए भूमि से नाथ।
जयपुर में बैनाड़ क्षेत्र पर, भक्त झुकाते चरणों माथ।।11।।
नगर-नगर के मंदिर में प्रभु, शोभित होते हैं अविकार।
पूजा आरति वन्दन करते, भक्त चरण में बारम्बार।।
सब जीवों में मैत्री जागे, सुख-शांतिमय हो संसार।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होवे भव से बेड़ा पार।।12।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, होय श्री का नाथ।।

New
20-6-2012

श्री पुष्पदन्त चालीसा

दोहा- अर्हत् सिद्धागम धरम, आचार्योपाध्याय संत।
जिन मंदिर जिनबिम्ब को, नमन अनन्तानंत।।
कुन्द पुष्प सम रूप शुभ, पुष्पदन्त है नाम।
चरण-कमल द्वय में विशद, बारम्बार प्रणाम।।

चौपाई

जय-जय पुष्पदन्त जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
तुम हो सब देवों के देवा, इन्द्र करें तव पद की सेवा।।
महिमा है इस जग से न्यारी, सारी जगती बनी पुजारी।
महिमा सारा जग ये गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आए, काकन्दी नगरी कहलाए।
पिताश्री सुग्रीव कहाए, माताश्री जयरामा पाए।।
फाल्गुन कृष्ण नौमी कहलाए, मूल नक्षत्र गर्भ में आए।
प्रातःकाल का समय बताए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।।
मगसिर शुक्ला एकम जानो, प्रभु ने जन्म लिया यह मानो।
मगर चिह्न प्रभु का बतलाया, इन्द्रों ने पद शीश झुकाया।।
धवल रंग प्रभु जी शुभ पाए, धनुष एक सौ ऊँचे गाए।
उल्कापात देख के स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी।।
मगसिर कृष्णा एकम पाए, अनुराधा नक्षत्र कहाए।
अपराह्न काल दीक्षा का गाया, तृतिय भक्त प्रभु ने पाया।।
दीक्षा वृक्ष पुष्प शुभ गाया, शाल वृक्ष तल ध्यान लगाया।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
कार्तिक शुक्ला तीज बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।
काकन्दी नगरी फिर आए, अक्ष तरु वन पुष्प कहाए।।

समवशरण वसु योजन पाए, सुन्दर आके देव रचाए।
एक माह पूर्व से स्वामी, योग निरोध किए जगनामी।।
यक्ष आपका ब्रह्म कहाए, काली श्रेष्ठ यक्षणी पाए।
गणधर आप अठ्यासी पाए, उनमें नाग प्रथम कहलाए।।
आयु लाख पूर्व दो पाए, चार वर्ष छद्मस्थ बिताए।
सर्व ऋषि दो लाख बताए, समवशरण में प्रभु के गाए।।
घोषा प्रथम आर्यिका जानो, छियालीस गुण के धारी मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, एक हजार मुनि संग मानो।
मूल नक्षत्र प्रभु जी पाए, अपराह्न काल में मोक्ष सिधाए।।
शुक्रारिष्ट ग्रह जिन्हें सताए, पुष्पदंत प्रभु को वह ध्याये।
पूजा और विधान रचाए, भावसहित चालीसा गाए।।
करे आरती मंगलकारी, शुक्रवार के दिन मनहारी।
जीवन में सुख-शांति पावे, भक्त भाव से जो गुण गावे।।
प्रभु की महिमा रही निराली, है सौभाग्य जगाने वाली।
महिमा सुनकर के हम आए, भाव सुमन अपने उर लाए।।
मम जीवन हो मंगलकारी, विघ्न व्याधि नश जाए हमारी।
तव प्रतिमा के दर्शन पाएँ, हर्ष-हर्ष करके गुण गाएँ।।
पद में सादर शीश झुकाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।
भव सिन्धु से मुक्ति पाएँ, हम भी अब शिव पदवीं पाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री के नाथ।।
विधि सहित पूजा करें, करके 'विशद' विधान।
पाते हैं सौभाग्य वह, अन्त में हो निर्वाण।।

New
20-6-2012

श्री शीतलनाथ चालीसा

दोहा- नमन करें अरहंत को, करें सिद्ध का ध्यान।
आचार्योपाध्याय साधु का, करें विशद गुणगान।।
जैनागम जिनधर्म शुभ, जिन मंदिर नवदेव।
शीतलनाथ जिनेन्द्र को, वन्दूँ विनत सदैव।।

(चौपाई)

आरण स्वर्ग से चय कर आये, माहिलपुर को धन्य बनाए।
जय-जय शीतल नाथ हमारे, भव-भव के दुःख नाशन हारे।।
तुमने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।
दृढ़रथ नृप के पुत्र कहाए, मात सुनन्दा प्रभु की गाए।।
गर्भोत्सव तव इन्द्र मनाए, रत्न वृष्टि करके हर्षाए।।
क्षीर सिन्धु से जल भर लाए, जन्मोत्सव पर न्हवन कराए।।
आयु लाख पूर्व की जानो, कल्प वृक्ष लक्षण पहिचानो।
नब्बे धनुष रही ऊँचाई, महिमा जिनकी कही न जाई।।
पद युवराज आपने पाया, कई वर्षों तक राज्य चलाया।
हिम का नाश देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।।
केशलोंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर प्रभु अविकारी।
पंच महाव्रत प्रभु ने पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
संयम तप धारण कर लीन्हें, संवर और निर्जरा कीन्हें।
कर्म घातिया प्रभु जी नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।।
इन्द्र अनेकों चरणों आये, भक्ति भाव से शीश झुकाए।
पूजा कीन्हीं मंगलकारी, अतिशय हुए वहाँ पर भारी।।
समवशरण तव देव बनाए, प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए।

गणधर रहे सतासी भाई, जिनकी महिमा है अधिकाई।।
कुन्थु गणधर प्रथम कहाए, चार ज्ञान के धारी गाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्य जीव सुनने को आए।।
गणधर झेले जिसको भाई, सब भाषा मय सरल बनाई।
सम्यक् दर्शन पाए प्राणी, सुनकर श्री जिनवर की वाणी।।
कुछ लोगों ने संयम पाया, मोक्ष मार्ग उनने अपनाया।
गगन गमन करते थे स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।।
स्वर्ण कमल पग तल में जानो, देव श्रेष्ठ रचते थे मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आये, योग रोधकर ध्यान लगाए।।
विद्युतवर शुभ कूट कहाए, जिसकी महिमा कही न जाए।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र पिछानो।।
इक साधु के संग में भाई, शीतल जिन ने मुक्ति पाई।
विशद भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जिस पथ को तुमने अपनाया, मेरे मन में पथ वह भाया।
इसी राह पर हम बढ़ जाएँ, उसमें कोई विघ्न न आएँ।।
साहस बढ़े हमारा स्वामी, बने मोक्ष के हम अनुगामी।
शिव पदवी को हम भी पाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़े, होवे भव से पार।।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, होवे बहु गुणवान।
कर्म नाशकर शीघ्र ही, उसका हो निर्वाण।।

* * *

New
20-6-2012

श्री श्रेयांसनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, झुका भाव से शीश।
भक्ति करे जो भी विशद, पा जाए आशीष।।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार।
श्रेयांशनाथ भगवान को, वन्दन बारम्बार।।

(चौपाई)

जय जय श्रेयांशनाथ गुणधारी, स्वामी तुम हो जग हितकारी।
तुमने भेष दिगम्बर धारा, लगे हृदय को प्यारा-प्यारा।।
स्वामी तुम सर्वज्ञ कहाए, तीर्थंकर ग्यारहवें गाए।
शांत छवि है श्रेष्ठ निराली, जन-जन का मन हरने वाली।।
नाम तुम्हारा प्यारा-प्यारा, जग को तुमने दिया सहारा।
सिंहपुरी नगरी है प्यारी, श्रेष्ठ भक्त रहते नर-नारी।।
राजा विष्णुराज कहाए, रानी वेणु देवी पाए।
स्वर्ग लोक से चय कर आए, सिंहपुरी में मंगल छाए।।
हुई रत्न वृष्टि शुभकारी, नगरी पावन हो गई सारी।
श्रेष्ठ कृष्ण दशमी शुभ जानो, गर्भकल्याणक प्रभु का मानो।।
जन्म प्रभु ने जिस दिन पाया, इन्द्रराज ऐरावत लाया।
नाम श्रेयांस कुमार बताया, अनुपम जयकारा लगवाया।।
चन्द्र कलाओं जैसे स्वामी, वृद्धि पाए थे शिवगामी।
मेरु गिरि पर न्हवन कराया, इन्द्र ने अपना धर्म निभाया।।
फाल्गुन कृष्णा ग्यारस भाई, जन्म तिथि जिनवर की गाई।
प्रभु के चरणों शीश झुकाया, गेण्डा चिह्न देख हर्षाया।।
अस्सी धनुष रही ऊँचाई, श्री श्रेयांश के तन की भाई।
लाख चौरासी वर्ष की स्वामी, आयु पाए अन्तर्यामी।।
देख बसन्त लक्ष्मी विनशाई, जिनवर ने शुभ दीक्षा पाई।
फाल्गुन कृष्णा चौदस जानो, प्रभु का तप कल्याणक मानो।।

देव पालकी लेकर आए, प्रभुजी को उसमें बैठाए।
तभी पालकी देव उठाए, मानव उसमें रोक लगाए।।
प्रभु को लेकर हम जाएँगे, साथ में हम संयम पाएँगे।
देव तभी सुनकर घबराए, नहीं पालकी देव उठाए।।
लिए पालकी मानव जाते, गगन में प्रभु को ले उड़ जाते।
वन में प्रभुजी को पहुँचाए, वस्त्र उतारे दीक्षा पाए।।
केशलुंच निज हाथों कीन्हें, देवों ने भक्ति से लीन्हें।
दिव्य पेटिका में ले चाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डालें।।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभकारी, हुई लोक में मंगलकारी।
निज आतम का ध्यान लगाए, प्रभुजी केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाते, जिनप्रभु की शुभ महिमा गाते।
सप्त योजन विस्तार बताया, महिमाशाली अनुपम गाया।।
गणधर श्रेष्ठ बहत्तर गाए, कुन्थु जिनमें प्रथम कहाए।
दिव्य ध्वनि प्रभु की शुभकारी, चउ संध्या में खिरती न्यारी।।
सुर नर पशु सभी मिल आते, कोई सम्यक् दर्शन पाते।
कोई देश व्रतों को पावें, कोई संयम को उपजावें।।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा प्यारी, तिथि हो गई मंगलकारी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, हुए पथ के अनुगामी।।
अपने सारे कर्म नशाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।
विशद भावना हम यह भाए, तव गुण पाने को हम आए।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति सौभाग्य पा, बने श्री का नाथ।।
श्री श्रेयांस के नाम का, करे भाव से जाप।
विशद ज्ञान को पाएगा, कट जाएँगे पाप।।

जाप- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः।

New
20-6-2012

श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
वासुपूज्य के पद युगल, विनत झुके मम् शीश।।

(चौपाई)

वासुपूज्य जिनराज कहाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अनुपम केवलज्ञान जगाए, अविनाशी अनुपम पद पाए।।
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी कहलाए।
पिता वसु नृप अनुपम गाए, जयावती के लाल कहाए।।
आषाढ़ कृष्ण दशमी दिन पाए, इक्ष्वाकु शुभ वंश उपाए।
गर्भ नक्षत्र शतभिषा गाए, प्रातःकाल का समय बिताए।।
फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी गाया, जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया।
शुभ नक्षत्र विशाका गया, इन्द्र तभी ऐरावत लाया।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भैंसा चिह्न पैर में पाया।
वासुपूज्य तब नाम बताया, हर्ष सभी के मन में छाया।।
लोग सभी जयकार लगाए, सत्तर धनुष ऊँचाई पाए।
माघ शुक्ल की चौथ बताए, जाति स्मरण प्रभु जी पाए।।
अपराह्न काल का समय बताया, एक उपवास प्रभु ने पाया।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, लाल वर्ण तन का प्रभु पाए।।
प्रभु मनोहर वन में आए, तरु पाटला का तल पाए।
राजा छह सौ छह बतलाए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।
आयु लाख बहत्तर पाए, उत्तम तप कर कर्म नशाए।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभ पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।
मिलकर इन्द्र वहाँ पर आए, प्रभु के पद में ढ़ोक लगाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, साढ़े छह योजन कहलाए।।

गौरी श्रेष्ठ यक्षिणी जानो, सन्मुख यक्ष प्रभु का मानो।
एक माह पूर्व से भाई, योग निरोध किए सुखदायी।।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी आई, जिस दिन प्रभु ने मुक्ति पाई।
शुभ नक्षत्र अश्विनी गाया, अपराह्न काल का समय बताया।।
मुनिवर छह सौ एक कहाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
छियासठ प्रभु के गणधर गाए, मन्दर उनमें प्रथम कहाए।।
बारह सौ थे पूरब धारी, दश हजार विक्रिया धारी।
शिक्षक पद के धारी गाए, उन्तालिस हजार दो सौ कहलाए।।
छह हजार थे केवलज्ञानी, छह हजार मनःपर्यय ज्ञानी।
दश हजार विक्रियाधारी, ब्यालिस सौ वादी शुभकारी।।
चौवन सौ अवधिज्ञानी पाए, सहस्र बहत्तर सब ऋषि गाए।
आर्यिकाएँ प्रभु चरणों आईं, एक लाख छह सहस्र बताईं।।
वरसेना गणिनी कहलाई, आयु लाख बहत्तर पाई।
एक वर्ष छद्मस्थ बिताए, चम्पापुर से मुक्ति पाए।।
पाँचो कल्याणक शुभ जानो, चम्पापुर में प्रभु के मानो।
ग्रहारिष्ट मंगल के स्वामी, वासुपूज्य जिन अन्तर्यामी।।
मंगल ग्रह हो पीड़ाकारी, प्रभु का वह बन जाए पुजारी।
आरती कर चालीसा गाए, ग्रह पीड़ा को शीघ्र नशाए।।
सुख–शांति वह मानव पाए, उसका भाग्य उदय में आए।
रत्नत्रय पा कर्म नशाए, शीघ्र विभव से मुक्ति पाए।।
यही भावना 'विशद' हमारी, मुक्ति दो हमको त्रिपुरारी।
भव सागर में नहीं भ्रमाएँ, शिवपद पाके शिवसुख पाएँ।।

दोहा– चालीसा जो भाव से, पढ़ते दिन चालीस।
पाते सुख शांति विशद, बनते शिवपति ईश।।

New
20-6-2012

श्री विमलनाथ चालीसा

दोहा– पश्च परम परमेष्ठि को, वन्दन बारम्बार।
चालीसा गाते यहाँ, पाने पद अनगार।।
पूज्य हुए हैं लोक में, विमलनाथ भगवान।
भक्ति भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र जिसमें शुभकारी।
अंगदेश जिसमें शुभ गाया, नगर कम्पिला श्रेष्ठ बताया।।
राजा कृतवर्मा शुभ गाये, जैनधर्म धारी कहलाए।
जयश्यामा जिनकी महारानी, जिनकी नहीं है कोई शानी।।
वंश इक्ष्वाकु जिनका गाया, जो इस जग में श्रेष्ठ बताया।
ज्येष्ठ वदी दशमी शुभकारी, प्रातःकाल की बेला प्यारी।।
शुभ नक्षत्र आपने पाया, उत्तरा भाद्रपद नाम बताया।
सहस्रार से चयकर आये, माँ के गर्भ को धन्य बनाए।।
माघ कृष्ण की चौथ बताई, मीन राशि अतिशय शुभ गाई।
बृहस्पति राशि का स्वामी, पाये हैं जिन अन्तर्यामी।।
तप्त स्वर्ण सम तन शुभ पाए, उससे भी न नेह लगाए।
साठ धनुष तन की ऊँचाई, सूकर लक्षण जानो भाई।।
वर्ष साठ लख आयु पाए, जग के भोग तुम्हें न भाए।
मेघ विनाश देखकर स्वामी, हुए आप मुक्ती पथगामी।।
शुक्ला माघ चतुर्थी जानो, सन्ध्याकाल श्रेष्ठ पहिचानो।
चलकर देव स्वर्ग से आए, साथ पालकी अपने लाए।।
उसमें प्रभु जी को बैठाए, सहस्राभ वन चलकर आये।
जम्बू वृक्ष रहा शुभकारी, जिसके नीचे दीक्षा धारी।।
एक सहस राजा भी आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
दो उपवास आपने कीन्हे, शुभ क्षीरान्न आहार में लीन्हे।।
नृपति कनक प्रभ अनुपम गाया, आहारदाता जो कहलाया।
चन्दनपुर नगरी शुभकारी, रही पारणा नगरी प्यारी।।

उत्तम संयम प्रभु जी पाए, तप से अपने कर्म नशाए।
माघ शुक्ल षष्ठी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।।
इन्द्र वहाँ चलकर के आया, धन कुबेर को साथ में लाया।
चरणों आकर ढोक लगाए, समवशरण रचना करवाए।।
छह योजन विस्तार बताया, जिसमें प्रभुजी को बैठाया।
पद्मासन से बैठे स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।।
केवलज्ञानी अनुपम गाए, साढ़े पाँच सहस्र बतलाए।
ग्यारह सौ थे पूरब धारी, समवशरण में मुनि अविकारी।।
साढ़े अड़तिस सहस निराले, शिक्षक शिक्षा देने वाले।
विपुलमति मनःपर्ययज्ञानी, रहे पाँच सौ ज्ञानी ध्यानी।।
मुनि बानवे सौ अविकारी, रहे विक्रिया ऋद्धीधारी।
अड़तालिस सौ अवधिज्ञानी, आगम वर्णित संख्या मानी।।
वादी छत्तिस सौ बतलाए, मुक्ती पथ के नेता गाए।
पचपन गणधर श्रेष्ठ बताए, गणधर प्रथम मंदरजी गाये।।
अड़सठ सहस मुनि अविकारी, साथ में प्रभु के थे शुभकारी।
एक लाख आर्यिकाएँ जानो, गणिनी प्रमुख पद्मश्री मानो।।
श्रावक शुभ दो लाख बताए, श्रोता प्रमुख स्वयंभू गाए।
यक्ष चतुर्मुख जानो भाई, यक्षी वैरोटी बतलाई।।
अनुबद्ध केवली चालिस गाए, पन्द्रह लाख वर्ष तप पाए।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह पहिले शिवगामी।।
अषाढ़ कृष्ण आठें शुभ जानो, प्रातःकाल समय पहिचानो।
गिरि सम्मेद शिखर से भाई, कूट सुवीर से मुक्ती पाई।।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, वीतराग दर्शाने वाले।
उनके शुभ दर्शन हम पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।

दोहा– चालीसा पढ़ते शुभम्, दिन में चालिस बार।
सुख शांति सौभाग्य पा, पाते भव से पार।।
विमलनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।
यही भावना है 'विशद', होय शीघ्र निर्वाण।।

श्री अनन्तनाथ चालीसा

दोहा- नव देवों के चरण में, वंदन बारम्बार।
अनन्तनाथ जिनराज का, चालीसा शुभकार।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
जिसमें कौशल देश बताया, नगर अयोध्या पावन गाया।।
राजा सिंहसेन कहलाए, इक्ष्वाकु वंशी शुभ गाए।
सर्वयशा रानी कहलाई, शुभ लक्षण से युक्त बताई।।
अच्युत स्वर्ग से चयकर आये, पुष्पोत्तर विमान शुभ पाए।
चयकर माँ के गर्भ में आए, माता के सौभाग्य जगाए।।
ज्येष्ठ कृष्ण बारस शुभकारी, जन्म प्रभु पाये मनहारी।
राशि श्रेष्ठ मीन शुभ जानो, बृहस्पति स्वामी पहिचानो।।
तन का वर्ण स्वर्ण शुभ गाया, पग में सेही चिह्न बताया।
तीस लाख वर्षों की भाई, अनन्तनाथ ने आयु पाई।।
धनुष पचास रही ऊँचाई, श्री जिनेन्द्र के तन की भाई।
पन्द्रह लाख वर्ष का स्वामी, राजभोग पाए शिवगामी।।
उल्का पतन देखकर भाई, हो विरक्त शुभ दीक्षा पाई।
शुभ नक्षत्र रेवती गाया, सायंकाल का समय बताया।।
नगर अयोध्या अनुपम जानो, सागरदत्त पालकी मानो।
आप सहेतुक वन में आए, पीपल वृक्ष श्रेष्ठ शुभ पाए।।
दीक्षा वृक्ष की शुभ ऊँचाई, छह सौ धनुष शास्त्र में गाई।
एक हजार नृपति शुभ आए, दीक्षा प्रभु के साथ में पाए।।
केशलुंच कर दीक्षा धारे, अपने सारे वस्त्र उतारे।
दो उपवास आपने कीन्हे, फिर क्षीरान्न आप शुभ लीन्हे।।
नगर अयोध्या में शुभ जानो, नृपति विशाखराज पहिचानो।

आहारदाता जो कहलाया, उसने अनुपम पुण्य कमाया।।
वन उपवन में ध्यान लगाए, दो वर्षों का समय बिताए।
कृष्णा चैत अमावस जानो, केवलज्ञान तिथि पहचानो।।
इन्द्र कुबेर आदि शुभकारी, देव चरण में आये भारी।
समवशरण रचना करवाई, खुश हो जय-जयकार लगाई।।
साढ़े पाँच योजन का भाई, मणि रत्नों का है सुखदायी।
पाँच हजार केवली गाए, पूरबधारी सहस बताए।।
साढ़े पैंतिस सहस निराले, शिक्षक शिक्षा देने वाले।
विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी, पाँच सहस्र कही जिनवाणी।।
तैंतालिस सौ अवधिज्ञानी, बत्तिस सौ वादी विज्ञानी।
आठ सहस ऋद्धि के धारी, छयासठ सहस मुनि अविकारी।।
गणधर श्रेष्ठ पचास बताए, गणधर श्री जय प्रथम कहाए।
किन्नर यक्ष रहा शुभकारी, यक्षी वैरोटी मनहारी।।
एक माह पहले जिन स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।
गिरि सम्मेद शिखर शुभकारी, कूट स्वयंप्रभ है मनहारी।।
कृष्णा चैत अमावस जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो।
रेवती शुभ नक्षत्र बताया, आसन कायोत्सर्ग कहाया।।
एक हजार शिष्य शुभ गाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
शुभ अनुबद्ध केवली गाये, छत्तिस आगम में बतलाये।।
वीतराग जिनकी प्रतिमाएँ, भव्यों को शिवमार्ग दिखाएँ।
जिनबिम्बों के हम गुण गाते, नत हो सादर शीश झुकाते।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े सुने जो कोय।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य श्री, सुख समृद्धि होय।।
गुण अनन्त के कोष हैं, अनन्त नाथ भगवान।
उनकी अर्चा से मिले, 'विशद' शीघ्र निर्वाण।।

New
20-6-2012

श्री धर्मनाथ चालीसा

दोहा- रहे पूज्य नव देवता, तीनों लोक महान्।
धर्मनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।।
चालीसा गाते यहाँ, भाव सहित शुभकार।
वन्दन करते पद युगल, जिन पद बारम्बार।।

(चौपाई)

लोकालोक रहा शुभकारी, मध्य लोक जिसमें मनहारी।
मध्य में जम्बूद्वीप बताया, भरत क्षेत्र जिसमें शुभ गाया।।
जिसमें अंग देश है भाई, रत्नपुरी नगरी सुखदायी।
भानुराय जिसमें कहलाए, कुरू वंश के स्वामी गाए।।
कश्यप गोत्री जो कहलाए, महारानी सुव्रता जो पाए।
वैसाख शुक्ल त्रयोदशि जानो, प्रातःकाल समय पहिचानो।।
शुभ नक्षत्र रेवती पाए, चयकर सर्वार्थ सिद्धि से आए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाए, प्रभु जी माँ के गर्भ में आए।।
माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्य नक्षत्र रहा मनहारी।
अतिशय जन्म प्रभुजी पाए, जन्म कल्याणक जो कहलाए।।
कर्क राशि का योग बताया, राशि स्वामी चन्द्र कहाया।
स्वर्ण वर्ण तन का है भाई, धनुष पैंतालिस है ऊँचाई।।
वर्ष लाख दश आयु पाए, वज्रदण्ड पहिचान कराए।
उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा पाए अन्तर्यामी।।
माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्य नक्षत्र रहा मनहारी।
दीक्षा नगर रत्नपुर गाया, सायंकाल का समय बताया।।
देव पालकी लेकर आये, नागदत्ता शुभ नाम बताए।
शालिवन उद्यान बताया, दीर्घपर्ण तरुवर कहलाया।।
एक सौ अस्सी धनुष ऊँचाई, दीक्षा वृक्ष की जानो भाई।
एक सहस राजा भी आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।
दो उपवास आपने कीन्हें, शुभ क्षीरान्न बाद में लीन्हे।

धर्म मित्र दाता कहलाया, पाटलिपुत्र नगर शुभ गाया।।
एक वर्ष तप काल बताया, बाद में केवलज्ञान जगाया।
पौष शुक्ल पूनम शुभ जानो, संध्याकाल समय शुभ मानो।।
इन्द्र राज-चरणों में आया, धन कुबेर को साथ में लाया।
साथ में देव अन्य कई आए, समवशरण रचना बनवाए।।
पाँच योजन विस्तार बताया, पद्मासन प्रभु ने शुभ पाया।
साथ में केवलज्ञान जगाए, साढ़े चार सहस बतलाए।।
सात हजार विक्रियाधारी, नौ सौ पूरब धर अविकारी।
चालिस सहस सात सौ भाई, शिक्षक की संख्या बतलाई।।
चार हजार पाँच सौ जानो, मनःपर्यय ज्ञानी पहिचानो।
अवधि ज्ञानधारी मुनि आए, तीन सहस छह सौ बतलाए।।
दो हजार आठ सौ भाई, वादी मुनि संख्या बतलाई।
प्रभु के साथ मुनीश्वर आए, चौंसठ सहस पूर्ण कहलाए।।
गणधर तैंतालिस कहलाए, अरिष्ठसेन प्रथम गणि कहाए।
यक्ष किंपुरुष जानो भाई, अनन्तमति यक्षी कहलाई।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सुदत्तवर अनुपम गाए।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह पहले शिवगामी।।
कायोत्सर्गासन प्रभु पाए, स्वामी प्रातः मोक्ष सिधाए।
चौथ ज्येष्ठ शुक्ला की जानो, मोक्ष कल्याणक की तिथि मानो।।
पन्द्रहवें तीर्थंकर गाए, जग को मुक्ति मार्ग दिखाए।
जिन प्रतिमाएँ हैं शुभकारी, वीतराग मुद्रा अविकारी।।
दर्शन कर सद्दर्शन पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।
प्रभु की महिमा है शुभकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें सुने जो लोग।
सुख शांति सौभाग्य का, मिले उन्हें संयोग।।
धर्मनाथ के चरण को, ध्याये जो गुणवान।
अल्प समय में ही, 'विशद' पावें वह निर्वाण।।

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा- अरहन्तों को नमन कर, सिद्धों को उर धार।
आचार्योपाध्याय साधु को, वन्दन बारम्बार।।
चैत्य-चैत्यालय धर्म जिन, आगम यह नवदेव।
शांतिनाथ के चरण में, वन्दन करूँ सदैव।।

(तर्ज - नित देव मेरी...)

शांति जिन की वन्दना जो, जीव करते हैं सभी।
सुख-शांति में रहते मगन, वह खेद न पाते कभी।।
प्रभु हैं दिगम्बर वीतरागी, शुद्ध हैं निर्दोष हैं।
प्रभु ज्ञान दर्शन वीर्य सुखमय, सद्गुणों के कोष हैं।।1।।
चयकर प्रभु सर्वार्थ सिद्धि, से यहाँ पर आए हैं।
विश्वसेन नृप के पुत्र माता, ऐरादेवी पाए हैं।।
जन्में हस्तिनागपुर में, वंश इक्ष्वाकु कहा।
भरणी शुभ नक्षत्र पाए, काल प्रातः का रहा।।2।।
माह भादों कृष्ण सातें, गर्भ में आए प्रभो।
स्वप्न सोलह मात देखे, नृत्य सुर कीन्हें विभो।।
ज्येष्ठ वदि चौदस प्रभु का, जन्म कल्याणक कहा।
इन्द्र ने लक्षण चरण में, हिरण शुभ देखा अहा।।3।।
चक्रवर्ती रहे पञ्चम, मदन बारहवें कहे।
प्रभु सोलहवे कहे जिन, स्वर्ण रंग के जो रहे।।
वर्ष इक लख श्रेष्ठ आयु, प्रभु की उत्तम कही।
धनुष चालिस श्रेष्ठ प्रभु के, तन की ऊँचाई रही।।4।।
जाति स्मरण से प्रभु, वैराग्य धारण कर लिए।
वैशाख शुक्ला तिथि एकम्, भक्त तृतिय जो किए।।
आम्रवन में नन्द तरु तल, में प्रभु दीक्षा धरे।
दीक्षा धरके सहस्र राजा, केश लुन्चन खुद करे।।5।।

गरुड प्रभु का यक्ष मानो, मानसी यक्षी कही।
शुभ हरिषेणा मुख्य प्रभु की, आर्यिका अनुपम रही।।
पौष शुक्ला तिथि दशमी, ज्ञानकेवल पाए हैं।
समवशरण तब देव आके, श्रेष्ठ शुभ बनवाए हैं।।6।।
व्यास साढ़े चार योजन, सभा का शुभ जानिए।
नगर हस्तिनागपुर में, ज्ञान पाए मानिए।।
एक महिने पूर्व से जो, योग का शुभ रोधकर।
ध्यान चेतन का लगाए, आत्मा का बोधकर।।7।।
गिरि सम्मेदाचल से मुक्ति, शांति जिनवर पाए हैं।
ज्येष्ठ कृष्णा तिथि चौदश, शिव गमन बतलाए हैं।।
भूप नौ सौ साथ में, मुक्तिश्री को पाए हैं।
काल प्रातः मोक्ष प्रभु श्री, शांति जिन का गाए हैं।।8।।
गणी छत्तिस शांति जिन के, वीतरागी जानिए।
प्रथम चक्रायुध गणी अति, श्रेष्ठतम शुभ मानिए।।
शांति जिन की अर्चना कर, शांति पाते हैं सभी।
ध्यान जो करते प्रभु का, वे दुःखी न हों कभी।।9।।
शांति जिन के बिम्ब जग में, कष्ट इस जग के हरें।
भक्त के गृह शांति जिनवर, शांति की वर्षा करें।।
शांति जिन के तीर्थ जग में, कई जगह पर छाए हैं।
शांति दाता शांति जिनवर, लोक में कहलाए हैं।।10।।
बानपुर आहार थूवौन, वीना खजुराहो कहा।
हस्तिनागपुर देवगढ़ अरु, रामटेक अतिशय रहा।।
भाव से जिन अर्चना कर, पुण्य का अर्जन करें।
शांति जिन का ध्यान करके, भव जलधि से हम तरें।।11।।

दोहा- चालीसा चालिस दिन, पढ़े जो चालीस बार।
'विशद' शांति सौभाग्य पा, पावे भव से पार।।

New
20-6-2012

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार।।
शांतिनाथ भगवान के, करते चरण प्रणाम।
चालीसा गाते यहाँ, पाने निज का धाम।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया।
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी।
रानी ऐरादेवी पाए, जानो सुत शांतिजिन गाए।।
माँ के गर्भ में प्रभु जब आये, रत्नवृष्टि तब देव कराए।
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी।
जन्म प्रभुजी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया।।
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्र नेत्र से दर्शन पाया।।
पग में हिरण चिह्न शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम बताया।
पञ्चम चक्रवर्ति कहलाए, कामदेव बारहवें गाए।।
तीर्थंकर सोलहवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए।।
सहस्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।
नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुःख मिटाया।।
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।।

एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, तप कल्याणक प्रभु का मानो।।
आत्म ध्यान कीन्हें तव स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जगाई।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए।।
छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।
यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई।।
योग निरोध किए जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।
नो सौ मुनि श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया।।
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, अतिशय श्रेष्ठ दिखाने वाले।।
अहार क्षेत्र वानपुर जानो, बीना बारहा भी पहिचानो।
रामटेक सीरोन कहाया, खजुराहो पचराई गाया।।
गाँव-गाँव में बिम्ब बताए, गिनती कहो कौन कर पाए।
जो भी अर्चा करते भाई, अर्चा होती है फलदायी।
कई लोगों ने शुभ फल पाए, रोग-शोक दारिद्र नशाए।।
शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में भाग्य विधाता।
भाव सहित प्रभु को जो ध्याये, इच्छित फल वह मानव पाए।
पूजा अर्चा कर जो ध्यावे, सुख-शांति सौभाग्य जगावे।
निज आतम का वैभव पावे, अनुक्रम से फिर शिवपुर जावे।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
दीन दरिद्री होय जो, या हो पुत्र विहीन।
सुत पावे धन सम्पदा, होवे ज्ञान प्रवीण।।

New
20-6-2012

श्री कुन्थुनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
चालीसा जिन कुन्थु का, गाते हम शुभकार।।

(चौपाई)

मध्य लोक पृथ्वी पर गाया, जिसमें जम्बूद्वीप बताया।
भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, आर्य खण्ड की महिमा न्यारी।।
कुरुजांगल शुभ देश कहाया, नगर हस्तिनापुर शुभ गाया।
सूरसेन राजा कहलाए, कुरूवंश के स्वामी गाए।।
रानी श्रीमती शुभ गाई, धर्म परायण जानो भाई।
श्रावण कृष्णा दशमी जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, गर्भ प्रभु ने जिसमें पाया।
चयकर सर्वार्थ सिद्धि से आये, आप वहाँ अहमिन्द्र कहाए।।
सुदि एकम वैशाख कहाए, जन्म प्रभु कुन्थु जिन पाए।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, आग्नेय शुभ योग कहाया।।
वृषभ राशि पाए शुभकारी, स्वामी शुक्र रहा मनहारी।
इन्द्रराज तब स्वर्ग से आए, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।
ऐरावत स्वर्गों से लाए, प्रभु जी को उस पर बैठाए।
पाण्डुक शिला पे लेकर आए, क्षीर नीर से न्हवन कराए।।
बकरा चिह्न पैर में पाया, स्वर्ण रंग तन का शुभ गाया।
सहस पञ्चानवे आयु पाई, पैंतिस धनुष रही ऊँचाई।।
जाति स्मरण करके स्वामी, बने मुक्ति पथ के अनुगामी।
सुदि एकम वैसाख बताई, संध्याकाल में दीक्षा पाई।।
विजया देव पालकी लाए, उस पर प्रभुजी को बैठाए।
आप सहेतुक वन में आए, तिलक वृक्ष तल दीक्षा पाए।।
चार सौ बीस धनुष ऊँचाई, दीक्षा तरू की जानो भाई।
प्रभु ने तेला के व्रत कीन्हे, सहस भूप सह दीक्षा लीन्हे।।

नगर हस्तिनापुर के स्वामी, अपराजित राजा थे नामी।
पड़गाहन प्रभु का शुभ कीन्हे, क्षीरान्न शुभ आहार में दीन्हे।।
तप में सोलह वर्ष बिताए, फिर प्रभु केवलज्ञान जगाए।
चैत्र शुक्ल तृतिया शुभ जानो, अपराह्न काल समय शुभ मानो।।
इन्द्र राज स्वर्गों से आए, धनपति इन्द्र साथ में लाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, चार योजन विस्तार कहाए।।
समवशरण में आसन भाई, पद्मासन प्रभु की बतलाई।
बत्तिस सहस केवली गाए, सात सौ पूरवधारी आए।।
पैंतिस सौ मनःपर्यय ज्ञानी, ढाई सहस थे अवधि ज्ञानी।
इक्यावन सौ विक्रिया धारी, दो हजार वादी अविकारी।।
साठ सहस कुल साधु जानो, समवशरण की संख्या मानो।
प्रभु के पैंतिस गणधर गाए, प्रथम स्वयंभू जी कहलाए।।
यक्ष श्रेष्ठ गन्धर्व था भाई, यक्षी जयादेवी बतलाई।
श्री सम्मेद शिखर पर आए, कूट ज्ञानधर प्रभु जी पाए।।
एक माह पहले से स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।
सुदि एकम वैशाख बताई, सायंकाल में मुक्ति पाई।।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, कायोत्सर्गासन शुभ गाया।
सहस मुनि सह मुक्ति पाए, चौबिस अनुबद्ध केवली गाए।।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर पदवी शुभ पाए।
आप हुए त्रयपद के धारी, महिमा तुमरी जग से न्यारी।।
सत्तरहवें तीर्थंकर गाये, जग को मुक्ति मार्ग दिखाए।
महिमा 'विशद' आपकी गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

दोहा- कुन्थुनाथ भगवान का, चालीसा शुभकार।
पढ़े सुने जो भाव से, पावे भवदधि पार।।
चालीसा चालिस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति सौभाग्य पा, बने श्री का नाथ।।

New
20-6-2012

श्री अरहनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद नमन, करते योग सम्हार।
अरहनाथ के चरण में, वन्दन बारम्बार।।

चौपाई

अरहनाथ भगवान हमारे, भवि जीवों के तारण हारे।
तीन लोक में मंगलकारी, जो हैं जन-जन के उपकारी।।
उनकी महिमा हम भी गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
स्वर्ग लोक से चयकर आये, नगर हस्तिनापुर शुभ गाए।।
पिता सुदर्शन जी कहलाए, मातश्री मित्रावति पाए।
फाल्गुन सुदी तीज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।।
देव स्वर्ग से चलकर आए, गर्भ कल्याणक श्रेष्ठ मनाए।
रत्नवृष्टि कीन्हें शुभकारी, नगर सजाए अतिशयकारी।।
अष्टकुमारिकाएँ भी आई, गर्भ का शोधन श्रेष्ठ कराईं।
मंगसिर सुदी चौदस को स्वामी, जन्म लिए मुक्तिपथ गामी।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, मेरु गिरि पर न्हवन कराया।
मछली चिह्न प्रभु पद पाया, अरहनाथ तब नाम सुनाया।।
तीन धनुष तन की ऊँचाई, प्रभु ने अपनी देह की पाई।
अस्सी सहस वर्ष की स्वामी, आयु पाए अन्तर्यामी।।
बयालिस सहस वर्ष तक भाई, राज्य किए प्रभुजी सुखदायी।
मेघ विनाश देखकर स्वामी, हुई विरक्ति जग से नामी।।
रेवती नक्षत्र श्रेष्ठ सुखदायी, गये सहेतुक वन में भाई।
कुरुवंश के लाल कहाए, स्वर्ण वर्ण प्रभु तन का पाए।।
मंगसिर शुक्ल दशें शुभ जानो, शुभ नक्षत्र में प्रभुजी मानो।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, हुए जहाँ से मुनि अविकारी।।
तृतिय भक्त प्रभु जी कीन्हें, आत्म ध्यान में चित्त जो दीन्हें।

अपराह्नकाल का समय बताया, प्रभु ने संयम को जब पाया।।
एक हजार मुनि शुभकारी, सह दीक्षित थे मंगलकारी।
सोलह दिन का समय बिताया, प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया।।
कार्तिक शुक्ला बारस जानो, अपराह्नकाल समय पहिचानो।
श्रेष्ठ सहेतुक वन शुभ गाया, रेवती नक्षत्र परम पद पाया।।
साढ़े तीन योजन का भाई, समवशरण था मंगलदायी।
आम्र वृक्ष सुरतरु शुभ गाया, कुबेर यक्ष प्रभु का बतलाया।।
यक्षी जया श्रेष्ठ शुभ गाई, गणधर तीस बताए भाई।
कुंभ प्रथम गणधर शुभ जानो, पचास हजार ऋषि पहिचानो।।
छह सो दश थे पूरबधारी, सोलह सो वादी शुभकारी।
अट्ठाइस सौ अवधिज्ञानी, अट्ठाइस सौ केवल ज्ञानी।।
पैंतिस सहस आठ सौ भाई, पैंतिस संख्या शिक्षक गाई।
तैंतालिस सौ विक्रियाधारी, छह हजार आर्यिका शुभकारी।।
साढ़े सत्रह सौ शुभ गाए, विपुल मति ज्ञानी कहलाए।
तीन लाख श्राविकाएँ जानो, एक लाख श्रावक पहिचानो।।
प्रभु सम्मेद शिखर जी आए, एक माह का ध्यान लगाए।
कृष्णा चैत अमावश भाई, रोहिणी नक्षत्र में मुक्ति पाई।।
आप हुए त्रय पद के धारी, कामदेव जिन चक्र के धारी।
जिला ललितपुर में शुभकारी, क्षेत्र नवागढ़ मंगलकारी।।
भू से प्रगट हुए जिन स्वामी, मंगलकारी शिवपद गामी।
उनके दर्शन जो भी पाए, 'विशद' स्वयं सौभाग्य जगाए।।

दोहा- 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
पावे सुख सौभाग्य वह, बने श्री का ईश।।

जाप-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः।

New
20-6-2012

श्री मल्लिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, चौबिस जिन के साथ।
मल्लिनाथ जिनराज पद, विनत झुकाते माथ।।

चौपाई

मल्लिनाथ जिनराज कहाए, संयम पाके शिवसुख पाए।
प्रभु है वीतरागता धारी, सारे जग में मंगलकारी।।
अपराजित से चय कर आये, चैत्र शुक्ल एकम तिथि गाए।
मिथला के नृप कुम्भ कहाए, प्रजावति के गर्भ में आए।।
इक्ष्वाकु नन्दन कहलाए, कलश चिह्न पहिचान बताए।
अश्विनी नक्षत्र श्रेष्ठ बतलाए, प्रातःकाल का समय कहाए।।
मगसिर शुक्ला ग्यारस गाए, जन्म प्रभु मल्लि जिन पाए।
पच्चिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का है भाई।।
तड़ित देख वैराग्य समाया, प्रभु ने सद् संयम को पाया।
इन्द्र पालकी लेकर आए, उसमें प्रभु जी को बैठाए।।
इन्द्र पालकी जहाँ उठाते, नरपति तव आगे आ जाते।
मानव लेकर आगे बढ़ते, देव गगन में लेकर उड़ते।।
मगशिर शुक्ला ग्यारस पाए, प्रभुजी केवलज्ञान जगाए।
श्रेष्ठ मनोहर वन शुभ पाया, तरु अशोक वन अनुपम गाया।।
समवशरण शुभ देव रचाए, त्रय योजन विस्तार कहाए।
वैशाख कृष्ण दशमी को भाई, प्रभु ने जिनवर दीक्षा पाई।।
पौर्वाह्न का समय बताया, षष्ठम भक्त प्रभु ने पाया।
शालि वन में पहुँचे स्वामी, तरु अशोक तल में शिवगामी।।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।
वरुण यक्ष प्रभु का शुभ गाया, यक्षी पद विजया ने पाया।।
पचपन सहस्र वर्ष की भाई, प्रभु की शुभ आयु बतलाई।

गणधर शुभ अट्ठाइस बताए, गणी विशाख पहले गाए।।
साढ़े पाँच सौ पूरब धारी, उन्तिस सहस्र शिक्षक अविकारी।
बाईस सौ अवधिज्ञानी गाए, चौदह सौ वादी बतलाए।।
उन्तिस सौ विक्रिया के धारी, बाईस सौ केवली मनहारी।
सत्रह सौ पचास मुनि गाए, मनःपर्ययज्ञानी बतलाए।।
पचपन सहस्र आर्यिका भाई, मधुसेना गणिनी बतलाई।
एक लाख श्रावक कहलाए, चालिस सहस्र मुनि सब गाए।।
योग रोधकर ध्यान लगाए, एक माह का समय बिताए।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी जानो, गिरि सम्मेद शिखर पर मानो।।
भरणी शुभ नक्षत्र बताया, प्रभु ने मुक्ति पद शुभ पाया।
सायंकाल रहा शुभकारी, गौधूलि बेला मनहारी।।
तीर्थंकर पद पाके स्वामी, बने मोक्षपद के अनुगामी।
महा मनोहर मुद्राधारी, जिनबिम्बों की शोभा न्यारी।।
भावसहित जो पूजें ध्यावें, वे अपने सौभाग्य बढ़ावें।
यश कीर्ति बल वैभव पावें, ओज तेज कांति उपजावें।।
सर्वमान्य जग पदवी पावें, रण में विजयश्री ले आवें।
हों अनुकूल स्वजन परिवारी, सेवक होंवे आज्ञाकारी।।
अर्चा के शुभ भाव बनाएँ, चरण-शरण में हम भी आएँ।
शांतिमय हो जगती सारी, यही भावना रही हमारी।।
जब तक हम शिवपद न पाएँ, चरण आपके हृदय सजाएँ।
'विशद' भाव से तव गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
पढ़े सुने जो भाव से, तीनों योग सम्हार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, बढ़े पुण्य का कोष।
अन्तिम शिव पदवी मिले, जीवन हो निर्दोष।।

New
20-6-2012

श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा

अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद', चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।
प्रभु हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीष झुकाते।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हि त्राता।।
प्रभु तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।
प्रभु की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टि सुखद जमीं नाशा पर।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृहि नगरी मन भाए।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन शुदि पाए।
वहाँ पे सुर बालाएँ आईं, माँ की सेवा करें सुभाई।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तव मन हर्षाया।
पग में कछुआ चिह्न दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।

बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।
उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभु के मन वैराग्य जगाए।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभु जी को पधराए।
भूपति कई प्रभु को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभु ने सार्थक नाम बनाया।।
पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।
वेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।
गणधर प्रभु अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आईं।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।
फाल्गुन वदी वारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ति पाये।।
शनि अरिष्ट गृह जिन्हें सताए, मुनिसुव्रत जी शांति दिलाएँ।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पा जाएँ।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, नित चालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।

New
20-6-2012

श्री नमिनाथ चालीसा

दोहा- नव देवों के चरण में, नव कोटि के साथ।
गुण गाते नमिनाथ के, चरण झुकाकर माथ।।
तव चरणों में हे प्रभु, जोड़ रहे द्वय हाथ।
चालीसा गाते यहाँ, विनय भाव करे साथ।।

(चौपाई)

मध्य लोक पृथ्वी का जानो, जिसमें जम्बूद्वीप बखानो।
भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, दक्षिण में सोहे मनहारी।।
वंगदेश जानो शुभ भाई, मिथिला नगरी शुभ कहलाई।
विजयराज राजा शुभ गाए, वंश इक्ष्वाकु अनुपम पाए।।
वप्रिला रानी जिनकी गाई, धर्म परायण जो कहलाई।
अश्विन वदी दूज शुभ जानो, पिछला पहर रात का मानो।।
शुभ नक्षत्र अश्विनी पाए, कश्यप गोत्री आप कहाए।
अपराजित से चयकर आए, माँ के गर्भ को धन्य बनाए।।
दशें कृष्ण आषाढ़ की जानो, शुभ नक्षत्र स्वाति पहिचानो।
जन्म मेष राशि में पाया, राशि स्वामी मंगल गाया।।
घंटा नाद हुआ तब भारी, देवलोक में अतिशयकारी।
स्वयं इन्द्र ऐरावत लाया, सुर परिवार साथ में आया।।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, जन्म कल्याणक श्रेष्ठ मनाया।
नीलकमल शुभ लक्षण जानो, स्वर्ण वर्ण तन का पहिचानो।।
दस हजार वर्षों की स्वामी, आयु पाये हैं शिवगामी।
समचतुरस्र तन पाए भाई, पन्द्रह धनुष रही ऊँचाई।।
सहस्राष्ट लक्षण शुभकारी, रक्त श्वेत जानो मनहारी।
जाति स्मरण प्रभु को आया, मन में तव वैराग्य समाया।।
दशें कृष्ण आषाढ़ की जानो, संध्याकाल समय पहिचानो।

मिथिला नगरी श्रेष्ठ बताई, उत्तर कुरु पालकी गाई।।
शुभ उद्यान जैत्र वन गाया, चम्पक वृक्ष श्रेष्ठ बतलाया।
एक सौ अस्सी धनुष ऊँचाई, दीक्षा वृक्ष की जानो भाई।।
एक सहस राजा संग आये, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
दो उपवास प्रभु जी कीन्हें, शुभ क्षीरान्न आहार जो लीन्हें ।।
नगर वीरपुर अनुपम गाया, दाता राजा दत्त कहाया।
मगसिर शुक्ल एकादशि जानो, संध्याकाल समय पहिचानो।।
प्रभु जी मिथिला नगरी आए, अतिशय केवलज्ञान जगाए।
शुभ उद्यान जैत्र वन गाया, मौलश्री शुभ तरु कहलाया।।
समवशरण आ देव बनाए, दो योजन विस्तार कहाए।
शुभ पद्मासन प्रभु का जानो, सोलह सौ केवली पहिचानो।।
संघ में साधु संख्या भाई, बीस हजार श्रेष्ठ बतलाई।
गणधर संख्या सत्रह जानो, सुप्रभ प्रथम वाणी पहिचानो।।
एक लाख श्रावक भी आए, विजय प्रमुख श्रोता कहलाए।
यक्ष कहा विद्युतप्रभ भाई, चामुण्डी यक्षी कहलाई।।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, कूट मित्रधर अनुपम पाए।
एक माह पूरब से स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।।
वैशाख कृष्ण चतुर्दशी जानो, अंतिम पहर रात का मानो।
खड्गासन से मोक्ष सिधाए, सहस मुनि सह मुक्ति पाए।।
जिनवर का हम ध्यान लगाएँ, हृदय कमल पर उन्हें बिठाएँ।
हम भी मुक्ति पद को पाएँ, 'विशद' भावना उर से भाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े-सुने उर धार।
सुख-शांति सौभाग्य पा, पावें भव से पार।।
नमिनाथ भगवान का, करने से गुणगान।
आशा मन की पूर्ण हो, शीघ्र होय कल्याण।।

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, करते विशद प्रणाम।
नेमिनाथ का भाव से, ले सुखकारी नाम।।

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान ! उजागर।
प्रभु हैं जन-जन के हितकारी, ज्ञानी ध्यानी जग उपकारी।।
तीन काल तिय जग के ज्ञाता, जन-जन का प्रभु तुमसे नाता।
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, नर जीवन का सार बताया।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुःख हरते।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में।।
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।
श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शौरीपुर में जन्में भाई ।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर-नर पशु मन में हर्षाए।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, सची ने प्रभु को गोद बिठाया।।
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये।
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।
शंख चिन्ह दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालीस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया।।
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई।।
कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।
कोई शम्भू नाम पुकारें, कोइ अनिरुद्ध के देते नारे ।।
नेमीनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।

ऊँगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई।।
सब अपनी शक्ति अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।
हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबड़ाए।।
राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई।।
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोती धो ले।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया।।
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोती धुलवाओ।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी।।
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमसे छोटी बात सुनाई।
रोम-रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया।।
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैया नाग की प्रभु बनाई।
पैर की ऊँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया।
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।।
उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया।
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुंचे फिर भाई।
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह की की तैयारी।
कृष्ण ने तब की मायाचारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।।
नेमि दूल्हा बनकर आए, बाड़े में कई पशु रंभाए।
करुणा से नेमि भर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।।
इन पशुओं का मांस बनेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलबाया।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे।
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।।

New
20-6-2012

प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए।।
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया ! वरदत्त ने यह पुण्य कमाया।।
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
सवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।
आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई।।
सौख्य अनन्त प्रभु ने पाया, नर जीवन का सार बताया।
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ।।

सोरठा– चालीसा चालीस दिन में, जो पढ़ता 'विशद'।
चरण झुकाए शीश, विनय भाव के साथ जो।।

सोरठा– शांति मिले विशेष, रोग शोक चिंता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

* * *

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच का, जपूँ निरन्तर नाम।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करूँ प्रणाम।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
हरी-भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।
नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया।।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गो, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिक्षेत्र में ध्यान लगाए।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।
धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।

New
20-6-2012

पद्मावती ने फण फैलाय, उस पर प्रभुजी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई।।
चैत कृष्ण की चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।
गणधर दश प्रभु के बतलाएं, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।
योग निरोध प्रभुजी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख जाते।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।।
पार्श्व प्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बनें कई हैं मनहारी।
बड़ा गाँव चँवलेश्वर जानो, विराटनगर नैनागिर मानो।।
नागफणी येलोरा गाया, मक्सी अहिक्षेत्र बतलाया।
सिरपुर तीर्थ बिजौलिया भाई, बीजापुर जानो सुखदाई।।
तीर्थ अडिण्दा भी कहलाए, भरत सिन्धु जह स्वर्ग सिधाए।
'विशद' तीर्थ कई है शुभकारी, जिनके पद में ढ़ोक हमारी।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान प्राप्त कर, पावें शिवपद भोग।।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- अर्हत् सिद्धाचार्य शुभ, उपाध्याय जिन संत।
पार्श्व प्रभु के चरण में, नमन अनंतानंत।।

(तर्ज- नित देव मेरी आत्मा...)

जिनराज पारसनाथ स्वामी, लोक में पावन रहे।
संसार में जो भव्य जीवों, के तरण-तारण कहे।।
कर ध्यान आतम का प्रभु जी, नाश कर अज्ञान का।
अनुपम अलौकिक आपने, दीपक जलाया ज्ञान का।।1।।
अश्वसेन के कुँवर है जो, मात वामा जानिए।
नगर काशी के अधिपति, आप को पहिचानिए।।
शुभ दोज वदि वैशाख तिथि को, गर्भ में आये प्रभो !।
छह माह पहले से नगर में, हर्ष छाये थे विभो !।।2।।
तब रत्न वृष्टि दिव्य करके, देव हर्षाए अहा।
शुभ पोष कृष्ण एकादशी को, जन्म का उत्सव रहा।।
तब इन्द्र ऐरावत पे आके, प्रभो को भी ले गया।
शुभ न्हवन मेरु पर कराया, हुआ तव उत्सव नया।।3।।
शुभ नाग लक्षण दाएँ पद में, इन्द्र ने देखा तभी।
तब नाम पारस बोलकर, जयकार शुभ कीन्हे सभी।।
युवराज पारस सैर करने को, सघन वन में गये।
जाके वहाँ देखे प्रभु में, विशद कई अचरज नये।।4।।
पञ्चाग्नि तप में जीव जलते, देखकर प्रभु ने कहा।
रे तापसी ! जीवों को अग्नि, में जलता जा रहा।।
लेकर कुल्हाड़ी तापसी ने, लक्कड़े फाड़े सभी।
अध जले तब नाग निकले, लक्कड़ों से वह सभी।।5।।
नवकार नागों को सुनाया, प्रभु ने यह जानिए।
धरणेन्द्र व पद्मावति हुए, आप यह सच मानिए।।
संसार की यह दशा लखकर, प्रभु संयम धर लिए।

तब पौष एकादशी कृष्णा, सब परिग्रह तज दिए।।6।।
धनदत्त के गृह क्षीर का, आहार प्रभु पारस लिये।
देवों ने आकर पञ्च आश्चर्य, उस समय आकर किये।।
जब सघन वन में ध्यान करते, थे प्रभु यह मानिए।
तब धूमकेतु देव ने, उपसर्ग कीन्हा मानिए।।7।।
की धूल अग्नि पत्थरों की, वृष्टि आके देव ने।।
तब ध्यान आतम का किया था, पार्श्व प्रभु जिनदेव ने।।
अहिक्षेत्र में यह हुई घटना, आप यह सुन लीजिए।
जिन पार्श्व प्रभु का वहाँ जाकर, आप दर्शन कीजिए।।8।।
उपसर्ग वह धरणेन्द्र, पद्मावति ने टाला तभी।
जयकार करने लगे सुर-नर, प्रभु की आके सभी।।
शुभ चैत कृष्णा चौथ प्रभु जी, ज्ञान केवल पा लिए।
तव इन्द्र आये सौ वहाँ पर, ढ़ोक चरणों में दिए।।9।।
कर समवशरण रचना निराली, महत् उत्सव भी किया।
ॐकार ध्वनि में पार्श्व ने, संदेश मुक्ति का दिया।।
सम्मेदगिरि पहुँचे वहाँ से, मोक्ष पाए जिन प्रभो !।
श्रावण सुदी साते को जिनवर, पा गये शिवपद विभो !।।10।।
है प्रार्थना इतनी प्रभु, अब शरण हमको दीजिए।
हे नाथ ! अपने भक्त को भी, आप सा कर लीजिए।।
विश्वास है इतना प्रभु न, भक्त को ठुकराओगे।
अतिशीघ्र मुक्तिपथ दिखाकर, सिद्धि तुम दिलवाओगे।।11।।
जिनबिम्ब जग में पार्श्व प्रभु के, छाए हैं कई श्रेष्ठतम।
शुभ दर्श करके पार्श्व जिन का, नाश होता मोहतम।।
हम भावना भाते स्वयं, जिनदेव का दर्शन मिले।
मेरे हृदय में पुष्प श्रद्धा, का विशद अनुपम खिले।।12।।

दोहा- चालीसा जिन पार्श्व का, पढ़े जो चालिस बार।
सुख शांति सौभाग्य पा, होय विशद भव पार।।

जाप- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री महावीर चालीसा

दोहा- सिद्ध और अरिहंत का, है सुखकारी नाम।
आचार्योपाध्याय साधु के, करते चरण प्रणाम।।
वर्धमान सन्मति तथा, वीर और अतिवीर।
महावीर की वन्दना, से बदले तकदीर।।

चौपाई

जय-जय वर्धमान जिन स्वामी, शांति मनोहर छवि है नामी।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।
पुरुषोत्तम विमान से आए, माँ को सोलह स्वप्न दिखाए।
राजा सिद्धारथ कहलाए, कुण्डलपुर के भूप कहाए।।
माता त्रिशला के उर आए, नाथ वंश के सूर्य कहलाए।
षष्ठी शुक्ल आषाढ़ कहाए, गर्भ में चयकर के प्रभु आए।।
चैत शुक्ल तेरस दिन आया, जन्म प्रभु ने जिस दिन पाया।
नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, पग में चिह्न शेर का पाया।।
वर्द्धमान तब नाम बताया, जयकारे से गगन गुँजाया।
पलना प्रभु का मात झुलाये, ऋद्धिधारी मुनिवर आए।।
मन में प्रश्न मुनि के आया, जिसका समाधान न पाया।
देख प्रभु को हल कर लीन्हा, सन्मति नाम प्रभु का दीन्हा।।
मित्रों संग क्रीड़ा को आए, सभी वीरता लख हर्षाए।
देव परीक्षा लेने आया, नाग का उसने रूप बनाया।।
भागे मित्र सभी भय खाये, किन्तु प्रभु नहीं घबराए।
पैर की ठोकर सिर में मारी, देव तभी चीखा अति भारी।।
उसने चरणों ढ़ोक लगाया, वीर नाम प्रभु का बतलाया।
युवा अवस्था प्रभु जी पाए, करके सैर नगर में आए।।
हाथी ने उत्पात मचाए, मद उसका प्रभु पूर्ण नशाए।
प्रभु अतिवीर नाम को पाए, सभी प्रशंसा कर हर्षाए।।

बाल ब्रह्मचारी कहलाए, तीस वर्ष में दीक्षा पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, तब मन में वैराग्य समाया।।
माघ कृष्ण दशमी दिन पाया, नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन गाया।
तृतीय भक्त प्रभुजी पाए, दीक्षा धर एकाकी आए।।
स्वर्ण रंग प्रभु का शुभ पाया, सप्त हाथ अवगाहन पाया।
प्रभु नाथ वन में फिर आए, साल तरु तल ध्यान लगाए।।
कामदेव रति वन में आए, जग को जीता ऐसा गाए।
रति ने प्रभु का दर्शन पाया, कामदेव से वचन सुनाया।।
इन्हें जीत पाए क्या स्वामी, नग्न खड़े जो शिवपथ गामी।
प्रभु को ध्यान से खूब डिगाया, किन्तु उन्हें डिगा न पाए।।
कामदेव पद शीश झुकाया, महावीर तव नाम बताया।
दशें शुक्ल वैसाख बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।।
ऋजुकूला का वीर बताया, शाल वृक्ष वन खण्ड कहाया।
समवशरण इक योजन जानो, योग निवृत्ति अनुपम मानो।।
कार्तिक कृष्ण अमावस पाए, महावीर जिन मोक्ष सिधाए।
प्रातःकाल रहा शुभकारी, ग्यारह गणधर थे मनहारी।।
गौतम गणधर प्रथम कहाए, नाम इन्द्रभूति शुभ पाए।
गणधरजी ने ध्यान लगाया, सायं केवलज्ञान जगाया।।
प्रभु शासन नायक कहलाए, श्रेष्ठ सिद्धान्त लोक में छाए।
प्रतिमाएँ हैं अतिशयकारी, वीतरागमय मंगलकारी।।
चाँदनपुर महिमा दिखलाए, टीले में गौ दूध झराए।
ग्वाले के मन अचरज आया, उसने टीले को खुदवाया।।
वीर प्रभु के दर्शन पाए, लोग सभी मन में हर्षाए।
पावागिरि ऊन कहलाए, वहाँ भी कई अतिशय दिखलाए।।
यही भावना रही हमारी, जनता सुखमय होवे सारी।।
चरण कमल में हम सिरनाते, 'विशद' भाव से शीश झुकाते।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
पढ़ने से सुख-शांति हो, मिले मोक्ष का द्वार।।

सहस्रनाम-चालीसा

दोहा- अर्हत्सिद्धाचार्य पद, उपाध्याय जिन संत।
सहस्रनाम जिनराज के, नमूँ अनन्तानन्त।।

(चौपाई छन्द)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका नहीं है कोई अंत।
जिसके मध्य है लोकाकाश, भरा है छह द्रव्यों से खास।।
ऊर्ध्व अधो अरु मध्य प्रधान, तीन लोक कहते भगवान।
मध्य लोक में जम्बू द्वीप, मेरु जम्बू वृक्ष समीप।।
जम्बू द्वीप घातकी खण्ड, पुष्करार्द्ध भी रहा अखण्ड।
भरतैरावत और विदेह, क्षेत्र कर्म भूमि हैं ऐह।
आर्य खण्ड में रहते आर्य, ऐसा कहते जैनाचार्य।।
उत्सर्पण अवसर्पण काल, भरतैरावत रहे त्रिकाल।
दुषमा सुषमा काल विशेष, जिसमें चौबीस बनें जिनेश।
जिन विदेह में रहे त्रिकाल, विद्यमान रहते हर हाल।।
जो भी पुण्य कमाय अतीव, उसका फल वह पावे जीव।
भव्य भावना सोलह भाय, जीव वही यह पदवी पाय।।
तीर्थंकर प्रकृति का बंध, जो कषाय करते हैं मंद।
सम्यक् दृष्टि जीव महान, केवली द्विक के पद में आन।।
मिलता है जब कोई निमित्त, भोगों से उठ जाता चित्त।
भव भोगों से होय विरक्त, शुभ भोगों में हो अनुरक्त।।
सत् संयम पाते शुभकार, लेते महाव्रतों को धार।
कर्म निर्जरा करें महान, निज आतम का करके ध्यान।।
क्षायक श्रेणी को फिर पाय, अपना केवलज्ञान जगाय।
त्रिभुवन चूड़ामणि बन जाय, तीर्थंकर के गुण प्रगटाय।।
क्षायिक नव लब्धि कर प्राप्त, बनते जिन तीर्थंकर आप्त।

चिन्तित चिंतामणि कहलाय, कल्पतरू फल वांछित दाय।।
बनते समवशरण के ईश, इन्द्र झुकाते पद में शीश।
अनन्त चतुष्टय पाते नाथ, पञ्च कल्याणक भी हों साथ।।
तीन गति से आते जीव, पुण्य कमाते वहा अतीव।
दिव्य देशना सुनके लोग, मुक्ति पथ का पाते योग।।
भक्ति को आते शत् इन्द्र, सुर-नर-पशु आते अहमिन्द्र।
परम पिता जगती पति ईश, ऋद्धिधर हे नाथ ! ऋशीष।।
युग दृष्टा प्रभु रहे महान, तीर्थोन्नायक हैं भगवान।
वाणी में जैनागम सार, अमृत रस की बहती धार।।
भक्त आपके आते द्वार, करते हैं निशदिन जयकार।
करने से प्रभु का गुणगान, होती है कर्मों की हान।।
महिमा गाकर के सब देव, हर्षित होते सभी सदैव।
हम भी महिमा गाते नाथ, चरणों झुका रहे हैं माथ।।
विविध नाम से है गुणगान, सहस्रनाम स्त्रोत महान।
सार्थक नाम मयी पाठ, पढ़ने से हों ऊँचे ठाठ।।
सुख-शांति का है आधार, प्राणी पाते जग उद्धार।
सहस्रनाम कहलाए स्त्रोत, विशद धर्म का है जो स्रोत।।
श्रीमान् आदि सहस्र नाम, को करते हम सतत् प्रणाम।
पाठ किए हो ज्ञान प्रकाश, विशद गुणों का होय विकास।।
वन्दन करते हम शत् बार, पाने भवोदधि से पार।
मेरा हो आतम कल्याण, पावें हम भी पद निर्वाण।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, सहस्रनाम का पाठ।
पढ़ते हैं जो भाव से, होते ऊँचे ठाठ।।
ऋद्धि-सिद्धि आनन्द हो, शांति मिले अपार।
'विशद' ज्ञान पाके मिले, मुक्ति वधू का पार।।

New
20-6-2012

महामृत्युञ्जय चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
मृत्युञ्जय हम पूजते, चरणों में धर शीश।।

चौपाई

कर्म घातिया चार नशाए, अतः आप अर्हत् कहलाए।
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, दर्शन ज्ञान-वीर्य सुख पाए।।
दोष अठारह पूर्ण नशाए, छियालिस गुणधारी कहलाए।
चौतिस अतिशय जिनने पाए, प्रातिहार्य आठों प्रगटाए।।
समवशरण शुभ देव रचाए, खुश हो जय-जयकार लगाए।
समवशरण की शोभा न्यारी, उससे भी रहते अविकारी।।
देव शरण में प्रभु के आते, चरण-कमल तल कमल रचाते।
सौ योजन सुभिक्षता होवे, सब प्रकार की आपद खोवे।।
भक्त शरण में जो भी आते, चतुर्दिशा से दर्शन पाते।
गगन गमन प्रभु जी शुभ पाते, प्राणी मैत्री भाव जगाते।।
प्रभो ! ज्ञान के ईश कहाए, अनिमिष दृग प्रभु के बतलाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाते, सुर-नर-पशु सुनकर हर्षाते।।
मृत्युञ्जय जिन प्रभु कहाते, जीत मृत्यु को शिव पद पाते।
ज्ञान अनन्त दर्श सुख पाते, वीर्य अनन्त प्रभु प्रगटाते।।
सिद्ध सनातन आप कहाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।
अनुपम शिवसुख पाने वाले, ज्ञान शरीरी रहे निराले।।
नित्य निरंजन जो अविनाशी, गुण अनन्त की हैं प्रभु राशि।
तुमने उत्तम संयम पाया, जिसका फल यह अनुपम गाया।।
रत्नत्रय पा ध्यान लगाया, तप से निज को स्वयं तपाया।
कई ऋद्धियाँ तुमने पाईं, किन्तु वह तुमको न भाईं।।
उनसे भी अपना मुख मोड़ा, मुक्ति वधू से नाता जोड़ा।

सहस्र आठ लक्षण के धारी, आप बने प्रभु मंगलकारी।।
सहस्र आठ शुभ नाम उपाए, सार्थक सारे नाम बताए।
नाम सभी शुभ मंत्र कहाए, जो भी इन मंत्रों को ध्याए।।
सुख-शांति सौभाग्य जगाए, अपने सारे कर्म नशाए।
विषय भोग में नहीं रमाए, रत्नत्रय पा संयम पाए।।
तीन योग से ध्यान लगाए, निज स्वरूप में वह रम जाए।
संवर करे निर्जरा पावे, अनुक्रम से वह कर्म नशावे।।
बीजाक्षर भी पूजें ध्यावें, जिनपद में नित प्रीति बढ़ावें।
कभी मंत्र जपने लग जाए, कभी प्रभु को हृदय बसाए।।
स्वर व्यंजन आदि भी ध्याए, अतिशय कर्म निर्जरा पाए।
पुण्य प्राप्त करता शुभकारी, शिवपथ का कारण मनहारी।।
इस भव का सब वैभव पाए, उसके मन को वह न भाए।
तजकर जग का वैभव सारा, जिनने भेष दिगम्बर धारा।।
वह बनते त्रिभुवन के स्वामी, हम भी बने प्रभु अनुगामी।
यही भावना रही हमारी, कृपा करो हम पर त्रिपुरारी।।
मृत्युञ्जय हम भी हो जाएँ, इस जग में अब नहीं भ्रमाएँ।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का नाथ सहारा।।
शिव पद जब तक ना पा जाएँ, तब तक तुमको हृदय सजाए।
नित-प्रति हम तुमरे गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
सुत सम्पत्ति सुगुण पा, होवे इन्द्र समान।
मृत्युञ्जय होके 'विशद', पावे पद निर्वाण।।

* * *

New
20-6-2012

श्री गिरनारजी चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल वन्दन बारम्बार।
तीन लोक में पूज्य है, तीर्थ क्षेत्र गिरनार।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
यही भावना है 'विशद', बढ़ें मोक्ष की ओर।।

(चौपाई)

जय-जय सिद्धक्षेत्र गिरनार, जिसकी महिमा अपरम्पार।
है सौराष्ट्र देश शुभकार, जूनागढ़ जिसमें मनहार।।
तीन कोश जाने के बाद, दरवाजा फिर नदी अगाध।
उत्तर दक्षिण पर्वत दोय, जिसमें बहता उज्ज्वल तोय।।
नदी मध्य कई कुण्ड सुजान, दोनों तट मंदिर पहिचान।
वैष्णव साधु के स्थान, भिक्षा वृत्ति वाले मान।।
एक कोश आगे को जाय, जल से पूरित नाला आय।
श्रावक जन करते स्नान, मृगी कुण्ड फिर आगे जान।।
वैष्णव के तीरथ स्थान, पूजा भक्ति करें प्रधान।
डेढ़ कोष आगे को जाय, फिर छोटे पर्वत को पाय।।
तीन कुण्ड है जहाँ महान्, युग मंदिर जिन के पहिचान।
दो मंदिर जिनवर के जान, श्वेताम्बर के बहुत प्रमान।।
बनी धर्मशाला शुभकार, जल का कुण्ड है अपरम्पार।
दर्शन करके आगे जाय, द्वितिय टोंक का दर्शन पाय।।
मोक्ष गये अनिरुद्ध कुमार, चरण बने हैं अपरम्पार।
भक्त वंदना करते आन, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान।।
तृतिय टोंक का फिर स्थान, छतरी बनी है जहाँ महान्।
पाए मुक्ति शम्बुकुमार, पद में वन्दन बारम्बार।।
भक्त करें शुभ मंगलगान, नत हो पद पंकज में आन।
आगे चढ़े बनाके भाव, फिर मिलता है कठिन चढ़ाव।।

बनी है चौथी टोंक विशाल, चढ़के प्राणी हों बेहाल।
श्रावक फिर भी श्रद्धावान, चढ़के करते प्रभु गुणगान।।
मुक्ति गये प्रद्युम्न कुमार, बनकर के स्वामी अनगार।
आगे पञ्चम टोंक विशेष, मुक्ति गये श्री नेमि जिनेश।।
चरण बने प्रभु के शुभकार, जिनपद वन्दन बारम्बार।
छतरी वहाँ बनी थी खास, बिजली से हो गई विनाश।।
हरा भरा पर्वत मनहार, रहा लोक में अतिशयकार।
गिरि की महिमा का नहिं पार, भव सिन्धु से करें जो पार।।
ऊँचा पर्वत रहा महान्, नहीं तीर्थ है और समान।
तीर्थ वन्दना करके दास, करने आते पूरी आस।।
कर्मों का हो पूर्ण विनाश, पा जाएँ हम शिवपुर वास।
पच्चिस सौ सैंतिस निर्वाण, माघ शुक्ल तृतिया शुभमान।।
भक्त करें भक्ती शुभकार, पावें भक्ती का उपहार।
रहा आम्रवन जहाँ विशेष, दीक्षा धारे नेमि जिनेश।।
गिरि की महिमा का नहीं पार, माने सुर गुरु भी जब हार।
बत्तिस कोढ़ी मुनि सौ सात, कर्म घातिया कीन्हें घात।।
अविकारी बनके जिन संत, किए कर्म का अपने अन्त।
यात्री आकर के शुभ खास, बनते हैं चरणों के दास।।
पूजा वन्दन करे महान्, भक्ति अर्चा करें प्रधान।
भक्ती का पाके आधार, हो जाते हैं भव से पार।।
वन्दन करते बारम्बार, अब भव सिन्धु का पाने द्वार।
करते हैं जो प्रभु का जाप, उनके कटते हैं पाप।।

दोहा- चालीसा गिरनार का, गिर के ऊपर जाय।
भक्ति भाव से जो पढ़े, सुख-सम्पत्ती पाय।।
रोग-शोक का नाशकर, पावे सुन्दर देह।
'विशद' मोक्ष पद पायगा, भक्त नहीं सन्देह।।

New
20-6-2012

श्री नवग्रह शांति चालीसा

दोहा- नव देवों के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
अर्चा करते भाव से, पाने भवदधि पार।।
चालीसा नवग्रह यहाँ, पढ़ते योग सम्हार।
सुख-शांति सौभाग्य पा, करें आत्म उद्धार।।

(चौपाई)

नवग्रह नभ में रहने वाले, सारे जग से रहे निराले।
रवि शशि मंगल बुध गुरु गाये, शुक्र शनि राहू-केतु बताए।।
कर्म असाता उदय में आए, तव ये नवग्रह खूब सताए।
कभी व्याधि लेकर के आते, कभी उदर पीड़ा पहुँचाते।।
आँख कान में दर्द बढ़ाते, मन में बहु बेचैनी लाते।
कभी होय व्यापार में हानी, कभी करें नौकर मनमानी।।
कभी चोर चोरी को आवें, छापा मार कभी आ जावें।
कभी कलह घर में बढ़ जावे, कभी देह में रोग सतावें।।
बेटा बेटी कही न माने, अपने अपना न पहिचाने।
प्राणी संकट में पड़ जावे, शांति को ना राह दिखावे।।
ऐसे में भी प्रभु की भक्ति, हर कष्टों से देवे मुक्ति।
ग्रहारिष्ट रवि जिसे सताए, पद्म प्रभु को वह नर ध्याये।।
विमलानन्त धर्म अर पाए, शांति कुन्थु नमि वीर कहाए।
गुरु अरिष्ट ग्रह शांति प्रदायी, अष्ट जिनेन्द्र रहे सुखदायी।।
ऋषभाजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति सुपार्श्व विमल नृप नन्दन।
जिन सुपार्श्व शीतल जिन स्वामी, गुरु ग्रह शांति कारक स्वामी।।
शुक्र अरिष्ट शांति कर गाए, पुष्पदन्त जिनराज कहाए।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति दाता, श्री मुनिसुव्रत रहे विधाता।।

राहू ग्रह नाशक कहलाए, नेमिनाथ तीर्थंकर गाए।
मल्लि पार्श्व का ध्यान जो करते, केतू ग्रह की बाधा हरते।।
जो चौबिस तीर्थंकर ध्याए, जीवन में वह शांति पाए।
उसकी आधि व्याधि क्षय जाए, ग्रह पीड़ा से शांति उपाए।।
गगन गमन ग्रह करते भाई, मानव को होते दुखदायी।
जन्म लग्न राशि को पाए, मानव को ग्रह बड़ा सताए।।
ज्ञानी जन उस ग्रह के स्वामी, तीर्थंकर को भजते नामी।
ग्रहहारी दिन जिन को ध्याएँ, पूजा कर सौभाग्य जगाएँ।।
करें आरती मंगलकारी, विशद भाव से शुभ मनहारी।
चालीसा चालिस दिन गाए, मंत्र जाप भी करते जाएँ।।
मंगलमयी विधान रचाएँ, शांति भाव से ध्यान लगाएँ।
अन्तिम श्रुतकेवली गाए, भद्रबाहु स्वामी कहलाए।।
नवग्रह शांति स्तोत्र रचाए, चौबीसों जिनवर को ध्याएँ।
शान्त्यर्थ शुभ शांतिधारा, भवि जीवों बने सहारा।।
नौ तीर्थंकर नवग्रह हारी, कहलाए हैं मंगलकारी।
चन्द्रप्रभु वासुपूज्य बताए, मल्लि वीर सुवधि जिन गाए।।
शीतल मुनिसुव्रत जिन स्वामी, नेमि पार्श्व जिन अन्तर्यामी।
नवग्रह शांति जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।
'विशद' भावना हम ये भाएँ, सुख-शांति सौभाग्य जगाएँ।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति से लोग।
रोग-शोक क्लेशादि का, रहे कभी न योग।।
नवग्रह शांति के लिए, ध्याते जिन चौबीस।
सुख-शांति आनन्द हो, 'विशद' झुकाते शीश।।

New
20-6-2012

आचार्य श्री विशदसागरजी चालीसा

परमेष्ठी को नमन् कर, नव देवों के साथ।
लिखने का साहस करें, चरण झुकाएँ माथ।।
रोग-शोक का नाश कर, पाएँ मुक्ती धाम।
विशद सिंधु गुरुवर तुम्हें, शत्-शत् बार प्रणाम।।

चौपाई

चउ अनुयोगों के गुरु ज्ञाता, सूरी तुम जन-जन के त्राता।
भक्तों के तुम (गुरु) देव कहाते, श्रुत अमृत की धार बहाते।।
जय-जय छत्तिस गुण के धारी, भविजन के तुम हो हितकारी।
भाव सहित तुमरे गुण गाते, चरण कमल में शीश झुकाते।।
नाथूरामजी पिता तुम्हारे, इंदर माँ की नयन के तारे।
छोड़ सभी झंझट संसारी, बन गए आप बाल ब्रह्मचारी।।
आठ नवम्बर बानवें आया, ब्रह्मचर्य व्रत तव अपनाया।
एक वर्ष तक रहे विरागी, संयम की मन में सुध जागी।।
स्वारथ का संसार है सारा, मिला न अब तक कोई सहारा।
दीन-हीन बालक को गुरुवर, कृपा कीजिये भव्य जानकर।।
ऐलक पद तुमने अपनाया, पाँचें मार्ग शीष सित पाया।
सन् उन्नीस सौ छियानवें आया, आठ फरवरी का दिन पाया।।
तन मन से हो गये अविकारी, जैसे हो चंदन की क्यारी।
भरत सिंधु के दर्शन पाये, तन मन में गुरु अति हर्षाये।।
श्री गुरुवर ने दिया सहारा, भव्यों का करने उद्धारा।
भक्तों को सद्ज्ञान सिखाओ, मोक्षमार्ग पर उन्हें बढ़ाओ।।
तुमको है आशीष हमारा, जीवन हो मंगलमय सारा।
गुरुवर मालपुरा में आए, सबने गुरु के दर्शन पाए।।
मन में हर्ष हुआ था भारी, गद्गद् हुई थी जनता सारी।
तेरह फरवरी का दिन पाया, दो हजार सन् पाँच कहाया।।
मुनिवर से आचार्य बनाया, गुरुवर की शुभ पाई छाया।
फिर गुरुवर से आशीष पाए, दीक्षा देकर शिष्य बनाए।।

New
20-6-2012

विशद चालीसा संग्रह

एक मुनि दो क्षुल्लक भाई, उनने फिर शुभ दीक्षा पाई।
जग में जितने पद कहलाये, सारे ही निष्फल कहलाये ।।
मोक्षमार्ग का पथ पा जाएँ, तव चरणों में हम शीश झुकाये।
ज्ञानवीर हो ध्यान वीर हो, मुनि श्रावक के महावीर हो ।।
जीवन के आदर्श तुम्हीं हो, प्रेय श्रेय भगवंत तुम्ही हो।
क्षमामूर्ति गुरुदेव हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे ।।
वीतराग मुद्रा के धारी, तीन लोक में करुणाकारी।
जपने से गुरु नाम तुम्हारा, भव सिन्धु का मिले किनारा ।।
दुनियाँ में नहिं कोई हमारा, दे दो गुरुवर हमें सहारा।
मात-पिता तुमको ही माना, परम ब्रह्म परमातम जाना ।।
धर्म-कर्म के तुम हो ज्ञाता, सूरी तुम हो भाग्य विधाता।
जग में सबको सब कुछ देते, बदले में तुम कुछ न लेते ।।
सरस्वती की है यह माया, होनहार विद्वान बनाया।
पञ्च महाव्रत पालन करते, दशधर्मों को जो आचरते ।।
चिंतन मंथन अनुभव द्वारा, भक्तों का करते उद्धारा।
चरण शरण में जो भी आता, मन वांछित फल तब पा जाता ।।
चरणों की रज है सुखकारी, दुख दरिद्रा की नाशन हारी।
तव भक्ती का मिला सहारा, कथन किया लघु शब्दों द्वारा ।।
हम है दीन हीन संसारी, लिखने की क्या शक्ति हमारी।
भक्ति करने हम भी आए, नहीं भेंट में कुछ भी लाए।।
भाव समर्पित करने आए, नहीं भेंट में कुछ भी लाए।
'आस्था' भाव समर्पित करते, तव चरणों में मस्तक धरते ।।

दोहा- विशद चालीसा जो पढ़े, विशद भक्ति के साथ।
विशद ज्ञान पा कर बनें, विशद लोक का नाथ ।।
विशद ज्ञान पावे सदा, करें विशद कल्याण।
विशद लोक में जा बसे, बने विशद धीमान ।।

- ब्र. आस्था दीदी (संघस्थ)

(25) श्री चौबीस तीर्थंकर चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
चालीसा पढ़ते यहाँ, पाने मुक्ती द्वार॥
तीर्थंकर पद पाए हैं, चौबीसों जिनराज।
'विशद' भाव से हम यहाँ, गुण गाते हैं आज॥

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा मनहारी, जिसमें भरत क्षेत्र शुभकारी॥1॥
चौबिस तीर्थंकर शिव पाए, वर्तमान चौबीसी गाए॥2॥
आदिनाथ तीर्थंकर स्वामी, प्रथम हुए मुक्तीपथ गामी॥3॥
अजितनाथ के हम गुण गाते, मुक्ती की जो राह दिखाते॥4॥
सम्भव कार्य असम्भव करते, कष्ट सभी जीवों के हरते॥5॥
अभिनंदन की महिमा न्यारी, गाती है जगती यह सारी॥6॥
सुमतिनाथ सुमति के दाता, जग जीवों के भाग्य विधाता॥7॥
पद्म प्रभू पद्मेश कहाए, पद्म के ऊपर आसन पाए॥8॥
जिन सुपार्श्व की है बलिहारी, मुक्ती पाए हो अविकारी॥9॥
चन्द प्रभु चन्दा सम सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें॥10॥
शीतलनाथ सुशीतल गाए, शीतलता जग में प्रगटाए॥11॥
श्रेयनाथ हैं श्रेय प्रदाता, जग में मुक्ती पद के दाता॥12॥
वासुपूज्य जग पूज्य बताए, प्रथम बालयति जो कहलाए॥13॥
विमलनाथ गुण विमल प्रकाशी, बने आप शिवपुर के वासी॥14॥
जिन अनन्त गुण पाए अनन्ता, ज्ञान अनन्त पाए भगवन्ता॥15॥
धर्मनाथ जिन धर्म के धारी, तज के राग हुए अनगारी॥16॥
शांतिनाथ जिन हुए निराले, जग को शांती देने वाले॥17॥
कुन्थुनाथ त्रय पद के धारी, तीन लोक में करुणाकारी॥18॥
अरहनाथ कर्मारी हन्ता, प्रभु गुण तुमरे रहे अनन्ता॥19॥

मोह मल्ल के नाशन हारे, मल्लिनाथ जिनराज हमारे॥20॥
मुनिसुव्रत से व्रत कई पाए, क्षीण मोह प्रभु आप कहाए॥21॥
नमीनाथ पद नमन हमारा, हमको भी दो नाथ सहारा॥22॥
नेमिनाथ जगनाथ कहाये, ऊर्जयन्त से मुक्ती पाए॥23॥
पार्श्वनाथ महिमा दिखलाए, जो उपसर्ग जयी कहलाए॥24॥
महावीर सा वीर न गाया, सारे जग में कोई पाया॥25॥
चौबिस यह तीर्थंकर जानो, मोक्ष मार्ग के नेता मानो॥26॥
जो भी तीर्थंकर को ध्याये, भाव सहित शुभ महिमा गाए॥27॥
वह भी तीर्थंकर बन जाए, सारे जग का वैभव पाए॥28॥
तीर्थंकर की महिमा न्यारी, सारे जग में अतिशयकारी॥29॥
प्रभु जब केवलज्ञान जगाते, समवशरण आ देव रचाते॥30॥
गणधर कोई बनकर आते, वह भी मुक्ती पथ दर्शाते॥31॥
दिव्य देशना प्रभू सुनाते, प्राणी दर्शन ज्ञान जगाते॥32॥
समवशरण में केवलज्ञानी, आते हैं शिवपद के दानी॥33॥
पूरब धारी मुनिवर आते, शिक्षक भी स्थान बनाते॥34॥
विपुलमती मनःपर्ययज्ञानी, साथ में आते अवधिज्ञानी॥35॥
संत विक्रिया ऋद्धीधारी, वादी भी आते अनगारी॥36॥
यक्ष यक्षिणी भी शुभ आते, श्रावक दिव्य देशना पाते॥37॥
'विशद' भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते॥38॥
तीर्थंकर पदवी को पाएँ, शिवपुर अपना धाम बनाएँ॥39॥
हम भी शिवपथ के अनुगामी, बन जाएँ हे अन्तर्यामी॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव के साथ।
चौबीसों जिनराज के, चरण झुकाएँ माथ॥
सुख-शांती सौभाग्य श्री, पाएँ अपरम्पार।
अल्प समय में वह 'विशद', पाएँ भव से पार॥

जाप : ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराय नमः।

(26) सिद्धचक्र चालीसा

दोहा- रत्नत्रय से शोभते, पञ्च गुरु शिवधाम।
करते पूजा अर्चना, करके विशद प्रणाम॥
चालीसा जिन सिद्ध का, गाते हम शुभकार।
वन्दन करते भाव से, पद में बारम्बार॥

(चौपाई)

जय-जय परम सिद्ध शुभकारी, तीन लोक में मंगलकारी॥1॥
सिद्ध सनातन शुभ कहलाए, अपने सारे कर्म नशाए॥2॥
पुरुषाकार लोक है भाई, उस पर सिद्ध शिला बतलाई॥3॥
ईशत् प्राग्भार शुभ जानो, अष्टम पृथ्वी जिसको मानो॥4॥
ज्ञान शरीरी जो कहलाए, प्रभु निकल परमातम गाए॥5॥
ज्योती पुञ्ज अरूपी जानो, ज्ञानादर्श स्वरूपी मानो॥6॥
शुद्ध बुद्ध चैतन्य कहाए, चमत्कार चित् चेतन पाए॥7॥
नित्य निरंजन गुण प्रगटाए, मुक्तिश्री के स्वामी गाए॥8॥
ज्ञानावरणी कर्म नशाए, ज्ञान अनन्त प्रभू प्रगटाए॥9॥
कर्म दर्शनावरणी नाशे, दर्श अनन्त प्रभू परकाशे॥10॥
मोह कर्म को आप नशाया, गुण सम्यक्त्व श्रेष्ठ प्रगटाया॥11॥
अन्तराय नाशे जिन स्वामी, बल अनन्त पाये शिवगामी॥12॥
वेदनीय कर्मों के नाशी, अव्यावाध सुगुण की राशि॥13॥
आयू कर्म नशाने वाले, अवगाहन गुण पाने वाले॥14॥
नाम कर्म भी रह ना पाया, गुण सूक्ष्मत्व श्रेष्ठ प्रगटाया॥15॥
गोत्र कर्म के नाशी जानो, अगुरुलघु गुण जिनका मानो॥16॥
गुण सहस्र तुमने प्रगटाए, सहस्रनाम धारी कहलाए॥17॥
पार नहीं महिमा का पावे, चाहे वृहस्पति भी आ जावे॥18॥
इन्द्र नरेन्द्र सभी गुण गाते, फिर भी महिमा न कह पाते॥19॥
भक्ती से हमने गुण गाया, पद में सादर शीश झुकाया॥20॥

विशद भावना हमने भाई, प्राप्त हमें हो प्रभु प्रभुताई॥21॥
सिद्ध प्रभू महिमा के धारी, जिन सर्वज्ञ कहे शुभकारी॥22॥
महा मोहतम नाशन हारी, निर्विकल्प आनन्दाविकारी॥23॥
कर्म त्रिविध से रहित कहाए, निजानन्द सुखकारी गाये॥24॥
संशयादि सारे भ्रमहारी, जन्म-जरादिक रोग निवारी॥25॥
युगपद सकल लोक के ज्ञाता, अनुपम विधि के श्रेष्ठ विधाता॥26॥
निरावरण निर्मल अनगारी, निरूपाधि चेतन गुणधारी॥27॥
दुर्निवार निर्द्वन्द स्वरूपी, निर आश्रय निरमय चिद्रूपी॥28॥
सब विकल्प तज भेद स्वरूपी, निज अनुभूति मगन अनरूपी॥29॥
अजर अमर अविकल अविनाशी, निराकार निज ज्ञान प्रकाशी॥30॥
दोष अठारह रहित कहाए, ज्ञान शरीरी अविचल गाए॥31॥
पावन वीतरागता धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥32॥
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय सब पाए, निज में सारे सुगुण समाए॥33॥
गुण अनन्त के हैं जो स्वामी, आप कहाए अन्तर्यामी॥34॥
सिद्ध सनातन तुम कहलाते, तीन लोक में पूजे जाते॥35॥
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए॥36॥
पञ्चम भाव आपने पाया, पञ्चम गति में धाम बनाया॥37॥
श्री के धारी आप कहाए, हो कृतकृत्य सत्य शिव पाए॥38॥
कहलाए प्रभु त्रिभुवन नामी, भव्य जीव हैं तव अनुगामी॥39॥
चरण आपके 'विशद' नमामी, ज्ञानी जन करते प्रणमामी॥40॥

दोहा- विघ्न हरण मंगल करण, सदा रहो जयवंत।
विघ्न रोग दुर्भाग्य का, होवे क्षण में अन्त॥
चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव के साथ।
वे कर्मों का नाशकर, बने श्री के नाथ॥

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिने नमः।

(27) श्री णमोकार चालीसा

महामंत्र- णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उव्वज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

दोहा- तीन लोक से पूज्य हैं, अर्हतादि नव देव।
मन वच तन से पूजते, उनको विनत सदैव॥
णमोकार महामंत्र है, काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ती जाप से, बनें जीव अर्हन्त॥

चौपाई

णमोकार शुभ मंत्र कहाया, काल अनादि अनन्त बताया॥1॥
मंत्रराज जानो शुभकारी, अपराजित अनुपम मनहारी॥2॥
परमेष्ठी वाचक यह जानो, महिमाशाली जो पहिचानो॥3॥
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे॥4॥
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी॥5॥
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता॥6॥
दोष अठारह रहित बताए, चौंतिस अतिशय जो प्रगटाए॥7॥
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए॥8॥
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए॥9॥
समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्द्रों से पूजे जाते॥10॥
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग में रहे निराले॥11॥
अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते ॥12॥
जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए॥13॥
फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की प्रभु भाई॥14॥
आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए॥15॥
सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए॥ 16॥
आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते॥17॥
पञ्चाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए॥18॥

शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले॥19॥
आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित्त दे दोष नशाते॥20॥
छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी॥21॥
द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता॥22॥
ज्ञानाभ्यास करें जो भाई, संतों को शिक्षा दें भाई॥23॥
द्वादशांग के ज्ञाता जानों, पच्चिस गुणधारी पहिचानो॥24॥
रत्नत्रयधारी कहलाए, मुक्ती पथ के नेता गाए॥25॥
दर्शन-ज्ञान-चरित के धारी, साधू होते हैं अनगारी॥26॥
विषयाशा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो॥27॥
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते॥28॥
हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी॥29॥
पञ्चमहाव्रत धारी जानो, पञ्चसमितियाँ पालें मानो॥30॥
पञ्चेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले॥31॥
णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई॥32॥
महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया॥33॥
अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई॥34॥
सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया॥35॥
सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी॥36॥
श्वानादिक पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए॥37॥
महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए॥38॥
भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए॥39॥
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
विशद गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ॥
धूप अग्नि में होमकर, करें मंत्र का जाप।
अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप॥

जाप-ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

(28) श्री बाहुबली चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के चरण में, करके प्रथम प्रणाम।
चौबीसों जिनराज के, ध्याते उर से नाम॥
बाहुबली भगवान का, चालीसा शुभकार।
पढ़े भाव से जो 'विशद', अनुपम आए बहार॥

(चौपाई)

जय-जय बाहुबली जिन स्वामी, नाथ आप मुक्ती पथगामी॥1॥
तुमको यह सारा जग जाने, तीर्थंकर के जैसा माने॥2॥
पावन जम्बूद्वीप बताया, भारत देश उसी में गाया॥3॥
जिसमें नगर अयोध्या जानो, शास्वत जन्म नगर पहचानो॥4॥
तृतिय काल रहा सुखदायी, आदिनाथ जन्मे तब भाई॥5॥
धर्म प्रवर्तन करने वाले, आप जहाँ में हुए निराले॥6॥
बाहुबली जिनके सुत भाई, मात सुनन्दा जिनने पाई॥7॥
पिता ने तुमको ज्ञान सिखाया, पढ़ा लिखाकर योग्य बनाया॥8॥
बचपन बीता आई जवानी, तुमने महिमा जग की जानी॥9॥
सवा पाँच सौ धनुष की भाई, श्रेष्ठ रही तन की ऊँचाई॥10॥
पिता को जब वैराग्य समाया, पुत्रों को तब पास बुलाया॥11॥
नगर अयोध्या श्रेष्ठ कहाए, भरत को उसका राज्य दिलाए॥12॥
बाहुबली राजा कहलाए, पोदनपुर की सत्ता पाए॥13॥
भरतेश चक्ररत्न प्रगटाए, छह खण्डों पर विजय दिलाए॥14॥
चक्र हाथ न आया भाई, विजय पूर्णता न हो पाई॥15॥
बाहुबली बाहूबल धारी, नहीं दासता जो स्वीकारी॥16॥
मंत्री ने भारी समझाया, लेकिन एक चली न माया॥17॥
बाहुबली ने बात न मानी, तव भरतेश ने युद्ध की ठानी॥18॥
नेत्र युद्ध जल मल्ल बताए, बाहुबली विजयश्री पाए॥19॥

यह संसार स्वार्थ मय गाया, बाहुबली के मन में आया॥20॥
मन में तब वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया॥21॥
भूमि भरत की है यह सारी, कहाँ जाएँगे हो अविकारी॥22॥
केश लुंचकर दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए॥23॥
तन पर बेल चढ़ी थी भाई, तन की सारी सुधि विसराई॥24॥
बिच्छू साँप आदि कई आए, तन पर अपना वास बनाए॥25॥
एक वर्ष का ध्यान लगाए, फिर भी केवल ज्ञान न पाए॥26॥
नहीं आप आहार को आए, ऐसी अद्भुत शक्ती पाए॥27॥
तब भरतेश चरण में आए, पद में सादर शीश झुकाए॥28॥
वसुधा किसी की न हो पाई, क्यों विकल्प करते हो भाई॥29॥
प्रभु ने निज का ध्यान लगाया, तब फिर केवलज्ञान जगाया॥30॥
आदिनाथ से पहले भाई, अष्टापद से मुक्ती पाई॥31॥
माँ चामुण्डराय की गाई, जिसने स्वप्न सजाया भाई॥32॥
विन्ध्य गिरि पर्वत शुभकारी, इसमें प्रतिमा हो मनहारी॥33॥
तब चामुण्डराय ने भाई, अनुपम शुभ मूर्ती बनवाई॥34॥
सत्तावन फुट ऊँची जानो, अतिशयकारी जो शुभ मानो॥35॥
जग में प्रतिमा रही निराली, सबके मन को हरने वाली॥36॥
होता है अभिषेक निराला, जन-जन का मन हरने वाला॥37॥
बारह वर्ष बाद मनहारी, हो अभिषेक श्रेष्ठ शुभकारी॥38॥
'विशद' भाव से हम भी ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥39॥
शिवपथ हमको प्रभू दिखाओ, अपने जैसा हमें बनाओ॥40॥

दोहा- बाहुबली सम बाहुबल, पाएँ हे भगवान !।
मुक्ती पद के भाव से, 'विशद' करें हम ध्यान॥
चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव के साथ।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, बनें श्री का नाथ॥

जाप : ॐ ह्रीं बाहुबलधारी श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः।

(29) श्री भक्तामर चालीसा

दोहा- भक्तामर स्तोत्र यह, आदिनाथ के नाम।
मानतुंग मुनि ने लिखा, करके चरण प्रणाम॥
सुख-शांति सौभाग्य हो, पढ़ने से स्तोत्र।
बाधाएँ सब दूर हों, बहे धर्म का स्रोत॥

(चौपाई)

भक्तामर स्तोत्र निराला, सब कष्टों को हरने वाला॥1॥
मानतुंग की रचना प्यारी, कहलाए जो संकटहारी॥2॥
हरेक काव्य है महिमाशाली, भक्ती कभी न जाए खाली॥3॥
एक एक अक्षर मंत्र कहाये, पाठक सुख-सम्पत्ती पाए॥4॥
सदी ग्यारहवी जानो भाई, उज्जैनी नगरी सुखदायी॥5॥
जिसका प्रान्त मालवा गाया, विद्वानों का केन्द्र बताया॥6॥
राजाभोज वहाँ का जानो, नौ मंत्री जिसके पहिचानो॥7॥
कालीदास प्रथम कहलाया, सेठ सुदत्त वहाँ जब आया॥8॥
पुत्र मनोहर जिसका जानो, पुस्तक हाथ लिए था मानो॥9॥
राजा ने पूछा हे भाई, पुस्तक कौन सी तुमने पाई॥10॥
नाम माला तब नाम बताए, लेखक कवी धनंजय गाए॥11॥
कवि को राजा ने बुलवाया, खुश होके सम्मान कराया॥12॥
कृती नाम माला है प्यारी, राजा किए प्रशंसा भारी॥13॥
गुरु के आशिष से यह पाया, मानतुंग को गुरु बतलाया॥14॥
कालीदास को नहीं सुहाया, कविवर को मूरख बतलाया॥15॥
शास्त्रार्थ कर ले तो जानें, हम इसकी महिमा पहिचानें॥16॥
दूत मुनी के पास भिजाया, मुनिवर को संदेश सुनाया॥17॥
सभा बीच मुनिवर न आए, चार बार संदेश भिजाए॥18॥
कालिदास को गुस्सा आया, उसने राजा को भड़काया॥19॥

क्रोध नृपति के मन में आया, सैनिक को आदेश सुनाया॥20॥
बन्दी बना यहाँ पर लाओ, राजसभा में पेश कराओ॥21॥
दूत उठाकर मुनि को लाए, मुनि उपसर्ग मानकर आए॥22॥
मौन धार लीन्हें तब स्वामी, जैन धर्म के शुभ अनुगामी॥23॥
मुनिवर को वह कैद कराए, अड़तालिस ताले लगवाए॥24॥
नर-नारी तब शोक मनाए, दुख के आँसू खूब बहाए॥25॥
मुनिवर मन में समता लाए, तीन दिनों का समय बिताए॥26॥
आदिनाथ को मुनिवर ध्याये, भक्तामर स्तोत्र रचाये॥27॥
मुनि के तन में बँधने वाले, टूट गयीं जंजीरें ताले॥28॥
आपों आप खुले सब द्वारे, द्वारपाल सब लगा के हारे॥29॥
पास में राजा के तह आए, जाकर सारा हाल सुनाए॥30॥
राजा तभी वहाँ पर आया, मुनिवर को फिर कैद कराया॥31॥
मुनिवर जी फिर ध्यान लगाए, ताले फिर से टूटे पाए॥32॥
राजा तब मन में घबराया, कालिदास को पास बुलाया॥33॥
कालिदास ने शक्ति लगाई, देवि कालिका भी प्रगटाई॥34॥
देवी चक्रेश्वरी तब आई, देख कालिका तब घबराई॥35॥
महिमा जैन धर्म की गाई, सबने तब जयकार लगाई॥36॥
जैन धर्म लोगों ने धारा, धर्म का है बश यही सहारा॥37॥
'विशद' भक्ति की है बलिहारी, पुण्यवान होवे शुभकारी॥38॥
भाव सहित भक्तामर गाएँ, मानतुंग सम भक्ति जगाएँ॥39॥
अतिशयकारी पुण्य कमाएँ, अनुक्रम से फिर मुक्ती पाएँ॥40॥

दोहा- भक्तामर स्तोत्र से, भारी अतिशय होय।
नाना भाषा में रचा, पढ़े भाव से कोय॥
आधि व्याधि नाशक कहा, चालीसा स्तोत्र।
मंत्रों से परिपूर्ण है, 'विशद' धर्म का स्रोत॥

जाप- ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐम् अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

(32) श्री सरस्वती (जिनवाणी) चालीसा

दोहा- अर्हत् सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय जिन संत।
अर्हत् चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, जिनश्रुत कहा अनन्त॥
दिव्य ध्वनि जिनदेव की, सरस्वती है नाम।
चालीसा लिखते यहाँ, करके विशद प्रणाम।

(चौपाई)

जय-जय सरस्वती जिनवाणी, तुम हो जन-जन की कल्याणी॥1॥
प्रथम भारती नाम कहाया, द्वितिय सरस्वती शुभ गाया॥2॥
तृतिय नाम शारदा जानो, चौथा हंसगामिनी मानो॥3॥
पञ्चम विदुषां माता गाई, वागीश्वरि छठवाँ शुभ पाई॥4॥
सप्तम नाम कुमारी गाया, अष्टम ब्रह्मचारिणी पाया॥5॥
जगत माता नौमी शुभ जानो, दशम नाम ब्राह्मिणि पहिचानो॥6॥
ब्रह्माणी ग्यारहवाँ भाई, बारहवाँ वरदा सुखदायी॥7॥
नाम तेरहवाँ वाणी गाया, चौदहवाँ भाषा कहलाया॥8॥
पन्द्रहवाँ श्रुतदेवी माता, सोलहवाँ गौरी दे साता॥9॥
सोलह नाम युक्त जिनमाता, सबके मन की हरे असाता॥10॥
द्वादशांग युत वाणी गाई, चौदह पूर्व युक्त बतलाई॥11॥
आचारांग प्रथम कहलाया, दूजा सूत्र कृतांग बताया॥12॥
स्थानांग तीसरा जानो, चौथा समवायांग बखानो॥13॥
व्याख्या प्रज्ञप्ति है पंचम, ज्ञातृकथा शुभ अंग है षष्ठम॥14॥
उपाशकाध्ययन अंग सातवाँ, अन्तःकृद्दश रहा आठवाँ॥15॥
नवम् अनुत्तर दशांग बताया, दशम प्रश्न व्याकरण कहाया॥16॥
सूत्र विपांग ग्यारहवाँ जानो, दृष्टिवाद बारहवाँ मानो॥17॥
पाँच भेद इसके बतलाए, पहला शुभ परिकर्म कहाए॥18॥
सूत्र दूसरा भेद बखाना, भेद पूर्वगत तृतिय माना॥19॥
चौथा प्रथमानुयोग कहाया, पंचम भेद चूलिका गाया॥20॥
भेद पूर्वगत के शुभकारी, चौदह होते मंगलकारी॥21॥

पहला उत्पाद पूर्व बखाना, पूर्व अग्राणीय द्वितिय माना॥22॥
तीजा वीर्य प्रवाद कहाया, अस्तिनास्ति प्रवाद फिर गाया॥23॥
पंचम ज्ञान प्रवाद बखाना, सत्य प्रवाद छठा शुभ माना॥24॥
सप्तम आत्म प्रवाद है भाई, कर्म प्रवाद अष्टम सुखदायी॥25॥
नौवा प्रत्याख्यान बताया, विद्यानुवाद दशम कहलाया॥26॥
कल्याणवाद ग्यारहवाँ जानो, प्राणावाय बारहवाँ मानो॥27॥
क्रिया विशाल तेरहवाँ भाई, लोक बिन्दुसार अन्तिम गाई॥28॥
ऋषभादिक चौबिस जिन गाये, वीर प्रभू अन्तिम कहलाए॥29॥
ॐकारमय श्री जिनवाणी, तीन लोक में है कल्याणी॥30॥
गौतम गणधर ने उच्चारी, भवि जीवों को मंगलकारी॥31॥
तीन हुए अनुबद्ध केवली, पाँच हुए फिर श्रुत केवली॥32॥
फिर आचार्यों ने वह पाई, परम्परा यह चलती आई॥33॥
कलीकाल पञ्चम युग आया, अंग पूर्व का ज्ञान भुलाया॥34॥
ज्ञाता अंगांश के शुभ भाई, धरसेन स्वामी बने सहाई॥35॥
भूतबली पुष्पदन्त बुलाए, षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखाए॥36॥
धवलादिक टीका शुभकारी, श्रुत का साधन बना हमारी॥37॥
शुभ अनुयोग चार बतलाए, चतुर्गती से मुक्ति दिलाए॥38॥
प्रथमानुयोग प्रथम कहलाया, द्वितिय करुणानुयोग बताया॥39॥
चरणानुयोग तीसरा जानो, द्रव्यानुयोग चौथा पहिचानो॥40॥
अनेकांतमय अमृतवाणी, स्याद्वाद मय श्री जिनवाणी॥41॥
जिसमें हम अवगाहन पाएँ, अपना जीवन सफल बनाएँ॥42॥

दोहा- श्रद्धा भक्ती से पढ़े, चालीसा शुभकार।
लौकिक आध्यात्मिक सभी, पावे ज्ञान अपार॥
पच्चिस सौ सैंतीस यह, कहा वीर निर्वाण।
'विशद' भाव से यह किया, आगम का गुणगान॥

जाप- ॐ ह्रीं श्रां श्रूं श्रः हं सं थः थः ठः ठः ठः सरस्वती भगवति विद्या प्रसादं कुरु-कुरु स्वाहा।

(34) कैलाश गिरि चालीसा

दोहा- अष्टापद से ऋषभ जिन, पाए पद निर्वाण।
चालीसा गाते यहाँ, करके जिन का ध्यान॥

(चौपाई)

तीर्थराज अष्टापद गाया, गिरि कैलाश शिखर कहलाया॥1॥
ऋषभनाथ तीर्थंकर स्वामी, हुए जहाँ से मुक्ती गामी॥2॥
प्रथम तीर्थंकर आप कहाए, मोक्षमार्ग की राह दिखाए॥3॥
नगर अयोध्या के नृप जानो, नाभिनाथ अन्तिम मनु मानो॥4॥
मरुदेवी जिनकी महारानी, शीलवती थी ज्ञानी ध्यानी॥5॥
स्वर्ग से चयकर के प्रभु आये, जिनके गृह को धन्य बनाए॥6॥
वृषभ चिन्ह दाँये पग पाये, वृषभनाथ जी अत: कहाए॥7॥
युवा अवस्था में जब आए, पद युवराज आप शुभ पाए॥8॥
षट्कर्मों का ज्ञान कराए, कर्म भूमि का अवसर पाए॥9॥
कितनी लम्बी उम्र बताई, लाख चौरासी पूरव गाई॥10॥
भोग में कितना समय बिताया, लाख तिरासी पूरव गाया॥11॥
इन्द्र स्वयं चिन्ता में आया,नील परी का नृत्य कराया॥12॥
मृत्यु का क्षण परी का आया, प्रभु के मन वैराग्य समाया॥13॥
जाना यह संसार असारा, अन्तिम क्या है लक्ष्य हमारा॥14॥
यह विचार मन में जब आया, भरत बाहुबलि को बुलवाया॥15॥
उनका राज तिलक करवाया, प्रभु ने संयम को अपनाया॥16॥
छह महीने का ध्यान लगाए, फिर प्रभु जी आहार को आए॥17॥
विधी किसी ने भी ना जानी, छह महीने भटके मुनि ज्ञानी॥18॥
नगर हस्तिनापुर में आये, राजा सोम श्रेयांस बताए॥19॥
जाति स्मरण से वे जाने, पड़गाहन की विधि पहचाने॥20॥
नवधा भक्ती पूरी कीन्हे, इच्छू रस आहार में दीन्हे॥21॥

कर विहार अष्टापद आये, प्रतिमा योग से ध्यान लगाए॥22॥
तप कर अपने कर्म नशाए, अतिशय केवल ज्ञान जगाए॥23॥
समवशरण तब देव बनाए, दिव्य देशना प्रभू सुनाए॥24॥
प्रथम बहत्तर कर्म विनाशे, तेरह अन्त समय में नाशे॥25॥
पद निर्वाण आपने पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया॥26॥
अष्टापद पर्वत जो गाया,तब से सिद्ध क्षेत्र कहलाया॥27॥
बालि महाबली मुनि आये, तप कर केवलज्ञान जगाए॥28॥
नाग कुमार आदिक मुनि जानो, सिद्ध सुपद पाये यह मानो॥29॥
चक्री भरत वहाँ पर आए, धर्म भावना मन में लाए॥30॥
बहत्तर जो मंदिर बनवाए, स्वर्ण रत्न मय अनुपम गाए॥31॥
बाली मुनि ने ध्यान लगाया, रावण तभी वहाँ पर आया॥32॥
उसके मन में बैर समाया, पर्वत उसने स्वयं उठाया॥33॥
भाव पलटने का मन आया, उसने अपना गर्व दिखाया॥34॥
मुनिवर करुणा से भर आए, तुरत अँगूठा मुनी दबाए॥35॥
गर्व चूर्ण रावण का भाई, हुआ मुनी की है प्रभुताई॥36॥
रावण से मन्दोदरी ने भाई, मुनि चरणों में क्षमा मँगाई॥37॥
तिब्बत में यह गिरि बतलाया,देवों से रक्षित कहलाया॥38॥
अष्टापद की महिमा भाई, 'विशद' भाव से हमने गाई॥39॥
'विशद' मोक्षपद हम भी पाऐं, अष्टापद से शिवपुर जाएँ॥40॥

दोहा- अष्टापद कैलाश की, महिमा अगम अपार।
चालीसा जो भी पढ़े, पावे भव दधि पार॥
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण का, करते जो गुणगान।
अल्प समय में जीव वे, पाते हैं निर्वाण॥

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कैलाशगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

(35) श्री सम्मेदशिखर चालीसा

दोहा- शाश्वत तीरथराज है, शिखर सम्मेद महान्।
चालीसा गाते यहाँ, पाने पद निर्वाण॥

(चौपाई)

शाश्वत तीर्थराज शुभकारी, गिरि सम्मेद शिखर मनहारी॥1॥
कण कण पावन जिसका पाया, मुनियों ने जहाँ ध्यान लगाया॥2॥
हर युग के तीर्थंकर आते, मुक्तिवधू को यहाँ से पाते॥3॥
कालदोष के कारण जानो, इस युग का अन्तर पहिचानो॥4॥
बीस जिनेश्वर यहाँ पे आए, गिरि सम्मेद से मुक्ती पाए॥5॥
इन्द्रराज स्वर्गों से आए, रत्न कांकिणी साथ में लाए॥6॥
चरण उकेरे जिन के भाई, जिनकी महिमा है सुखदायी॥7॥
प्रथम टोंक गणधर की जानो, चौबिस चरण बने शुभ मानो॥8॥
द्वितिय कूट ज्ञानधर भाई, कुन्थुनाथ जिनवर की गाई॥9॥
कूट मित्रधर नमि जिन पाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए॥10॥
नाटककूट रही मनहारी, अरहनाथ की मंगलकारी॥11॥
संबलकूट की महिमा गाते, मल्लिनाथ जहाँ पूजे जाते॥12॥
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्री श्रेयांस मुक्ती पद पाए॥13॥
सुप्रभ कूट की महिमा न्यारी, पुष्पदंत जिन की मनहारी॥14॥
मोहन कूट पद्म प्रभु पाए, जन-जन के मन को जो भाए॥15॥
पूज्य कूट निर्जर फिर आए, मुनिसुव्रत जी शिवपद पाए॥16॥
ललितकूट चन्द्रप्रभु स्वामी, हुए यहाँ से अन्तर्यामी॥17॥
विद्युतवर है कूट निराली, शीतल जिन की महिमा शाली॥18॥
कूट स्वयंप्रभ आगे आए, जिन अनन्त की महिमा गाए॥19॥
धवलकूट फिर आगे जानो, संभव जिन की जो पहिचानो॥20॥

आनन्द कूट पे बन्दर आते, अभिनन्दन जिन के गुण गाते॥21॥
कूट सुदत्त श्रेष्ठ शुभ गाते, धर्मनाथ जिन पूजे जाते॥22॥
अविचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते॥23॥
कुन्दकूट पर प्राणी सारे, शान्तिनाथ पद चिह्न पखारे॥24॥
कूट प्रभास है महिमा शाली, जिन सुपार्श्व पद चिह्नों वाली॥25॥
कूट सुवीर पे जो भी जाए, विमलनाथ पद दर्शन पाए॥26॥
सिद्धकूट पर सुर-नर आते, अजितनाथ पद शीश झुकाते॥27॥
कूट स्वर्णप्रभ मंगलकारी, पार्श्वप्रभु का है मनहारी॥28॥
दूर-दूर से श्रावक आते, शुद्ध भाव से महिमा गाते॥29॥
नंगे पैरों चढ़ते जाते, प्रभु के पद में ध्यान लगाते॥30॥
भाँति-भाँति की भजनावलियाँ, वीतराग भावों की कलियाँ॥31॥
पुण्यवान ही दर्शन पावें, नरक पशू गति बंध नशावें॥32॥
तीर्थ वन्दना करने जावें, कर्मों के बन्धन कट जावें॥33॥
भूले को भी राह दिखावें, दुखियों के सब दुःख मिटावें॥34॥
कभी स्वान बन कर आ जाते, डोली वाले बनकर आते॥35॥
गिरि की महिमा यह जग गाए, सूर्य चाँद महिमा दिखलाए॥36॥
सन्त मुनि अर्हन्त निराले, शिव पदवी को पाने वाले॥37॥
तुमरी धूल लगाकर माथें, भाव सहित तव गाथा गाते॥38॥
हमको मुक्ती मार्ग दिखाओ, जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ॥39॥
सेवक बनकर के हम आए, पद में सादर शीश झुकाए॥40॥

दोहा- 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
सुख-शांती पावे अतुल, बने श्री का ईश॥
महिमा शिखर सम्मेद की, गाएँ मंगलकार।
उसी तीर्थ से ही स्वयं, पावे मुक्ती द्वार॥

जाप- (1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः। (2) ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत तीर्थंकर निर्वाण भूमि सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः।

(37) चम्पापुर चालीसा (मंदार गिरी)

दोहा- नमन करें जिन सिद्ध पद, पाने शिव सोपान।
चालीसा चम्पापुरम्, का गाते हम आन॥

(चौपाई)

मध्य लोक के मध्य में गाया, जम्बूद्वीप श्रेष्ठ मन भाया॥1॥
जिसके दक्षिण में शुभकारी, भरत क्षेत्र है मंगलकारी॥2॥
मध्य में आर्य खण्ड बतलाया, जिसमें भारत देश बताया॥3॥
अंग देश जिसमें शुभ जानो, चम्पापुर नगरी पहिचानो॥4॥
राजा वसूपूज्य कहलाए, रानी विजया देवी पाए॥5॥
जिनके गृह में मंगल छाए, वासुपूज्य जिन गर्भ में आए॥6॥
सुख पूर्वक नव माह बिताए, जन्म कल्याणक देव मनाए॥7॥
फागुन वदि चौदस दिन पाए, घर-घर में तव आनन्द छाए॥8॥
स्वर्ग में घंटानाद कराए, सिंहनाद ज्योतिष गृह पाए॥9॥
भवनवासि गृह शंख बजाए, पटह शंख व्यन्तर गृह गाए॥10॥
अनहद सुन प्रभु जन्म को जाना, सात पैड चल किया प्रणामा॥11॥
ऐरावत पर चढ़कर आया, इन्द्र सर्व परिवार को लाया॥12॥
पाण्डुक शिला पेन्हवन कराया, सहस नेत्र कर दर्शन पाया॥13॥
अष्ट द्रव्य से पूजा कीन्हे, अपना जन्म सफल कर लीन्हे॥14॥
लाल रंग तन का शुभ गाया, भैंसा लक्षण पग में पाया॥15॥
लाख बहत्तर आयू गाई, सत्तर धनुष रही ऊँचाई॥16॥
राज भोग जिनको ना भाए, कुँअर काल वैराग्य जागाए॥17॥
बारह श्रेष्ठ भावना भाए, ब्रह्म ऋषि दिव से चल आए॥18॥
अतिशय प्रभु के जो गुण गाए, प्रभु जी तव वैराग्य जगाए॥19॥
चम्पापुर में प्रभु जी आए, केश लुंचकर दीक्षा पाए॥20॥

मन:पर्यय तव ज्ञान जगाए, निज का निज में ध्यान लगाए॥21॥
माघ सुदी द्वितीय शुभ पाए, प्रभु जी केवल ज्ञान जगाए॥22॥
समवशरण तब देव रचाए, दिव्य देशना प्रभू सुनाए॥23॥
कर विहार कई देश में भाई, आपने दिव्य ध्वनि सुनाई॥24॥
चल के फिर चम्पापुर आये, नर नारी सारे हर्षाए॥25॥
एक माह पहले जिन स्वामी, योग निरोध किए जगनामी॥26॥
है मंदार गिरी शुभकारी, मुक्ती पद पाए शिवकारी॥27॥
तन कपूर सम क्षण में जानो, उड़ा गगन में ऐसा मानो॥28॥
नख अरु केश शेष रह पाए, भक्ती से जो देव जलाए॥29॥
भादों सुदि चौदश, शुभकारी, हो गई जग में मंगलकारी॥30॥
अवधि ज्ञान से इन्द्र ने जाना, मोक्ष प्रयाण प्रभू का माना॥31॥
वह मंदार शिखर पर आया, कई देवों को साथ में लाया॥32॥
भक्ति भाव उसके मन आया, प्रभु का श्रेष्ठ शरीर रचाया॥33॥
अष्ट द्रव्य का थाल सजाया, पूजाकर सौभाग्य जगाया॥34॥
अग्नि कुमार देव भी आए, प्रभु के पद में ढोक लगाए॥35॥
मुकुट से तब वह अग्नि जलाए, संस्कार तन का करवाए॥36॥
इन्द्र हृदय में भक्ति जगाए, गिरि पर चरण चिन्ह खुदवाए॥37॥
गिरि पर मंदिर है शुभकारी, जिसमें चरण चिन्ह मनहारी॥38॥
छोटा मन्दिर पास में जानो, चरण युगल त्रय जिसमें मानो॥39॥
चम्पापुर नगरी शुभ गाई, पंच कल्याण हुए जहाँ भाई॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, 'विशद' भाव के साथ।
पढ़े पढ़ाए जो सुधी, बने श्री का नाथ॥
सुख शान्ती सौभाग्य वह, पावे पुण्य निधान।
वैभव पावे स्वर्ग-सा, अन्त होय निर्वाण॥

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चम्पापुर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जिनेन्द्राय नमः।

(38) पावापुर चालीसा

दोहा- पावापुर उद्यान के, महावीर भगवान।
पद्म सरोवर से प्रभू, पाए पद निर्वाण॥
पावन भूमी तीर्थ की, पावन तीरथ राज।
चालीसा गाए यहाँ, मिलकर सकल समाज॥

(चौपाई)

मध्य लोक जानो शुभकारी, जम्बूद्वीप की महिमा न्यारी॥1॥
भरत क्षेत्र जिसमें शुभ गाया,जिसमें भारत देश बताया॥2॥
प्रान्त बिहार श्रेष्ठ शुभ जानो, बिहार शरीफ स्टेशन मानो॥3॥
रहा नवादा पास में भाई, पास गुणावा है सुखदायी॥4॥
पावापुर शुभ ग्राम बताया, मिलती जहाँ पे शीतल छाया॥5॥
सुखी जहाँ की जनता सारी, जिन चरणों की है बलिहारी॥6॥
पुण्य का फल पाते हैं प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी॥7॥
पावापुर उद्यान सुहाना,पद्म सरोवर जिसमें माना॥8॥
चौबिसवें तीर्थंकर भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई॥9॥
पाँच नाम सार्थक जो पाए, वर्धमान तीर्थंकर गाए॥10॥
सन्मति नाम आपका गाया, वीरनाम भी शुभ बतलाया॥11॥
प्रभु अतिवीर कहे जिन स्वामी, महावीर मुक्ती पथगामी॥12॥
त्रिशला जिनकी माता जानो, जिनके पितु सिद्धारथ मानो॥13॥
कुण्डलपुर के राज दुलारे, अन्तिम जिनवर बने सहारे॥14॥
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, जग के भोग जिन्हे ना भाए॥15॥
तीस वर्ष में दीक्षा धारी, बने आप मुनिवर अनगारी॥16॥
तप में बारह वर्ष बिताए, निज आतम का ध्यान लगाए॥17॥
कर विहार प्रभु जी तब आए, ऋजुकूला नदि का तट पाए॥18॥

कर्म घातिया आप नशाएँ, केवल ज्ञान प्रभू प्रगटाए॥19॥
समवशरण आ देव रचाए, नत हो जयजय कार लगाए॥20॥
विपुलाचल पर स्वामी आये, दिव्य देशना आप सुनाए॥21॥
तीस वर्ष यूँ समय बिताए, कर विहार पावापुर आए॥22॥
चौदह दिन का समय बताया, योग निरोध आपने पाया॥23॥
कार्तिक कृष्ण अमावश जानो, ऊषाकाल श्रेष्ठ पहिचानो॥24॥
कर्म अघाती आप नशाए, पद निर्वाण वीर जिन पाए॥25॥
धन्य हुई वह नगरी प्यारी, जनता सुखी हुई थी सारी॥26॥
अष्टादश गणराज्य बताए, सभी नृपति उत्सव करवाए॥27॥
अग्नि कुमार देव तव आए, मुकुटों से अग्नी प्रजलाए॥28॥
नख केशों को आप जलाए, भस्म सभी जन माथ लगाए॥29॥
पद्म सरोवर में शुभ जानो, जल मंदिर मंगलमय मानो॥30॥
श्वेत वर्ण का मंदिर गाया, सेतू लाल रंग का पाया॥31॥
चरण चिन्ह जिसमें शुभ गाए, जिनवर की महिमा दर्शाए॥32॥
तट पर जिन मंदिर शुभकारी, बने हुए हैं मंगलकारी॥33॥
महावीर जिन की प्रतिमाएँ, जग को मुक्ती पथ दर्शाएँ॥34॥
दूर-दूर से यात्री जाते, जिन चरणों के दर्शन पाते॥35॥
जिनकी पद रज माथ लगाते, अपने वह सौभाग्य जगाते॥36॥
तीर्थ वन्दना करने वाले, जग में होते जीव निराले॥37॥
मन में श्रद्धा भाव जगाते, वे प्राणी यह अवसर पाते॥38॥
सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ, सुखानन्त पाके हर्षाए॥39॥
'विशद' भावना यही हमारी, पूर्ण करों तुम हे त्रिपुरारी॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति के साथ।
ऋद्धि-सिद्धि सुख सम्पदा, पा हों श्री के नाथ॥

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पावापुर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः।

(39) राजगृही चालीसा

दोहा- नव देवों के पद युगल, नमन् अनन्तों बार।
सिद्ध क्षेत्र श्री राजगृही, की हो जय जयकार॥
पंच शैलुपुर नाम से, तीर्थ रहा विख्यात।
चालीसा गाते यहाँ, धर्म की हो बरसात॥

(चौपाई)

जम्बूद्वीप के दक्षिण जानो, भरत क्षेत्र शुभकारी मानो॥1॥
जिसमें मगध देश शुभ गाया, राजगृही के निकट बताया॥2॥
पंच पहाड़ी शोभा पाए, धर्म तीर्थ अनुपम कहलाए॥3॥
महावीर स्वामी जी आए, विपुलाचल पर ज्ञान जगाए॥4॥
समवशरण तव देव बनाए, दिव्य देशना प्रभू सुनाए॥5॥
गौतम स्वामी गणधर पाए, श्रोता श्रेणिक नृपति कहाए॥6॥
मुख्य आर्यिका चन्दनबाला, जिसने शील व्रतो को पाला॥7॥
महावीर के चरण वहाँ हैं, मिलती शांती पूर्ण जहाँ है॥8॥
रत्नगिरी पर्वत शुभकारी, जिन मंदिर जिस पे मनहारी॥9॥
जिन मुनियों के चरण बताए, दर्शनीय जो अनुपम गाए॥10॥
जिन प्रतिमाएँ जहाँ पे सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें॥11॥
स्वर्णगिरी पर बिम्ब बताया, आदिनाथ का मनहर गाया॥12॥
चरण पादुका भी मनहारी, भव्यों के हैं संकटहारी॥13॥
है वैभार गिरी शुभकारी, जिनगृह जिस पर मंगलकारी॥14॥
जिसमें हैं जिनबिम्ब निराले, जग का मंगल करने वाले॥15॥
तप स्थली मुनियों की गाई, जिनने आतम सिद्धी पाई॥16॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान बताए, मुनिसुव्रत जी जहाँ से पाये॥17॥
पिता सुमित्र आपके गाए, पद्मा माँ के नन्द कहाए॥18॥
प्रतिनारायण की रजधानी, जरा संध की जानी मानी॥19॥

श्री कृष्ण ने जिसे हराया, चक्ररत्न जिसका शुभ पाया॥20॥
तेइस तीर्थंकर जहाँ वे आए, ऋषभदेव जी नहिं आ पाए॥21॥
दिव्य देशना जहाँ सुनाए, भव्य जीव सौभाग्य जगाए॥22॥
श्री सुधर्म स्वामी कहलाए, विपुलाचल से मुक्ती पाए॥23॥
श्री धनदत्त सुमंदर स्वामी, हुए मेघरथ मुक्ती गामी॥24॥
प्रीतिंकर मुनिवर कहलाए, वीर प्रभू पद दीक्षा पाए॥25॥
विद्युच्चर जो चोर कहाया, वह भी तप कर मुक्ती पाया॥26॥
पूतगंधा जिन पद में आई, मरण समाधी वह भी पाई॥27॥
शुभ भावों से मेढ़क आया, मरकर वह भी स्वर्ग सिधाया॥28॥
जन्म लिए मुनि जम्बूस्वामी, मथुरा से शिव पाए नामी॥29॥
वारिषेण श्रेणिक सुत जानो, अभय कुमार आदि कई मानो॥30॥
जिनकी तपो भूमि कहलाई, अतिशय महिमाशाली गाई॥31॥
उष्ण नीर के कुण्ड बताए, जिनसे निर्मल नीर बहाए॥32॥
विपुलाचल पर अतिशयकारी, चार जिनालय हैं मनहारी॥33॥
रत्नगिरी पर भी त्रय जानो, स्वर्ण गिरी पर हैं दो मानो॥34॥
उदय गिरी पर तीन बताए, इक वैभार गिरी पर पाए॥35॥
चौबीसी है जहाँ निराली, जन जन का मन हरने वाली॥36॥
नीचे भी दो मंदिर सोहें, जिन प्रतिमाएँ मन को मोहें॥37॥
जिनगृह जिन का दर्शन भाई, सिद्ध भूमि है पुण्य प्रदायी॥38॥
हम कब यह सौभाग्य जगाएँ, तीर्थ क्षेत्र का दर्शन पाएँ॥39॥
जीवन में संयम अपनाएँ, 'विशद' ज्ञान पा मुक्ती पाएँ॥40॥

दोहा- राजगृही जी क्षेत्र की, महिमा अपरम्पार।
भाव सहित वन्दन करें, नत हो बारम्बार॥
चालीसा जो भी पढ़े, 'विशद' भाव के साथ।
वह भी कर्म विनाश कर, बने श्री का नाथ॥

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री राजगृही सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः।

(41) देहरा तिजारा के अतिशयकारी
श्री चन्द्रप्रभु भगवान का चालीसा

दोहा- श्री जिनेन्द्र को नमन कर, जिनवाणी को ध्याय।
वीतराग निर्ग्रन्थ गुरु, के चरणों सिरनाय॥
देहरे के जिनचन्द्र का, चालीसा शुभकार।
'विशद' भाव से गा रहे, पाने सौख्य अपार॥

(चौपाई)

जय श्री चन्द्र प्रभू जिन स्वामी, देहरे वाले शिवपथ गामी॥1॥
शांत छवी मूरत अविकारी, भेष दिगम्बर मुद्रा प्यारी॥2॥
जिनवर नाशा दृष्टीधारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥3॥
देवों के जो देव कहाते, सद्भक्तों के कष्ट मिटाते॥4॥
वैजयन्त से चयकर आए, गर्भकल्याण श्री जिन पाए॥5॥
चैत कृष्ण पाँचे शुभकारी, देव रत्न वर्षाए भारी॥6॥
चन्द्रपुरी नगरी कहलाए, महासेन जी राज्य चलाए॥7॥
रही सुलक्षणा जिनकी रानी, जन्मे चन्द्र प्रभू जिन स्वामी॥8॥
पौष वदी ग्यारस कहलाई, सारी जगती हर्ष मनाई॥9॥
जग हितकारी राज्य चलाया, किन्तू जग वैभव ना भाया॥10॥
पौष कृष्ण एकादशि पाए, प्रभु मन में वैराग्य जगाए॥11॥
राग त्याग मुनि दीक्षा धारी, ध्यान किए होके अविकारी॥12॥
फाल्गुण वदी सप्तमी पाए, प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए॥13॥
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, मुक्ती पाए अन्तर्यामी॥14॥
ललित कूट पावन कहलाए, मोक्ष जहाँ से प्रभु जी पाए॥15॥
समंतभद्र मुनि तुमको ध्याए, पिण्डी फटी दर्श तुम पाए॥16॥
अष्टम तीर्थंकर कहलाते, सोम सुग्रह से शांति दिलाते॥17॥
चमत्कार तुम कई दिखलाए, मन से लोग आपको ध्याये॥18॥
राजस्थान प्रान्त है प्यारा, अलवर जिला में नगर तिजारा॥19॥

उत्तर दिश में देहरा जानो, प्रगटे जहाँ चन्द्र प्रभु मानो॥20॥
सावन सुदि दशमी शुभकारी, तिथि हो गई ये मंगलकारी॥21॥
चिन्ह चन्द्रमा का शुभ पाए, नर-नारी जयकार लगाए॥22॥
धवल मूर्ति सोहे मनहारी, जो है पावन अतिशयकारी॥23॥
अतिशय तुमने कई दिखाए, जनता दौड़ी-दौड़ी आए॥24॥
कोई चरणों पूज रचाते, कोई पावन आरति गाते॥25॥
कोई विशद विधान रचाते, कोई शुभ चालीसा गाते॥26॥
फाल्गुन सुदी सप्तमी जानो, भारी मेला जुड़ता मानो॥27॥
शशिधर पावन आप कहाए, ज्ञान प्रकाश आप फैलाए॥28॥
कीर्ति आपकी फैली भारी, गुण गाती है दुनिया सारी॥29॥
भूत-प्रेत भी जिन्हें सतावें, उनसे प्राणी मुक्ती पावें॥30॥
दुखिया दर पे जो भी आते, उनके सब संकट कट जाते॥31॥
अन्धा दर से ज्योती पाए, गूंगे का गूंगापन जाए॥32॥
पुत्रहीन दर पे जो आए, पुत्र सौख्य वह प्राणी पाए॥33॥
ज्ञानहीन सद्ज्ञान जगाए, बुद्धिहीन सद् बुद्धी पाए॥34॥
रोगी अपना रोग नशाए, परकृत मंत्र भयावह जाए॥35॥
लाखों आते यहाँ सवाली, जाएँ नहीं यहाँ से खाली॥36॥
चरणों की रज है सुखकारी, जीवों के सब संकटहारी॥37॥
गंधोदक जो माथ लगावें, अतिशय शांती प्राणी पावें॥38॥
अखण्ड ज्योति का घृत जो लगाते, उनके सब संकट कट जाते॥39॥
'विशद' आपको जो भी ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते॥40॥

दोहा- चालीसा चालीसा दिन, पढ़के चालिस बार।
पढ़ो-पढ़ाओ भक्ति से, पाओ शांति अपार॥
रोग-शोक दुख दूर हों, और पाप का नाश।
धन-सम्पत्ति का लाभ हो, हो शिवपुर में वास॥

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

(42) श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- पार्श्वनाथ अहिच्छत्र के, अतिशय युक्त महान।
भक्त सभी मिलकर यहाँ, करते हैं गुणगान॥
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
यही भावना है 'विशद', बढ़ें मोक्ष की ओर॥

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ जिन स्वामी, आप हुए मुक्ती पथगामी॥1॥
तुमने तीर्थंकर पद पाया, इस जग को सन्मार्ग दिखाया॥2॥
नगर बनारस है शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी॥3॥
राजा अश्वसेन की रानी, वामा देवी ज्ञानी ध्यानी॥4॥
जिनके गृह में जन्मे स्वामी, पार्श्वनाथ जिन शिवपथगामी॥5॥
देव तभी ऐरावत लाए, जिस पर प्रभु जी को बैठाए॥6॥
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराए, खुश होके जयकार लगाए॥7॥
करने सैर आप वन आए, तपसी को तप करता पाए॥8॥
पञ्चाग्नी तप जिसने धारा, पारस ने उसको ललकारा॥9॥
तपसी क्यों यह आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते॥10॥
नाग युगल जलते हैं काले, मानो वह हैं मरने वाले॥11॥
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ा, जलने वाला लक्कड़ फाड़ा॥12॥
सर्प युगल तव उसमें पाया, तपसी देख बहुत घबड़ाया॥13॥
उनको प्रभु जी मंत्र सुनाये, नाग युगल मृत्यू को पाए॥14॥
देवगति में जीवन पाए, धरणेन्द्र पद्मावति कहलाए॥15॥
मरण हुआ तपसी का भाई, देवगति तब उसने पाई॥16॥
संवर नाम देव ने पाया, मिथ्यावादी जगत् भ्रमाया॥17॥
हुए बाल ब्रह्मचारी स्वामी, संयम धारे अन्तर्यामी॥18॥
कर विहार अहिच्छत्र में आए, वहाँ प्रभु जी ध्यान लगाए॥19॥
संवर देव वहाँ पर आया, उसने अपना वैर भँजाया॥20॥

ओले शोले पत्थर पानी, बरसाए भारी अभिमानी॥21॥
फिर भी स्थिर ध्यान लगाए, प्रभु जी तन को नहीं हिलाए॥22॥
धरणेन्द्र का आसन कम्पाया, पद्मावति को साथ में लाया॥23॥
पद्मावति ने फण फैलाया, प्रभु जी को उस पर बैठाया॥24॥
धरणेन्द्र ने फण को फैलाया, प्रभु के शिर पर छत्र लगाया॥25॥
हार मान संवर तव आया, प्रभु के पद में शीश झुकाया॥26॥
पार्श्व प्रभु निज ध्यान लगाए, पावन केवलज्ञान जगाए॥27॥
यही तीर्थ अहिच्छत्र कहाए, पात्र केसरी यहाँ पे आए॥28॥
शिष्य पाँच सौ जिसके जानो, ज्ञानी मानी ब्राह्मण मानो॥29॥
पार्श्व प्रभू के दर्शन पाए, जैन धर्म वे सब अपनाए॥30॥
अहिच्छत्र के राजा गाए, वसूपाल मंदिर बनवाए॥31॥
प्रतिमा पर पालिस करवाए, किन्तु पालिस ना हो पाए॥32॥
मिस्त्री को जब मांस छुड़ाया, उसने अपना नियम निभाया॥33॥
पालिस श्रेष्ठ चढ़ाया भाई, मूर्ती तव सुन्दर चमकाई॥34॥
गदर सत्तावन समय बताया, इक माली मूर्ति को लाया॥35॥
कुएँ में उसने मूर्ति छुपाई, अतिशय हुआ वहाँ पर भाई॥36॥
उस जल को जो पिए नहाएँ, बीमारी को दूर भगाएँ॥37॥
अहिच्छत्र प्रभु को जो ध्याये, वह अपना सौभाग्य जगाये॥38॥
सुख शांती धन माल बढ़ावे, सम्पत्ति नित बढ़ती जावे॥39॥
'विशद' यहाँ चालीसा गाएँ, जिनपद में हम शीश झुकाएँ॥40॥

सोरठा- चालीसा चालीस, पढ़े भाव के साथ जो।
बने श्री का ईश, पार्श्व प्रभु के सामने॥
पावे धन सम्मान, दीन दरिद्री भी विशद।
योग्य होय सन्तान, भाग्यवान वह भी बने॥

जाप्य : जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(43) श्री बड़ागाँव पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच का, जपूँ निरन्तर नाम।
बड़ागाँव में पार्श्व जिन, के पद करूँ प्रणाम॥

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ शिवकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी॥1॥
तुम हो तीर्थंकर पदधारी, तीन लोक में मंगलकारी॥2॥
काशी नगरी है मनहारी, सुखी यहाँ की जनता सारी॥3॥
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामादेवी गाए॥4॥
जिनके गृह में जन्मे स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी॥5॥
देवों ने तब रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया॥6॥
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई॥7॥
पञ्चाग्नी तप करने वाला, अज्ञानी था भोला-भाला॥8॥
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते॥9॥
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे॥10॥
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी॥11॥
सर्प देख तापसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया॥12॥
नाग युगल मृत्यु को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए॥13॥
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम देव ने पाया॥14॥
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए॥15॥
इक दिन कमठ वहाँ पर आया, उसके मन में वैर समाया॥16॥
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले॥17॥
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी॥18॥
धरणेन्द्र पद्मावती तब आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए॥19॥
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया॥20॥

धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई॥21॥
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र बनाया॥22॥
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए॥23॥
उत्तर प्रदेश बागपत भाई, बड़ागाँव जिसमें सुखदायी॥24॥
टीला जहाँ रहा मनहारी, महिमा जिसकी अतिशयकारी॥25॥
लक्ष्मण सेठ यहाँ के वासी, जिनपे पड़ी विपत्ती खासी॥26॥
सेठ को राजा ने बुलवाया, मृत्यु दण्ड का हुक्म सुनाया॥27॥
तब जल्लाद सामने आये, तोप में गोला जो भरवाए॥28॥
पार्श्व प्रभु को सेठ ने ध्याया, चमत्कार अतिशय दिखलाया॥29॥
ठण्डा हुआ तोप का गोला, तब प्रभु का जयकारा बोला॥30॥
ऐलक अनन्त कीर्ति जी आए, प्रतिमा की यह बात चलाए॥31॥
लोग सभी टीला खुदवाए, पार्श्व प्रभू के दर्शन पाए॥32॥
श्वेत वर्ण की प्रतिमा प्यारी, दिखती है अतिशय मनहारी॥33॥
सन् उन्नीस सौ बाइस भाई, फाल्गुन शुक्ल अष्टमी गाई॥34॥
उसी जगह पर कुआँ खुदाया, पानी अमृत जैसा पाया॥35॥
इस जल की है महिमा न्यारी, रोग-शोक की नाशनहारी॥36॥
एक भक्त ने जल में नहाया, मुक्ती कुष्ट रोग से पाया॥37॥
गंधोदक जो माथ लगाए, मन में अतिशय शांती पाए॥38॥
भक्ती से जो ढोक लगाते, वे अपने सौभाग्य जगाते॥39॥
आचार्य विशदसागर जी आए, चालीसा यह श्रेष्ठ बनाए॥40॥

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
बड़ागाँव के पार्श्व का, पावें सौख्य अपार॥
सुख शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिवपद भोग॥

जाप्य : ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र बड़ा गाँव स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(45) समवशरण चालीसा

दोहा- जिनवर के पद नमन कर, जिनवाणी को ध्याय।
आचार्योपाध्याय साधु पद, नत हो शीश झुकाय॥
तीर्थंकर वृषभेष का, समवशरण अभिराम।
चालीसा गाते यहाँ, पाने हम शिव धाम॥

(चौपाई)

भव्य भावना सोलह भावें, वे तीर्थंकर पदवी पावें॥1॥
पंच कल्याणक पाते स्वामी, होते हैं जिन अन्तर्यामी॥2॥
कर्म घातिया चार नशावें, फिर वे केवल ज्ञान जगावें॥3॥
इन्द्र शरण में चलकर आवें, निज परिवार साथ में लावें॥4॥
धन कुबेर को पास बुलावें, उसको यह आदेश सुनावें॥5॥
पावन समवशरण बनवाओ, जिनप्रभु को जिसमें बैठाओ॥6॥
धनद इन्द्र की आज्ञा पावे,समवशरण वैभव प्रगटावे॥7॥
जिन भू से ऊँचे उठ जाते, बीस हजार हाथ तक जाते॥8॥
बीस हजार सीढ़ियाँ जानों, जो मुहूर्त में चढ़ते मानों॥9॥
बाल वृद्ध रोगी चढ़ जाते, लूले लगड़े दर्शन पाते॥10॥
प्रथम कोट मणियों युत गाया, धूलिशाल शुभ नाम कहाया॥11॥
चैत्य भूमि पहली शुभ जानो, जिन दर्शन हो जिसमें मानो॥12॥
आगे श्रेष्ठ वेदिका भाई, दूजी भूमि खातिका गाई॥13॥
फूल खिलें जिसमें शुभकारी, जल पूरित सोहे मनहारी॥14॥
लता भूमि वेदीयुत सोहे, आगे परकोटा मन मोहे॥15॥
चौथी उपवन भू कहलाई, जिसमें चार कहे वन भाई॥16॥
चम्पक आम्र असोक बताए, सप्तच्छद भी शोभा पाए॥17॥
चैत्य वृक्ष प्रति वन में सोहें, जिनबिम्बों युत मन को मोहें॥18॥
ध्वज भूमी पंचम कहलाई, लघू महाध्वज युत शुभ गाई॥19॥

तीजा कोट रजतमय जानो, कल्पतरु भू आगे मानो॥20॥
कल्पवृक्ष दश जिसमें गाए, चउ सिद्धार्थ वृक्ष बतलाए॥21॥
जिनमें सिद्धों की प्रतिमाएँ, पूर्ण करें सारी इच्छाएँ॥22॥
भवन भूमि आगे फिर आए, जिसमें स्तूप नव नव गाए॥23॥
अर्हत् सिद्धों की प्रतिमाएँ, अतिशय कारी शोभा पाएँ॥24॥
आगे चौथा कोट बताया, जो स्फटिक मणी का गाया॥25॥
अष्टम श्री मण्डप भू गाई, बारह सभा युक्त बतलाई॥26॥
प्रथम सभा में मुनिवर भाई, कल्पवासि सुरियाँ फिर पाई॥27॥
आर्यिका श्राविकाएँ फिर जानों, ज्योतिष सुरियाँ आगे मानों॥28॥
व्यन्तर देवी आगे गाईं, भवनों की देवी फिर पाईं॥29॥
भवन वासि फिर देव बताए, व्यन्तर देव अष्टम में गाए॥30॥
ज्योतिष देव नवम में जानो, वैमानिक दशवें में मानो॥31॥
आगे मानव चक्री गाए, सभा ग्यारहवीं में बतलाए॥32॥
सभा बारहवीं में शुभ जानो, सिंहादिक पशु रहते मानो॥33॥
श्रोता संख्यातीत बताए, दिव्य देशना प्रभु की पाए॥34॥
गंधकुटी सोहे मनहारी, त्रय कटनी युत मंगलकारी॥35॥
मंगल अष्ट द्रव्य शुभ जानो, पहली कटनी में शुभ मानो॥36॥
दूजी पर अठ महाध्वजाएँ, प्रभु की जो कीर्ति फैलाएँ॥37॥
तीजी कटनी पर सिंहासन, कमल कर्णिका पर है आसन॥38॥
उससे अधर प्रभू जी गाए, चतुर्मुखी जिन ब्रह्म कहाए॥39॥
प्रभु की महिमा जो नर गावे, वे अपने सौभाग्य जगावें॥40॥

दोहा- दिन में चालिस बार यह, चालीसा चालीस।
पढ़े भाव से जो विशद, बने श्री का ईष॥
'विशद' भावना है यही, हो जिनवर का दर्श
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़ें, रहे हृदय में हर्ष॥

जाप्य - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं समवशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः।

(46) रत्नत्रय चालीसा

दोहा- रत्नत्रय शिव मार्ग का, पावन है सोपान।
चालीसा जिसका यहाँ, पढ़ते विशद महान॥

(चौपाई)

सम्यक दर्शन रत्न निराला, जो श्रद्धान कराने वाला॥1॥
जिसकी महिमा जग से न्यारी, पावन है जो मंगलकारी॥2॥
मोक्ष मार्ग में बने सहारा, योगत्रय से नमन हमारा॥3॥
सम्यक दर्शन जब हो जाए, भव का बीज स्वयं खो जाए॥4॥
मोक्ष महल की पहली सीढ़ी, पाए हम पीढ़ी दर पीढ़ी॥5॥
सम्यक दर्शन जो पा जाए, दर्श मोह उसका खो जाए॥6॥
तत्त्वों का दिग्दर्श कराए, पावन भेद ज्ञान करवाए॥7॥
अष्ट अंगयुत जो बतलाया, दोष पचीसों रहित कहाया॥8॥
नि:शंकित नि:कांक्षाकारी, निर्विचिकित्स गुण सम्यकधारी॥9॥
उपगूहन स्थितिकरण निराला, वत्सल अंग प्रभावना वाला॥10॥
इनके उल्टे दोष कहाए, शंकाकांक्षादिक वसु गाए॥11॥
ज्ञानरूप ख्याती मय जानों, कुल जाती मद त्यागें मानों॥12॥
बल तप ऋद्धी मद परिहारी, होते पावन सम्यक् धारी॥13॥
लोक मूढ़ता देव कहाए, गुरू मूढ़ता ना रह पाए॥14॥
षट् अनायतन तजने वाले, निज गुण के होते रखवाले॥15॥
पंच लब्धियाँ पावन पावें, वे सम्यक् श्रद्धान जगावें॥16॥
सम्यक् ज्ञान रत्न मनहारी, जो है जन-जन का उपकारी॥17॥
आगम तीजा नेत्र निराला, पावन आठों अंगों वाला॥18॥
शब्दाचार प्रथम कहलाए, अर्थाचार अर्थ बतलाए॥19॥
उभयाचार जगत उपकारी, कालाचार काल शुभकारी॥20॥
विनयाचार विनय गुणधारी, उपासकाध्यानांग रहा मनहारी॥21॥

अनिह्वाचार अंग शुभ जानो, बहुमानांग सुगुण शुभ मानो॥22॥
द्वादशांग जिनवाणी भाई, जग जन की हितकारी गाई॥23॥
ॐकारमय शुभ जिनवाणी, भवि जीवों की है कल्याणी॥24॥
दिव्य देशना प्रभू खिराए, गणधर झेलें चित्त लगाए॥25॥
लेखन जैनाचार्य कराए, जो जिनवाणी माँ कहलाए॥26॥
जो है पापों का परिहारी, वह सम्यक् चारित मनहारी॥27॥
पंच महाव्रत पावन गाए, पंच समितियाँ भी कहलाए॥28॥
तीन गुप्तियाँ भी शुभ जानो, तेरह विध चारित ये मानो॥29॥
जो हैं त्रस हिंसा के त्यागी, देशव्रती होते बड़भागी॥30॥
मुनि सब हिंसा के परिहारी, विषयों को तजते अनगारी॥31॥
निज आतम का ध्यान लगाते, निजानन्द सुख वे मुनि पाते॥32॥
सामायिक संयम के धारी, मुनिवर होते हैं अविकारी॥33॥
छेदोपस्थापना संयम जानो, व्रत शुद्धी जिससे हो मानो॥34॥
है परिहार विशुद्धी भाई, जिसकी है अतिशय प्रभुताई॥35॥
मुनिवर समवशरण में जाते, आठ वर्ष तक ज्ञान जगाते॥36॥
फिर हो ये संयम शुभकारी, हिंसा का जो है परिहारी॥37॥
सूक्ष्म कषाय जहाँ रह जावे, सूक्ष्म साम्पराय जो कहलावे॥38॥
उपशम क्षायिक गुण प्रगटाएँ, अतिशय केवल ज्ञान जगाएँ॥39॥
होते जो रत्नत्रय धारी, बनें 'विशद' शिव के अधिकारी॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव के साथ।
रत्नत्रय निधि प्राप्त कर, बनें श्री के नाथ॥
सुख शान्ती सौभाग्य का, हो जीवन में वास।
इच्छित फल पाएँ 'विशद', होवे पूरी आस॥

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः।

(47) श्रीराम चालीसा

दोहा- जिन सिद्धों को नमन कर, परमेष्ठी को ध्याय।
चालीसा श्री राम का, पढ़ें भक्त सुखदाय॥

(चौपाई)

जय बलभद्र राम कहलाए, जिनकी महिमा यह जग गाए॥1॥
राजा दशरथ के सुत गाए, माता कौशल्या कहलाए॥2॥
जन्म अयोध्या नगरी पाए, नर नारी सारे हर्षाए॥3॥
लक्ष्मण भरत शत्रुघन भाई, जिनकी महिमा जग ने गाई॥4॥
बात स्वयंवर की जब आई, जिसकी फैली जग प्रभुताई॥5॥
वज्रावर्त धनुष को पाए, प्रत्यञ्चा जो शीघ्र चढ़ाए॥6॥
वह सीता सति को परणाए, इस युग का वह वीर कहाए॥7॥
राजा कई वहाँ पर आए, किन्तू धनुष उठा ना पाए॥8॥
राम धनुष को आन उठाए, प्रत्यञ्चा वह शीघ्र चढ़ाए॥9॥
सीता वरमाला ले आई, हुआ स्वयंवर राम का भाई॥10॥
राम हृदय में तब हर्षाए, सीता को ले घर को आए॥11॥
नर-नारी तब नाचे गाए, मन में भारी हर्ष मनाए॥12॥
एक बार की घटना गाई, दशरथ खुश थे मन में भाई॥13॥
कैकई को वरदान जो दीन्हें, उसके मन को खुश कर दीन्हें॥14॥
राज तिलक का अवसर आया, राम को तव वनवास दिलाया॥15॥
दशरथ मन में तव घबड़ाए, किन्तू वचन टाल ना पाए॥16॥
वचन पिता का राम निभाए, साथ में भाई लक्ष्मण आए॥17॥
साथ में चल दी सीता रानी, उसने वन जाने की ठानी॥18॥
भरत राम की आज्ञा पाए, हो विरक्त जो राज्य चलाये॥19॥
राम ने वंशगिरी पर जानो, जिन मंदिर बनवाया मानो॥20॥
चलकर दण्डक वन में आए, मुनिवर को आहार कराए॥21॥

रावण की खोटी मति आई, सीता हरण किया तब भाई॥22॥
व्याकुल हुए राम तब मन में, फिरे खोजते सारे वन में॥23॥
घायल गिद्धराज को पाया, राम ने उसको व्रत दिलवाया॥24॥
राम की सेना लंका आई, युद्ध हुआ फिर वहाँ पे भाई॥25॥
रावण ने तब चक्र चलाया, लक्ष्मण ने तब उसको पाया॥26॥
फिर लक्ष्मण ने चक्र चलाया, रावण को तब मार गिराया॥27॥
सीता को पाकर हर्षाए, नगर अयोध्या वापिस आये॥28॥
लोकापवाद नगर में आया, सीता को वन में छुड़वाया॥29॥
वज्रजंघ सीता को पाया, पुण्डरीकपुर लेकर आया॥30॥
लव कुश जन्म वहाँ पर पाए, वज्र जंघ शिक्षा दिलवाए॥31॥
जिनने राम से युद्ध कराया, पुत्र समागम राम ने पाया॥32॥
सीता को फिर वापस पाए, अग्नि परीक्षा तब करवाए॥33॥
कमल बना अग्नि से भाई, सीता श्रेष्ठ सती कहलाई॥34॥
पृथ्वीमती आर्यिका गाई, सीता जिनसे दीक्षा पाई॥35॥
मरण समाधी जिनने पाया, अच्युत स्वर्ग जीव उपजाया॥36॥
कुछ वर्षों तक राज्य चलाए, रामचन्द्र फिर दीक्षा पाए॥37॥
कोटि शिला पर ध्यान लगाए, भारी कर्म निर्जरा पाए॥38॥
तुंगीगिर पर पहुँचे स्वामी, हुए आप मुक्ती पथ गामी॥39॥
'विशद' भावना यही हमारी, शिवपद पाएँ हे त्रिपुरारी॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भक्ति के साथ।
इस भाव के सुख प्राप्त कर, बने श्री का नाथ॥
रोग-शोक आदिक मिटे, पावे ज्ञान निधान।
कर्म नाश कर अन्त में, प्राप्त करे निर्वाण॥

जाप्य- ॐ ह्रीं तुंगीगिर सिद्ध क्षेत्रस्य मुक्ती प्राप्त श्रीराम बलभद्राय नमः।

(48) हनुमान चालीसा

दोहो– नव देवों को नमन कर, जिनवाणी उर धार।
चालीसा हनुमान का, गाते योग सम्हार॥

(चौपाई)

जय हनुमान ज्ञान के धारी, भक्त राम के हे त्रिपुरारी॥1॥
पवनञ्जय के राज दुलारे, सती अञ्जना के तुम प्यारे॥2॥
गिरि विजयार्थ का दक्षिण गाया, शुभादित्य पुर नगर बताया॥3॥
नृप प्रहलाद राज कहलाए, जिन सुत पवनञ्जय शुभ पाए॥4॥
सती अञ्जना जिनकी रानी, धर्म परायण जानी मानी॥5॥
कर्म उदय में जिसका आया, पति वियोग जिस कारण पाया॥6॥
बाइस वर्ष का समय बिताया, पुण्योदय फिर उसको आया॥7॥
युद्ध हेतु पवनञ्जय आये, मान सरोवर का तट पाए॥8॥
चकवी वहाँ तड़पती पाई, वियोग हुआ चकवा का भाई॥9॥
तब पत्नी की याद सताई, मित्र प्रहस्त को बात बताई॥10॥
लौट के पवनञ्जय गृह आए, द्वार अञ्जना के खुलवाए॥11॥
देख अञ्जना तब हर्षाई, मन में फूली नहीं समाई॥12॥
पवनञ्जय संग रात बिताई, जाने लगे पवनञ्जय भाई॥13॥
मन में तब रानी घबड़ाई, उसने पति से बात सुनाई॥14॥
माता पिता से मिलकर जाओ, मिलने का सब हाल बताओ॥15॥
उसके मन संकोच समाया, मुदरी देकर धैर्य बँधाया॥16॥
गर्भ चिह्न रानी के आए, घर से सास-ससुर निकलाए॥17॥
पिता के गृह पर चलकर आई, पिता निकाले घर से भाई॥18॥
सखी बसन्तमाला कहलाई, वन में जिसका साथ निभाई॥19॥
जन्म गुफा में जिनने पाया, पशुओं ने भी हर्ष मनाया॥20॥

हनुरुह द्वीप का स्वामी आया, प्रतीसूर्य राजा कहलाया॥21॥
वानर वंशी आप कहाए, हनुमान शुभ नाम जो पाए॥22॥
रावण दुष्ट हुआ अभिमानी, सीता हरण की जिसने ठानी॥23॥
लंका सीता को पहुँचाया, पंचवटी में जिन्हे रूकाया॥24॥
गये खोजने तब रघुराई, किन्तू सीता ना वह पाई॥25॥
सेना ले हनुमान सिधाए, योद्धा सब लंका में आए॥26॥
सीता को तव खोज निकाले, सीता की तब स्वयं हवाले॥27॥
नगर. कर्ण कुण्डल में भाई, हनूमान ठहरे सुखदायी॥28॥
नष्ट भ्रष्ट लंका कर दीन्हें, रावण से वह बदला लीन्हें॥29॥
सीता को ले वापिस आए, परिजन सारे हर्ष मनाए॥30॥
एक बार हनुमत गुणधारी, परिजन साथ में लेकर भारी॥31॥
मेरु चैत्य वन्दन को आए, निज परिवार साथ में लाए॥32॥
चर्चा धर्म की करते भाई, धर्म रहा मुक्ती पददायी॥33॥
तारा दिखा टूटते नभ में, तव वैराग्य जगाए मन में॥34॥
यह संसार असार बताया, हनूमान के मन में आया॥35॥
धर्म रत्न योगी तब पाए, उनसे दीक्षा को अपनाए॥36॥
साढ़े सात सौ विद्याधारी, साथ में जिनने दीक्षाधारी॥37॥
तपकर अपने कर्म नशाए, अनुपम केवल ज्ञान जगाए॥38॥
तुंगीगिरि से मुक्ती पाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए॥39॥
जिनको भाव सहित जो ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते॥40॥

दोहा– राम भक्त कहलाए जो, संयम धर अनगार।
जिनकी अर्चा से 'विशद', पाए भव से पार॥
सुख-शान्ती सौभाग्य शुभ, पाएँ सर्व महान्।
इस भव के सुख प्राप्त कर, मिले शीघ्र निर्वाण॥

जाप्य– ॐ ह्रीं तुंगीगिरि तीर्थस्थ मोक्षप्राप्त श्री हनुमान जिनाय नमः।

(49) सोलहकारण चालीसा

दोहा- अर्हत् सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय मुनिराज।
चौबीसों जिनराज पद, वन्दन करते आज॥
सोलह कारण पर्व का, करते हम गुणगान।
तीर्थंकर पद का विशद, चालीसा सोपान॥

(चौपाई)

भव्य भावनाएँ शुभकारी, सोलह कारण मंगलकारी॥1॥
भव्य जीव जो जग में भाते, वे तीर्थंकर पदवी पाते॥2॥
दर्श विशुद्धी प्रथम कहाई, जो अति आवश्यक बतलाई॥3॥
देव-शास्त्र-गुरुवर को पाए, उनमें जो श्रद्धान् जगाए॥4॥
दर्शन के सब दोष नशाए, दर्श विशुद्धी यह कहलाए॥5॥
भेद विनय के चार बताए, दर्श ज्ञान-चारित्र कहाए॥6॥
अरु उपचार भेद शुभकारी, पाय विनय सम्पन्नता धारी॥7॥
शीलव्रतों को पाले प्राणी, अतीचार बिन है वह ज्ञानी॥8॥
अनतिचार व्रत शील कहाए, भव्य भावना प्राणी भाए॥9॥
ज्ञान में जो उपयोग जगाये, नित्य ज्ञान में चित्त लगाये॥10॥
वे अभीक्ष्ण नर ज्ञानोपयोगी, होते हैं शिवपद के भोगी॥11॥
जो संसार देह को भाई, भोगों को माने दुखदाई॥12॥
चिन्तन जीव करें अविकारी, वे संवेग भावना धारी॥13॥
दश विध बाह्य परिग्रह गाया, चौदह अन्तरंग बतलाया॥14॥
त्याग भाव मन में उपजाए, शक्तीतः जो त्याग कहाए॥15॥
इच्छा रोध सुतप कहलाए, जिसके बारह भेद बताए॥16॥
तप से कर्म निर्जरा गाई, शक्तीतस्तप करना भाई॥17॥
साधु समाधी धारें ज्ञानी, जो है जन-जन की कल्याणी॥18॥
मन में समता भाव जगावें, वे नर साधु-समाधी पावें॥19॥
साधु साधना करने वाले, सारे जग में रहे निराले॥20॥

होय साधना में बाधाएँ, श्रद्धानी जो दूर हटाएँ॥21॥
वैय्यावृत्ती जो कहलाए, विशद भावना मन में आए॥22॥
पूज्य पुरुष के गुण अनुरागी, भक्ती करते हैं बड़भागी॥23॥
भाव सहित अर्हत् गुण गाए, जो अर्हत् भक्ती कहलाए॥24॥
हैं निर्ग्रन्थ भेष के धारी, होते हैं जो पञ्चाचारी॥25॥
भक्ती में जो चित्त लगावे, वह आचार्य भक्ति कहलावे॥26॥
उपाध्याय ज्ञानी अविकारी, होते अंग पूर्व के धारी॥27॥
जिनकी भक्ती मंगलकारी, बहुश्रुत भक्ती है मनहारी॥28॥
द्वादशांग जिनवाणी गाई, चउ अनुयोगों रूप कहाई॥29॥
जिसकी भक्ती है शिवदायी, प्रवचन भक्ती जो कहलाई॥30॥
षट् आवश्यक कर्त्तव्य बताए, पालन में उपयोग लगाए॥31॥
कहलाए आवश्यकाऽपरिहारी, शिवपद पाए हो अनगारी॥32॥
जैन धर्म की महिमा भाई, भारी फैलावे अतिशायी॥33॥
मार्ग प्रभावना जो कहलाए, शिवपद गामी जिसको पाए॥34॥
जग जीवों में प्रेम बढ़ावे, शत्रू को भी मित्र बनाए॥35॥
होवे प्रवचन वत्सल धारी, बने मोक्ष का वह अधिकारी॥36॥
सोलह कारण जो यह भावें, वे तीर्थंकर पदवी पावें॥37॥
अनुपम केवलज्ञान जगावें, अनन्त चतुष्टय वे प्रगटावें॥38॥
ईति भीति हिंसा के नाशी, होते लोकालोक प्रकाशी॥39॥
'विशद' भावना मन में भाएँ, तीर्थंकर की पदवी पाएँ॥40॥

दोहा- चालीसा जो भी पढ़े, विनय भाव के साथ।
सुख-शांती सौभाग्य पा, बने श्री का नाथ॥
रोग-शोक दुख दूर हों, होवें पाप विनाश।
प्राणी हों सौभाग्य मय, पावें शिवपुर वास॥

जाप्य-ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप साधु-समाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्ग प्रभावना, प्रवचन वात्सल्य, इति षोडश कारणेभ्यो: नमः।

(50) दशलक्षण चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, करते नमन त्रिकाल।
चौबीसों जिनराज पद, है मेरा नत भाल॥
चालीसा दश धर्म का, गाते मंगलकार।
जीवन मंगलमय बने, हो आतम उद्धार॥

चौपाई

दशलक्षण शुभ धर्म कहाए, जीवों में सौहार्द जगाए॥1॥
सुर नर गणधर महिमा गावें, जिसको अपने हृदय सजावें॥2॥
पर्वराज पावन कहलाए, जन-जन के मन को जो भाए॥3॥
साल में तीन बार जो आए, चैत माघ भादव को पाए॥4॥
भाद्र मास में आने वाला, दशलक्षण कुछ दिखे निराला॥5॥
इसमें सब उत्साह जगाते, श्री जिनवर की महिमा गाते॥6॥
कोई हो एकाशनधारी, कोई होते अनशनकारी॥7॥
न्हवन करें जिनवर का भाई, पूजा करते हैं अतिशायी॥8॥
कोई नित्य विधान रचावें, मन्त्र जाप कर पुण्य कमावें॥9॥
सब आरम्भ छोड़ने वाले, कोई होते भक्त निराले॥10॥
कोई तीर्थों पर आ जाते, निस्पृह हो जिनवर को ध्याते॥11॥
राग-द्वेष पापों के त्यागी, संगारम्भ तजे बड़भागी॥12॥
मुनिवर हैं दशलक्षण धारी, निस्पृह होते हैं अनगारी॥13॥
यथाशक्ति श्रावक व्रत धारें, वे भी अपने भाग्य संवारे॥14॥
क्षमा नीर क्रोधाग्नि बुझावे, मन में समता भाव जगावे॥15॥
क्षमा भाव जिसके उर आवे, उसका क्रोध शांत हो जावे॥16॥
मार्दव मान शिला को तोड़े, विनय भाव से नाता जोड़े॥17॥
मृदू भाव मार्दव से आवे, मान कषाय नहीं रह पावे॥18॥
माया ठगनी को हे भाई, है कुठार आर्जव सुखदायी॥19॥

मन में 'विशद' सरलता आए, आर्जव धर्म श्रेष्ठ कहलाए॥20॥
शौच धर्म जिसके आ जाए, लोभ रूप ग्रह ना रह पाए॥21॥
रहा लोभ का जो परिहारी, होवे शौच धर्म का धारी॥22॥
मन-वच-काय एक हो जावे, सत्य धर्म जिसके उर आवे॥23॥
होवे सत्य महाव्रत धारी, सत्य धर्म पावे अविकारी॥24॥
त्रस स्थावर हिंसा त्यागी, इन्द्रिय मन रोके बड़भागी॥25॥
मुनिवर उत्तम संयम पावें, अपने सारे कर्म नशावें॥26॥
तप अग्नी में कर्म जलावें, निज आतम को शुद्ध बनावें॥27॥
तप से कर्म निर्जरा होवे, कर्म कालिमा को जो खोवे॥28॥
त्याग धर्म धारी बड़भागी, होते सर्व परिग्रह त्यागी॥29॥
जिसके त्याग धर्म आ जावे, वह अपने निज गुण प्रगटावे॥30॥
जिसके राग नहीं रह पावे, वह आकिन्चन धर्म जगावे॥31॥
आकिञ्चन है धर्म निराला, निज स्वरूप प्रगटाने वाला॥32॥
बाह्य अभ्यन्तर से अविकारी, होवे परम ब्रह्मचर्य धारी॥33॥
ब्रह्मचर्य जो धर्म जगाते, निज आतम में वे रम जाते॥34॥
दशलक्षण यह धर्म बताए, इनको जो प्राणी अपनाए॥35॥
सुख-शांती सौभाग्य जगाए, रोग-शोक से मुक्ती पाए॥36॥
परकृत पीड़ा नहीं सताए, भूत-प्रेत की बाधा जाए॥37॥
बने मोक्षपथ का वह गामी, हो जाए वह पूर्ण अकामी॥38॥
धन-दौलत आरोग्य प्रदायी, धारण करे धर्म सुखदायी॥39॥
'विशद' धर्म मेरे उर आवे, जब तक मोक्ष नहीं मिल जावे॥40॥

दोहा- चालीसा दश धर्म का, पढ़ें-सुनें जो जीव।
वैभवशाली वे बनें, पावें पुण्य अतीव॥
धर्म हृदय में धारकर, बनो श्री के नाथ।
करो कराओ भाव से, दीप धूप के साथ॥

जाप्य : ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि दशलक्षणधर्माय नमः।

(51) अष्टाह्निका (नन्दीश्वर पर्व) चालीसा

दोहा- पर्व अठाई में सदा, देव करें प्रस्थान।
नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, करें प्रभू गुणगान॥
चालीसा गाते यहाँ, जिनका हम शुभकार।
जिनबिम्बों के चरण में, वन्दन बारम्बार॥

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, अन्तहीन आकाश कहाया॥1॥
मध्यलोक जिसमें शुभकारी, जिसकी है कुछ महिमा न्यारी॥2॥
जिसके मध्य सुमेरु गाया, जम्बूद्वीप प्रथम कहलाया॥3॥
द्वीप को सागर घेरे जानो, सागर को फिर दीप बखानो॥4॥
अष्टम है नन्दीश्वर भाई, जिसकी फैली जग प्रभुताई॥5॥
एक सौ त्रेसठ कोटि प्रमाणा, लाख चुरासी योजन माना॥6॥
पर्व अढ़ाई जब भी आवें, देव वहाँ पूजन को जावें॥7॥
जिनबिम्बों का न्हवन करावें, गंधोदक निज माथ लगावें॥8॥
चूड़ी सदृश गोला जानो, चारों दिश में जिनगृह मानो॥9॥
इक-इक दिश में तेरह गाये, बावन जिनगृह सर्व बताये॥10॥
चारों दिश की रचना भाई, शास्त्रों में ऐसी बतलाई॥11॥
मध्य में अञ्जन गिरि शुभकारी, अञ्जन जैसी सोहे कारी॥12॥
योजन सरस चुरासी भाई, अञ्जन गिरि की है ऊँचाई॥13॥
रही वापिका घेरे भाई, निर्मल जल से युक्त बताई॥14॥
चारों दिश में दधिमुख सोहे, दधि समान मन को जो मोहे॥15॥
दश हजार योजन ऊँचाई, दधिमुख गिरियों की बतलाई॥16॥
जिसके बाह्य कोण में भाई, रतिकर गिरियाँ हैं अतिशायी॥17॥
लाल रंग जिनका मनहारी, योजन एक उच्च शुभकारी॥18॥
ढोल की पोल समान बताए, सब प्रकार के पर्वत गाए॥19॥

बावड़ियाँ चउ दिश में जानो, एक लाख योजन की मानो॥20॥
फूल खिले जिनमें मनहारी, रत्नमयी हैं शोभा भारी॥21॥
अञ्जन गिरि शुभ चार बताए, दधिमुख सोलह पावन गाए॥22॥
रतिकर बत्तिस हैं मनहारी, जिन पे जिनगृह मंगलकारी॥23॥
स्वर्ण रत्नमय आभा वाले, जिनगृह गाए श्रेष्ठ निराले॥24॥
ध्वजा कंगूरे कलशा भाई, घंटा तोरण युत अतिशायी॥25॥
एक सौ आठ गर्भ गृह जानो, प्रति जिनगृह में सोहें मानो॥26॥
सिंहासन पर जिनवर सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें॥27॥
प्रति जिनगृह में जिन प्रतिमाएँ, एक सौ आठ-आठ जिन गाएँ॥28॥
नयन श्याम अरु श्वेत बताए, नख मुख लाल रंग के गाए॥29॥
भौंह केश काले बतलाए, स्वर्ण मयी जिनबिम्ब बताए॥30॥
बत्तिस युगल यक्ष शुभकारी, चँवर ढुराते मंगलकारी॥31॥
श्रीदेवी श्रुतदेवी जानो, पास मूर्तियाँ जिनकी मानो॥32॥
सर्वाह्ण यक्ष पास में गाए, सनतकुमार भी शोभा पाए॥33॥
मंगल द्रव्य अष्ट है जानो, पास में श्री जिन के हों मानो॥34॥
धूप घड़े सोहें शुभकारी, मणिमालाएँ मंगलकारी॥35॥
मुखप्रेक्षा मण्डप भी सोहें, नर्तन क्रीड़ा गृह मन मोहें॥36॥
चित्र भवन वन्दन गृह गाये, न्हवन और गुण गृह बतलाए॥37॥
हम परोक्ष वन्दन को आए, दर्शन पाएँ भाव बनाए॥38॥
यहाँ बैठ हम अर्चा करते, नाथ चरण में माथा धरते॥39॥
धन्य सुअवसर हम ये पाएँ, कर्मनाश कर शिवपद पाएँ॥40॥

दोहा- चालीसा पढ़ के 'विशद', हो अतिशय आनन्द।
जीवन सुखमय शांत हो, कर्माश्रव हो मन्द॥
पर्व अठाई में पढ़ें, सुने सुनाएँ जोय।
रोग शोक क्लेशादि भी, दूर शीघ्र ही होय॥

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः।

(52) नवदेवता चालीसा

दोहा- अर्हत् सिद्धाचार्य हैं, उपाध्याय जिन संत।
चैत्य जिनालय धर्म जिन, आगम रहा अनन्त॥
नव देवों की अर्चना, करते हैं हम आज।
चालीसा गाते विशद, पाने शिव साम्राज्य॥

चौपाई

जय-जय अर्हत् मंगलकारी, होते जो पावन अविकारी॥1॥
कर्म घातिया आप नशाए, छियालिस आप मूलगुण पाए॥2॥
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, पावन केवल ज्ञान जगाए॥3॥
समवशरण आ देव रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥
ॐकारमय जिनकी वाणी, खिरती जन-जन की कल्याणी॥5॥
जिनवर चौंतिस अतिशय धारी, प्रातिहार्य पाते मनहारी॥6॥
कर्म अघाती के हो नाशी, होते सिद्ध शिला के वासी॥7॥
ज्ञान शरीरी आप कहाते, अक्षय अविनाशी पद पाते॥8॥
नित्य निरंजन हे अविकारी, शुद्ध बुद्ध चेतन चित् धारी॥9॥
अष्ट मूलगुण पाने वाले, चिर ज्योति जिन सिद्ध निराले॥10॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान जगाते, सम्यक् चारित तप भी पाते॥11॥
होते वीर्याचार के धारी, जैनाचार्य श्रेष्ठ अविकारी॥12॥
होते शिक्षा दीक्षा दाता, पञ्चाचार के रहे प्रदाता॥13॥
छियालिस मूलगुणों के धारी, जिनाचार्य हैं मंगलकारी॥14॥
जैनधर्म का ज्ञान जगाते, जिन मुनियों को आप पढ़ाते॥15॥
अंग पूर्व के होते ज्ञाता, भवि जीवों के गाए त्राता॥16॥
पच्चिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अनगारी॥17॥
भाव सहित निज को जो ध्याते, पावन मोक्ष मार्ग अपनाते॥18॥
विषयाशा के होते त्यागी, निज आतम के जो अनुरागी॥19॥

सम्यक् दर्शन ज्ञान के धारी, होते जो सम्यक् आचारी॥20॥
सर्वारम्भ परिग्रह छोड़ें, भोगों से अपना मुख मोड़ें॥21॥
पञ्च महाव्रत समिति के धारी, होते पञ्चेन्द्रिय जयकारी॥22॥
षट् आवश्यक पालें ज्ञानी, शेष अन्य गुणधर विज्ञानी॥23॥
अट्ठाइस मूलगुणों के धारी, साधू निर्विकार अनगारी॥24॥
धर्म वस्तु स्वभाव बताया, श्रेष्ठ धर्म रत्नत्रय गाया॥25॥
उत्तम क्षमा आदि शुभकारी, धर्म कहे दश मंगलकारी॥26॥
धर्म अहिंसा धारो प्राणी, कहती है जिनवर की वाणी॥27॥
वीतराग मय धर्म निराला, सबके संकट हरने वाला॥28॥
दिव्य ध्वनि जिन की मनहारी, लोकालोक प्रकाशन कारी॥29॥
सात सौ लघु भाषामय जानो, महाभाषाएँ अठारह मानो॥30॥
अनेकांत स्याद्वाद प्रकाशी, जिनवाणी अज्ञान विनाशी॥31॥
अंग पूर्व का ज्ञान कराए, द्रव्य तत्त्व आदिक प्रगटाए॥32॥
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य बताए, वीतराग मुद्रा दर्शाए॥33॥
प्रातिहार्य संयुक्त निराले, मोह महातम हरने वाले॥34॥
जिन चैत्यालय पावन गाए, शिखर कलश ध्वज युक्त बताए॥35॥
घंटा तोरण युत मनहारी, जिनबिम्बों युत मंगलकारी॥36॥
पावन ये नव देव कहाए, नव कोटी से पूज्य बताए॥37॥
इनकी अर्चा करके प्राणी, हो जाते हैं सम्यक् ज्ञानी॥38॥
सुख शांती सौभाग्य प्रदायी, मोक्ष मार्ग दर्शायक भाई॥39॥
'विशद' भाव से हम भी ध्याएँ, पावन मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥40॥

दोहा- चालीसा नव देव का, पढ़ें भाव के साथ।
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि वे, पा हों श्री के नाथ॥
रोग-शोक क्लेशादि से, मुक्ती पावें जीव।
शिवपथ के राही बने, पावें पुण्य अतीव॥

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: नम:।

(57) आचार्य परमेष्ठी चालीसा

दोहा- नमन किए आचार्य पद, होवें पाप विनाश।
छत्तिस गुण की साधना, होवे ज्ञान प्रकाश।।
श्री गुरुवर की भक्ति से, मिलता सौख्य अपार।
चालीसा को भाव से, पढ़ते बारम्बार।।

चौपाई

जय आचार्य क्षमा के सागर, जय गुरुवर जी ज्ञान उजागर।।1।।
तुमने ज्ञान सुधारस पाया, सर्व धर्म का ज्ञान बताया।।2।।
जय गुरुवर त्रि गुप्ति के धारी, सर्व जगत तुम पर बलिहारी।।3।।
मन-वच-तन को बस में करते, सर्व दुखों को पल में हरते।।4।।
पंचाचार का पालन करते, दीक्षा शिक्षा संघ में धरते।।5।।
आगम ज्ञान सत्य के धारी, सत्य धर्म की महिमा न्यारी।।6।।
दश धर्मों की पहनी माला, महाव्रतों को तुमने पाला।।7।।
घोर तपों को जो नित तपते, निज में रह निज आतम भजते।।8।।
तप से कर्म की धूम उड़ाई, निज गुण की नित करें सफाई।।9।।
पीड़ित कर्मों को कर दीना, ऋद्धि-सिद्धियाँ आईं नवीना।।10।।
तप से आतम कुंदन करते, कर्म इसी से आप ही हरते।।11।।
त्याग धरम ही सबसे सुन्दर, मिले इसी से मुक्ति समुंदर।।12।।
धर्म से आतम शुद्ध है होता, धर्म तो सुख के बीज है बोता।।13।।
अनुनय करते हम भी ऋषिवर, आशा पूरी करना गुरुवर।।14।।
करुणा सागर आप बहा दो, मेरा मुझ से मिलन करा दो।।15।।
समता का देखूँ मैं दर्पण, तन-मन जीवन तुम को अर्पण।।16।।
जो भी गुरु की भक्ति करते, शक्ति बल आयु सुख बढ़ते।।17।।
चरणों का यह चमत्कार है, गुरु जी तुमको नमस्कार है।।18।।
श्री गुरु से है यही कामना, पूरी कर दो मेरी भावना।।19।।

दुष्ट कर्म को शीघ्र भगा दो, निज का निज से मिलन करा दो।।20।।
सब जीवों पर समता धारी, दया के तुम गुण गण भण्डारी।।21।।
दिल से भक्ति करे तुम्हारी, दुष्कर्मों की शक्ति हारी।।22।।
शब्द अर्थ भावों से वंदन, दर्श करूँ हो जाऊँ चंदन।।23।।
अज्ञानी हूँ ज्ञान करा दो, खाली झोली गुरु भरा दो।।24।।
है विशेष गुण के जो धारी, परमेष्ठी जग मंगलकारी।।25।।
भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।26।।
आचार आधार वान कहाए, व्यवहारवान प्रकर्ता गाए।।27।।
आयो पाद दर्शी अवपीड़क, अपरस्त्रावि गाए निर्यापक।।28।।
जग के दुख ने मुझको घेरा, छूटे जन्म मरण का फेरा।।29।।
बूढ़ा बच्चा और जवान, करते हैं गुरु का गुणगान।।30।।
सुन्दर रूप निहार न थकते, वीतरागता को सब चखते।।31।।
स्वयं तिरें सबको तिरवाते, मोक्ष मार्ग की राह दिखाते।।32।।
समता अमृत क्रोध को नाशे, उत्तम क्षमा धर्म परकाशे।।33।।
आरती कर हम गुरु को ध्यायें, भक्ति भाव से शीश झुकायें।।34।।
जो प्राणी आचार्य को ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते।।35।।
पावन मोक्ष मार्ग अपनाते, शिवपुर अपना धाम बनाते।।36।।
जैनाचार्य को हम भी ध्यायें पद में सादर शीश झुकायें।।37।।
हृदय कमल में अपने ध्यायें मुक्तकंठ से महिमा गाएँ।।38।।
भक्ती करके हम हर्षाए, शीश झुकाकर आशिष पाएँ।।39।।
जबतक जीवन रहे हमारा, जिन गुरुओं का मिले सहारा।।40।।

दोहा- धर्म सरोवर आप हो, हम हैं भेले जीव।
ऐसा आशीर्वाद दो, दृढ़ हो धर्म की नींव।।
परम पूज्य आचार्य श्री देना ये वरदान।
भक्ति नित करता रहूँ, बारम्बर प्रणाम।।

जाप्य : ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः।

चौंसठ ऋद्धि चालीसा

दोहा- नवदेवों को नमन कर, नव कोटी के साथ ।
तीर्थंकर चौबीस के ,चरण झुकाते माथ ।।
चौंसठ ऋद्धी का विशद, चालीसा शुभकार ।
गाते हैं हम भाव से, नत हो बारम्बार ।।

।।चौपाई ।।

पुण्योदय प्राणी का आवे, पावन मानव जीवन पावे ।। 1 ।।
देव-शास्त्र -गुरु का श्रद्धानी, होवे अनुपम सम्यक् ज्ञानी ।।2।।
संयम धार बने अनगारी, अन्तर बाह्य सुतप का धारी ।। 3 ।।
साधक अपने कर्म खिपावें, पावन केवलज्ञान जगावें ।। 4 ।।
अवधिज्ञान ऋद्धी के धारी, मनःपर्यय ज्ञानी अविकारी ।। 5 ।।
केवलज्ञान ऋद्धि मुनि पाएँ, कोष्ठ ऋद्धि अनुपम प्रगटाएँ ।।6।।
ऋषिवर बीज ऋद्धि जो पावें, सर्व शास्त्र का सार बतावें ।।7।।
संभिन्न संश्रोत ऋद्धी धारी, होते सब ध्वनि के उच्चारी ।। 8 ।।
पदानुसारणी ऋद्धी भाई, दूर स्पर्श ऋद्धि शुभ गाई ।। 9 ।।
दूर श्रवण ऋद्धी के धारी, ऋषिवर दूरास्वादन कारी ।। 10 ।।
दूर घ्राणत्व ऋद्धि मुनि पावें, दूरावलोकन ऋद्धि जगावें ।। 11 ।।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि शुभ गाई, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि बतलाई ।। 12 ।।
ऋषि प्रत्येक बुद्धि के धारी, सम्यक् ज्ञान निरूपण कारी ।।13 ।।
श पूर्वित्व ऋद्धिधर ज्ञानी, साधू कहे अटल श्रद्धानी ।। 14 ।।
ो चतुर्दश पूर्वी जानो, अंग पूर्व श्रुत धारी मानो ।। 15 ।।
ऋषी प्रवादित्व ऋद्धी, पाएँ, वाद कुशल की शक्ति जगाएँ ।। 16 ।।
अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, अष्ट निमित्त के अर्थ प्रदाता ।।17 ।।
जंघा चारण ऋद्धी धारी, अग्नि शिखा चारण शुभकारी ।।18 ।।
श्रेणी चारण ऋद्धी पावें, ऋषि फल चारण ऋद्धि जगावें ।।19 ।।

जल चारण जल पे चल जावें, तन्तू चारण तन्तु पे जावें ।।20।।
पुष्प ऋद्धिधर पुष्प विहारी, बीजांकुर शुभ ऋद्धी धारी ।।21।।
नभ चारण ऋषि नभ में जावें, अणिमा से लघु रूप बनावें ।।22।।
ऋषि महिमा धर महिमा शाली, लघिमा ऋद्धी हल्की वाली ।।23।।
गरिमा ऋद्धी से हों भारी, मन वच काय ऋद्धि बल धारी ।।24।।
कामरूपणी है कई रूपी, अन्तर्धान से होय अरूपी ।। 25।।
ईशत्व ऋद्धी ईश बनाए, वश में ऋद्धि वाशित्व कराए ।। 26 ।।
ऋद्धि प्राकाम्य है इच्छाकारी, आप्ति ऋद्धि है उच्च प्रकारी ।।27।।
अप्रतिघात घात परिहारी, तप्त ऋद्धि मल मूत्र निवारी ।। 28 ।।
दीप्त ऋद्धि शुभ दीप्ति बढ़ावे, महा उग्र तप शक्ति जगावे ।।29।।
ऋद्धि घोर तप क्लेश निवारी, घोर पराक्रम ऋद्धी धारी ।।30।।
परम घोर तप ऋद्धि जगावें, घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धी पावें।। 31 ।।
आमर्षौषधि ऋद्धि जगावें, सर्वौषधि ऋद्धी ऋषि पावें ।। 32 ।।
आशीरविष ऋद्धि के धारी, मुनि दृष्टि निर्विष अविकारी ।।33।।
क्ष्वेलौषधि ऋद्धी प्रगटावें, विडौषधी ऋद्धी मुनि पावें ।। 34 ।।
जल्लौषधि मल्लौषधि धारी, आशीविष ऋषिवर अनगारी ।।35।।
दृष्टीविष रस ऋद्धि जगावें, क्षीर स्रावि रस ऋद्धी पावें ।। 36 ।
घृत स्रावी मधु स्रावी जानो, अमृत स्रावी ऋषिवर मानो।। 37 ।।
अक्षीण संवास ऋद्धि जगाएँ, अक्षीण महानस ऋद्धि पावें ।।38।।
मुनिवर उत्तम संयम धारी, कहे ऋद्धियों के अधिकारी।।39।।
जो भी ऋषियों के गुण गावें, 'विशद' ऋद्धियों का फल पावें ।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस यह , पढ़े सुने जो पाठ।
जीवन मंगलमय बने, होवें ऊँचे ठाठ ।।
दुख दारिद को नाशकर, जीवन होय निरोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य मय, पाए 'विशद' शिव भोग ।।

जाप्य : ॐ ह्रीं चतुषष्ठी ऋद्धीभ्यो नमः ।

(55) बड़े बाबा चालीसा

दोहा- कुण्डलपुर जी के बड़े, बाबा बड़े विशाल।
चालीसा गाते विशद, करके नमन त्रिकाल॥
सिद्ध क्षेत्र अतिशय रहा, जग में पूज्य महान।
आदिनाथ के चरण की, पद रज पूजें आन॥

चौपाई

पावन भारत देश कहाया, जिसमें मध्य प्रदेश बताया॥1॥
जिला दमोह श्रेष्ठ शुभ जानो, तीर्थ क्षेत्र कुण्डलपुर मानो॥2॥
पूज्य बड़े बाबा कहलाए, सारा जग ये महिमा गाए॥3॥
श्रीधर जी यहाँ मुक्ती पाए, सिद्ध क्षेत्र अतएव कहाए॥4॥
वीतराग मुद्रा मनहारी, पद्मासन है मंगलकारी॥5॥
कुण्डल जैसा पर्वत गाया, कुण्डलपुर अतएव कहाया॥6॥
ग्राम पटेरा का व्यापारी, गाँव-गाँव जाता पग चारी॥7॥
कर व्यापार गाँव को आए, पत्थर से वह ठोकर खाए॥8॥
पत्थर खोद निकाला जाए, मन में ऐसे भाव बनाए॥9॥
किन्तू खोद नहीं वह पाया, लौट के घर को वापस आया॥10॥
रात में उसको सपना आया, गाड़ी लेकर वहाँ बुलाया॥11॥
मूर्ती एक यहाँ से पाओ, गाँव में अपने तुम ले जाओ॥12॥
गाड़ी आगे चले तुम्हारी, पीछे वाद्य बजेंगे भारी॥13॥
पीछे नहीं देखना भाई, व्यापारी से बात सुनाई॥14॥
वरना गाड़ी रुक जाएगी, नहीं गाँव तक जा पाएगी॥15॥
प्रातः गाड़ी ले व्यापारी, साथ में लेकर चला कुदारी॥16॥
जाकर वहाँ पे करी खुदाई, बड़े बाबा की मूर्ती पाई॥17॥
चला मूर्ति ले ज्यों व्यापारी, अद्भुत वाद्य बजे थे भारी॥18॥
मुड़कर उसने देखा जैसे, गाड़ी रुकी वहीं पर वैसे॥19॥

व्यापारी मन में पछताया, मन्दिर उसी जगह बनवाया॥20॥
पर्वत पर ऐसे प्रभु आये, अतिशय प्रभु जी कई दिखाए॥21॥
औरंगजेब आया था मानी, मूर्ति तोड़ने की वह ठानी॥22॥
पग में उसने छेनी लगाई, पग से दूध की धार बहाई॥23॥
मधू मक्खियाँ आईं भारी, नृप की सेना भागी सारी॥24॥
मन में तब राजा घबड़ाया, अपनी गलती पर पछताया॥25॥
छत्रशाल राजा भी आया, मंदिर जीर्णोद्धार कराया॥26॥
उस पर कृपा प्रभू बरसाई, राज्य सम्पदा उसने पाई॥27॥
भाव सहित महिमा जो गाते, अपने वे सौभाग्य जगाते॥28॥
मंदिर त्रेसठ हैं शुभकारी, एक से बढ़कर अतिशयकारी॥29॥
कुछ पर्वत के ऊपर सोहें, कुछ नीचे सबका मन मोहें॥30॥
नीचे एक सरोवर पाया, वर्धमान सागर कहलाया॥31॥
उसमें एक जिनालय गाया, मानो पावापुर कहलाया॥32॥
दूर-दूर से यात्री आते, पूजा करते आरती गाते॥33॥
साधू आके दर्शन पाते, गिरि के ऊपर ध्यान लगाते॥34॥
श्रावक गाते भजनावलियाँ, खिलती उनके मन की कलियाँ॥35॥
एक समाधी केन्द्र यहाँ है, रुकते त्यागी व्रती जहाँ हैं॥36॥
निर्धन धन सम्पत्ति पावें, रोगी रोग से मुक्ती पावें॥37॥
पुत्रहीन सुत पा हर्षावें, भाग्य हीन सौभाग्य जगावें॥38॥
'विशद' भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते॥39॥
पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी, बनें मोक्ष के हम अधिकारी॥40॥

दोहा- भाव सहित हमने किया, लघुतम यह गुणगान।
भूल चूक सब माफ हो, क्षमा करो भगवान॥
चालीसा जो भी पढ़े, जीवन में अविराम।
सफल होयेंगे शीघ्र ही, उनके पूरे काम॥

जाप्य : ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र कुण्डलपुर स्थित बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

बाड़ा पद्मपुरा के श्री पद्मप्रभु भगवान चालीसा

दोहा- नव देवों को नित नमूँ, नव कोटि के साथ ।
ऋद्धि सिद्धि मंगल करो, झुका रहे हम माथ ।।
पदमपुरा के पदम प्रभु, करो मेरा कल्याण ।
चालीसा पढ़ते यहाँ, पाने शिव सोपान ।।

(चौपाई)

जय श्री पदम प्रभू गुणधारी, आप जगत में मंगलकारी ।।1।।
पिता धरण के राज दुलारे, मात सुसीमा के हो प्यारे ।।2।।
कौशाम्बी नगरी शुभकारी, जन्में जिस भू पे त्रिपुरारी ।।3।।
ढाई शतक धनु ऊँचे गाये, लाल वर्ण सुन्दर तन पाएँ।।4।।
छठवे तीर्थंकर कहलाये, पंचकल्याणक इन्द्र मनाये।।5।।
चार घातियाँ कर्म नशाये, तत्क्षण केवलज्ञान जगाये।।6।।
छियालीस मूल गुणों के धारी, आप हुये जग जन हितकारी।।7।।
धनद भक्ति से चरणों आया, सुन्दर समवशरण बनवाया।।8।।
द्वादश धर्म सभा अति प्यारी, धनपति इन्द्र रचावन हारी।।9।।
जनम जात वैरी जहाँ आये, वैर छोड़ मैत्री अपनाये।।10।।
तीस हजार तीन लख जानो, समवशरण में साधु जानो।।11।।
बीस हजार चार लख भाई, आर्यिकाओं की संख्या गाई।।12।।
एक सौ दस गणधर बतलाये, वज्रवमर पहले कहलाये।।13।।
सुरनर पशु त्रय गति के प्राणी, आकर सुनते हैं जिनवाणी।।14।।
कोई सत् श्रद्धान जगाते, कोई देश व्रतों को पाते।।15।।
कोई मुनि की दीक्षा पाते, कोई केवलज्ञान जगाते।।16।।
क्षायिक नव लब्धि के धारी, पाके होते शिव भर्तारी।।17।।
अपने सारे कर्म नशाते, फिर वे शिव पदवी को पाते।।18।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आये, मोहन कूट से शिवपद पाये।।19।।

विश्व विख्यात क्षेत्र जो गाया, मन्दिर गोलाकार बताया।।20।।
पद्मपुरा है अतिशयकारी, पद्मप्रभु की मूर्ति प्यारी।।21।।
दूर-दूर से यात्री आते, मनवांछित फल प्राणी पाते।।22।।
दुखिया दर पे दुःख मिटावे, निर्धन धन इच्छित पा जावे।।23।।
नाम आप का संकट हारी, ध्यान जाप है मंगलकारी।।24।।
भूतप्रेत व्यंतर बाधाएँ, शाकिन डाकिन की पीड़ाएँ।।25।।
परकृत मंत्र तंत्र दुख कारी, मिट जाती हैं पीड़ा सारी।।26।।
कर्म असाता उदय में आये, कोई असाध्य बीमारी आये।।27।।
कैंसर हृदय रोग हो भारी, फैली हो दुर्दम दुर्मारी।।28।।
जल वृष्टि हो प्रलय मचाये, या दुस्काल भयानक आये।।29।।
ज्ञान योग में बाधा आये, विद्या अभ्यास बिना हो पाये।।30।।
यश मिलते-मिलते रह जाये, रविग्रह पीड़ा सतत सतावे।।31।।
या परिश्रम निस्फल जाये, रोजगार भी न चल पाये।।32।।
राजा मंत्री आदि सतावे, कर्मचारी भी दुख पहुँचावे।।33।।
पद्मप्रभु पद पूज रचावे, भाव सहित चालीसा गावे।।34।।
सब कष्टों से मुक्ती पावे, सुख शान्ति सौभाग्य जगावे।।35।।
वास्तु दोष की हो बाधाएँ, ज्योतिष आदि की पीड़ाएँ।।36।।
सुर नर पशुकृत वैर कहाये, उनसे पूजा मुक्ती दिलाये।।37।।
यात्रा वाहनकृत बाधायें, भूकंप आदिक की शंकायें।।38।।
अनायास ही यदि सताये, नाश होय जिन प्रभु को ध्याये।।39।।
पद्म प्रभु हैं संकटहारी, जिन पद में ढोक हमारी।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़े पढ़ावे जीव।
पद्मप्रभु के चरण में, जागे पुण्य अतीत।।
रोग शोक दुख दूर हों, और पाप का नाश।
जीवन हो सुख शान्तिमय, 'विशद' पूर्ण हो आश।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हम् बाड़ाग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः।

निर्वाण क्षेत्र चालीसा

दोहा– परमेष्ठी हैं लोक में, पावन परम ऋषीश।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश॥
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण का, चालीसा सुखकार।
गाते हैं हम भाव से, पाने भवदधि पार॥

(चौपाई)

श्री सम्मेद शिखर मनहारी, शाश्वत तीर्थ है मंगलकारी॥1॥
तीर्थंकर पदवी के धारी, अन्य ऋषीश्वर जो अनगारी॥2॥
काल अनादी मुक्ती पाए, सर्व अनंतानंत कहाए॥3॥
आगे वीतरागता धारी, शिव पाऐंगे मुनि अनगारी॥4॥
अवसर्पिणी यह काल कहाए, संत अनेक मोक्ष पद पाए॥5॥
गणधर कूट से गणधर स्वामी, शिव पद पाते अंतर्यामी॥6॥
कूट ज्ञानधर शुभ कहलाए, कुंथुनाथ जी शिव पद पाए॥7॥
कूट मित्रधर आगे आए, श्री नमि जिनवर मोक्ष सिधाए॥8॥
नाटक कूट रहा शुभकारी, अरहनाथ का मंगलकारी॥9॥
संबल कूट भी है मनहारी, हुए मल्लि जिनवर शिवकारी॥10॥
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्रेयनाथ जी शिव पद पाए॥11॥
सुप्रभ कूट विशेष कहाया, पुष्पदंत जिनवर का गाया॥12॥
मोहन कूट पद्मप्रभ स्वामी, हुए जहाँ से अंतर्यामी॥13॥
निर्जर कूट से शिवपद पाए, मुनिसुव्रत तीर्थंकर गाए॥14॥
ललित कूट फिर आगे आए, चन्द्रप्रभ जी मुक्ती पाए॥15॥
विद्युतवर शुभ कूट कहाए, शीतल जिनवर मोक्ष सिधाए॥16॥
कूट स्वयंभू है मनहारी, जिनानंत का जो शिवकारी॥17॥
धवल कूट से शिव पद पाए, श्री संभव जिनराज कहाए॥18॥
आनंद कूट पे आनंद आए, अभिनंदन जी शिवपद पाए॥19॥
कूट सुदत्त है मंगलदायी, धर्मनाथ का मोक्ष प्रदायी॥20॥
अविचल कूट पे ध्यान लगाए, सुमतिनाथ जी शिव पद पाए॥21॥

कूट कुंदप्रभ को हम ध्याते, शांतिनाथ पद शीश झुकाते॥22॥
कूट प्रभास पे जाएँ भाई, जिन सुपार्श्व का मोक्ष प्रदायी॥23॥
कूट सुवीर है जानी मानी, विमलनाथ जिन की कल्याणी॥24॥
कूट सिद्धवर श्रेष्ठ कहाए, अजितनाथ जी शिव पद पाए॥25॥
स्वर्णभद्र शुभ कूट को ध्याते, पार्श्व प्रभू पद शीश झुकाते॥26॥
अष्टापद है तीर्थ निराला, जग जन का मन हरने वाला॥27॥
पर्वत जो कैलाश कहाए, आदिनाथ जी शिव पद पाए॥28॥
दश हजार मुनि और बताए, चक्री भरत भी मोक्ष सिधाए॥29॥
नागकुमार जीवंधर स्वामी, कामदेव पद पाए नामी॥30॥
निज आतम का ध्यान लगाए, कर्म नाशकर शिव पद पाए॥31॥
ऊर्जयंत गिरनार कहाए, नेमिनाथ जिन शिव पद पाए॥32॥
शंभू प्रद्युम्न अनिरुद्ध भी जानो, मोक्ष महापद पाए मानो॥33॥
कोटि बहत्तर सात सौ भाई, ने भी गिरि से मुक्ती पाई॥34॥
चंपापुर वासुपूज्य कहाए, गिरि मंदार से शिव पद पाए॥35॥
एक हजार अन्य मुनि गाए, इसी तीर्थ से मोक्ष सिधाए॥36॥
पावापुर है मंगलकारी, पद्म सरोवर है मनहारी॥37॥
महावीर जी शिव पद पाए, छब्बिस मुनि संग मोक्ष सिधाए॥38॥
जहाँ से मुनिवर शिव पद पाए, वह निर्वाण क्षेत्र कहलाए॥39॥
हम निर्वाण क्षेत्र सब ध्याएँ, हम भी मोक्ष महापद पाएँ॥40॥

सोरठा

पूज्य तीर्थ निर्वाण, ध्याते हैं हम भाव से,
करते हैं गुणगान, तीन योग से हम विशद।
चालीसा चालीस, दीप धूप के साथ में,
चरण झुकाएँ शीश, वे पावें निर्वाण पद॥

जाप–ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः।

त्रिकाल चौबीसी छियालीसा

दोहा- तीर्थंकर त्रयकाल के, गाए पूज्य महान।
जिनकी अर्चा कर मिले, पावन पद निर्वाण॥
छियालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
विशद भावना है यही, बढ़ें मोक्ष की ओर॥

चौपाई

द्रव्याकाश अनन्त कहाया, जिसके मध्य लोक शुभ गाया॥1॥
वातवलय घेरे हैं जानो, रहा सहारे जिनके मानो॥2॥
ऊर्ध्व लोक में स्वर्ग बताए, नरक अधो में जिनवर गाए॥3॥
मध्य लोक थाली सम गाया, गोलाकार मध्य में पाया॥4॥
एक लाख योजन ऊँचाई, राजू एक कही है भाई॥5॥
मध्य में जम्बू द्वीप कहाए, संख्यातीत द्वीप बतलाए॥6॥
प्रथम ढाई द्वीपों में जानों, पन्द्रह कर्म भूमियाँ मानों॥7॥
शाश्वत जिन विदेह में गाए, विहरमान जिन बीस कहाए॥8॥
भरतैरावत क्षेत्र में भाई, चौथा काल आए शिवदायी॥9॥
क्रमशः हों तीर्थंकर स्वामी, केवलज्ञानी अन्तर्यामी॥10॥
एक सौ साठ विदेह कहाए, भरतैरावत दश में गाए॥11॥
क्षेत्र एक सौ सत्तर भाई, में हो सकते जिन शिवदायी॥12॥
काल अनादी क्रम यह गाया, जिसका अन्त नहीं बतलाया॥13॥
भूतकाल में हुए हैं जानो, और अनागत होंगे मानो॥14॥
जम्बू वृक्ष यहाँ शुभ गाया, जम्बूद्वीप अतएव कहाया॥15॥
भरत क्षेत्र दक्षिण में जानो, धनुषाकार रहा शुभ मानो॥16॥
मध्य में आर्य खण्ड शुभ आए, म्लेच्छ खण्ड भी पाँच बताए॥17॥
भारत देश है जिसमें भाई, जिसकी फैली जग प्रभुताई॥18॥
जिसके भूतकाल के जानो, तीर्थंकर चौबिस हैं मानो॥19॥
प्रथम श्री निर्वाण कहाए, द्वितिय सागर जिन कहलाए॥20॥
तृतिय महासाधु जी गाए, विमल प्रभ चौथे बतलाए॥21॥
'पंचमश्रीधर' श्री के धारी, श्री सुदत्त छठवें अविकारी॥22॥

श्री अमल प्रभ सातम जानो, उद्धर जी अष्टम पहिचानो॥23॥
नवम श्री अंगिर जी गाए, दशम श्री सन्मति जी पाए॥24॥
सिन्धू ग्यारहवें शिवदायी, कुसुमांजलि बारहवें भाई॥25॥
तेरहवें शिवगण कहलाए, चौदहवें उत्साह कहाए॥26॥
पन्द्रहवें ज्ञानेश्वर जानो, परमेश्वर सोलहवें मानो॥27॥
विमलेश्वर सत्रहवें पाये, श्री यशोधर अगले गाए॥28॥
कृष्णमती उन्नीसवें जानो, बीसवें ज्ञानमती हैं मानो॥29॥
शुद्धमती इक्कीसवें गाये, बाइसवें श्रीभद्र कहाए॥30॥
अतिक्रान्त तेइसवें स्वामी, चौबिसवें जिनशांत अकामी॥31॥
तीर्थंकर इस कालिक पाए, चौबीस संख्या में जो गाए॥32॥
ऋषभाजित सम्भव जिनस्वामी, अभिनन्दन जिन अन्तर्यामी॥33॥
सुमति पद्म सुपार्श्व कहाए, चन्द्र पुष्प शीतल जिन गाए॥34॥
श्रेयनाथ वासुपूज्य निराले, विमलानन्त धर्म जिन आले॥35॥
शांति कुन्थु अर मल्लि कहाए, मुनिसुव्रत नमि नेमि बताए॥36॥
पार्श्व वीर जिन मंगलकारी, चौबिस जिन हैं अतिशयकारी॥37॥
जो भविष्य में होने वाले, चौबिस जिनवर रहे निराले॥38॥
महापद्म सुरदेव कहाए, श्री सुपार्श्व स्वयंप्रभ गाए॥39॥
सर्वात्मभूत देवपुत्र स्वामी, कुलपुत्र उदंक कहे शिवगामी॥40॥
प्रोष्ठिल जयकीर्ति कहलाए, मुनिसुव्रत अर शिव पद पाए॥41॥
श्री निष्पाप निष्कषाय कहाए, विपुल श्री निर्मल जिन गाए॥42॥
चित्र-समाधीगुप्त निराले, स्वयंभू अनिवर्तक जिन आले॥43॥
श्री जय जी जिन विमल कहाए, देवपाल अनन्तवीर्य जी गाए॥44॥
त्रैकालिक जिनवर ये सारे, तीर्थंकर हैं पूज्य हमारे॥45॥
गाये जो अनुपम अविकारी, छियालिस मूलगुणों के धारी॥46॥

दोहा- छियालीसा छियालीस दिन, पढ़ते हैं जो लोग
सुख शांती आनन्द का, करते हैं वे भोग॥
तीर्थंकर त्रय काल के, पाते पद निर्वाण।
जिनकी अर्चा कर 'विशद', पाएँ शिव सोपान॥

श्री तत्त्वार्थ सूत्र चालीसा

दोहा- उमास्वामिकृत ग्रन्थ है, तत्त्वार्थ सूत्र महान्।
मोक्षमार्ग का है कथन, जिसमें महिमावान॥
भव्यजीव जो हैं विशद, पावें शिव सोपान।
चालीसा गाते यहाँ, पाने पद निर्वाण॥

चौपाई

काल अनादि अनंत बताया, जिसका अंत कहीं न गाया॥1॥
जीव अनंत लोक में गाए, एकेंद्रिय आदिक कहलाए॥2॥
द्रव्य क्षेत्र अरु काल बताए, परावर्त भव भाव कहाए॥3॥
भ्रमण करें होके अज्ञानी, तीन लोक में जग के प्राणी॥4॥
है सौराष्ट्र देश शुभकारी, ऊर्जयंतगिरि मंगलकारी॥5॥
नेमिनाथ जिन मुक्ती पाए, सिद्ध क्षेत्र पावन कहलाए॥6॥
निकट रहा पत्तनगिरि भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी॥7॥
सिद्धाख्या श्रेष्ठी था जानो, द्विज कुलीन श्रावक पहचानो॥8॥
भाव मुक्ति का जिसको आया, उसने तब इक सूत्र बनाया॥9॥
सम्यक् शब्द रहित था जानो, पटिए पर लिक्खा था मानो॥10॥
आचार्य उमास्वामि जी गाए, कर विहार वे वहाँ पे आए॥11॥
सूत्र में सम्यक् शब्द लगाए, करुणा भाव हृदय में लाए॥12॥
सूत्र में सम्यक् शब्द को पाया, सेठ ने सूत्र का अर्थ लगाया॥13॥
भूल पे अपनी जो पछताया, मुनि दर्शन का भाव जगाया॥14॥
वन में जाके दर्शन पाया, मुनि से सारा हाल बताया॥15॥
गल्ती प्रथम सूत्र में भारी, लिखने में यह हुई हमारी॥16॥
आगे हम कैसे लिख पाएँ, तुम चरणों में शीश झुकाएँ॥17॥
मोक्षमार्ग का सार बताओ, हमको भव से पार लगाओ॥18॥
गुरुवर तब उपदेश सुनाएँ, शिवपद दायी सूत्र रचाएँ॥19॥
जीव तत्त्व का वर्णनकारी, प्रथम अध्याय रहा शुभकारी॥20॥
उपशम आदिक भाव बताए, द्वितिय अध्याय में जो बतलाए॥21॥

जीव का लक्षण भेद गिनाए, देश प्रदेश आदि बतलाए॥22॥
अधो मध्य का वर्णनकारी, तृतिय अध्याय है मंगलकारी॥23॥
चार प्रकार के देव बताए, चतुर्थ अध्याय में यह बतलाए॥24॥
द्रव्य अजीव अन्य जो गाए, अध्याय पंचम में दिखलाए॥25॥
पुद्गल द्रव्य मूर्त कहलाया, स्पर्शादिक गुण युत गाया॥26॥
आस्रव तत्त्व शुभाशुभ गाया, छठे अध्याय में लक्षण पाया॥27॥
अशुभाश्रव के हेतु बताए, बंध में कारण जो बतलाए॥28॥
सप्तम में शुभ आस्रव जानो, शुभ व्याख्यान रहा यह मानो॥29॥
बंध के हेतू जो कहलाए, अष्टम अध्याय में बतलाए॥30॥
संवर और निर्जरा जानो, नवम अध्याय में व्याख्या मानो॥31॥
चारित के भी भेद बताए, सूत्रों में लक्षण बतलाए॥32॥
मोक्षतत्त्व की व्याख्याकारी, दशम अध्याय रहा मनहारी॥33॥
मोक्षशास्त्र यह ग्रंथ कहाए, मुक्ती का सोपान बताए॥34॥
सप्त तत्त्व का व्याख्याकारी, शास्त्र कहा है मंगलकारी॥35॥
हेयाहेय का ज्ञान कराए, उपादेय में सुरुचि बढ़ाए॥36॥
पावन सम्यक् ज्ञान जगाए, मन में जो संवेग जगाए॥37॥
मोक्षमार्ग पर फिर बढ़ जाए, जिससे कर्म निर्जरा पाए॥38॥
कर्म घातिया जीव नशाए, विशद ज्ञान प्राणी प्रगटाए॥39॥
शिव पदवी को हम भी पाएँ, ग्रन्थ गुरु पद शीश झुकाएँ॥40॥

दोहा- शुभ भावों से जो पढ़े-चालीसा चालीस।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, बने श्री का ईश॥
सुख शांती सौभाग्य हो, पाके सम्यग्ज्ञान।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें मोक्ष निधान॥

जाप:-ॐ ह्रीं उमास्वामीकृत श्री तत्वार्थसूत्र ग्रंथाय नमः।

स्वर्णभद्र कूट चालीसा

दोहा- शीश नवा श्री पार्श्व को, गणधर करूँ प्रणाम।
शाश्वत तीरथराज है, सिद्धों का शिवधाम।।
स्वर्णभद्र शुभ कूट का, चालीसा शुभकार।
चरण वन्दना कर यहाँ, गाते बारम्बार।।

(चौपाई)

मध्यलोक के मध्य में भाई, जम्बूद्वीप रहा शुभदाई।।1।।
जिनके मध्य मेरु शुभ जानो, भरत क्षेत्र दक्षिण में मानो।।2।।
आर्य खण्ड जिसमें शुभकारी, भारत देश रहा मनहारी।।3।।
झारखण्ड शुभ प्रांत कहाए, जिला गिरिडीह जिसमें आए।।4।।
श्री सम्मेद शिखर शुभकारी, जिसकी छटा रही मनहारी।।5।।
जो निर्वाण क्षेत्र कहलाए, मुनिवर जहाँ पे ध्यान लगाए।।6।।
किए तपस्या जो अतिशायी, कर्म निर्जरा जिससे पाई।।7।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, हुए भूत में मंगलकारी।।8।।
अन्य मुनीश्वर पावन गाए, इसी क्षेत्र से शिव पद पाए।।9।।
इस कालिक चौबीसी जानो, ऋषभादिक तीर्थंकर मानो।।10।।
जिनमें बीस तीर्थंकर आए, तीर्थराज से मुक्ती पाए।।11।।
हुण्डावसर्पिणी काल ये गाया, जिसकी है कुछ ऐसी माया।।12।।
आदिनाथ अष्टापद जानों, वासुपूज्य चम्पापुर मानों।।13।।
नेमी जिन गिरनार कहाए, महावीर पावापुर पाए।।14।।
बीस जिनेश्वर शिव पद गामी, अन्य मुनीश्वर अन्तर्यामी।।15।।
इसी तीर्थ से मोक्ष सिधाए, यह निर्वाण क्षेत्र कहलाए।।16।।
पार्श्व प्रभू उपसर्ग विजेता, हुए आप कर्मों के जेता।।17।।
नाग नागिनी जो कहलाए, महामंत्र प्रभु जिन्हें सुनाए।।18।।
धरणेन्द्र पद्मावति कहलाए, देव सुगति के सुख जो पाए।।19।।
प्रभु ने संयम को अपनाया, अहिच्क्षेत्र में ध्यान लगाया।।20।।
कमठ घूमते यहाँ पे आया, देख प्रभू को बैर जगाया।।21।।

तब उपसर्ग कमठ ने ढाया, धर्म का सार जान न पाया।।22।।
देवों ने उपसर्ग हटाया, प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया।।23।।
समवशरण तब देव बनाए, देव इन्द्र जयकार लगाए।।24।।
गणधर दश प्रभु के कहलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू पाए।।25।।
श्री सम्मेदशिखर कहलाए, स्वर्णभद्र शुभ कूट कहाए।।26।।
कर विहार प्रभु जहाँ पे आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।27।।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अन्तर्यामी।।28।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी पाए, खड्गासन से मोक्ष सिधाए।।29।।
मुनिवर साथ में शिवपुर वासी, कोटि ब्यासी लाख चुरासी।।30।।
सहस पैंतालिस सात सौ गाए, ब्यालिस मुनि सह मुक्ती पाए।।31।।
सुर-नर पशु जिनके गुण गाते, भक्ति भाव से शीश झुकाते।।32।।
यात्री दूर-दूर से आते, प्रभु की जय जयकार लगाते।।33।।
गाते हैं कई भजनावलियाँ, खिलती हैं जन-जन की कलियाँ।।34।।
पूजा कोई विधान रचाते, आरती करके छत्र चढ़ाते।।35।।
ध्यान जाप करते नर नारी, करें परिक्रमा मंगलकारी।।36।।
योग साधना करते योगी, स्वास्थ्य लाभ पाते हैं रोगी।।37।।
अज्ञानी सद् ज्ञान जगायें, भोगी भोग सम्पदा पायें।।38।।
प्रभु की महिमा है अतिशायी, जीवों को है सौख्य प्रदायी।।39।।
भाग्य उदय में मेरा आया, तीर्थराज का दर्शन पाया।।40।।

दोहा

चालीसा चालीस जो, पढ़े भाव के साथ।
ऋद्धि सिद्धि पाए 'विशद', होय श्री का नाथ।।
स्वर्णभद्र शुभ कूट की, महिमा अगम अपार।
सम्मेद शिखर जी में पढ़ा, चालीसा शुभकार।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनमोक्ष स्थल स्वर्णभद्र कूटाय नमः।

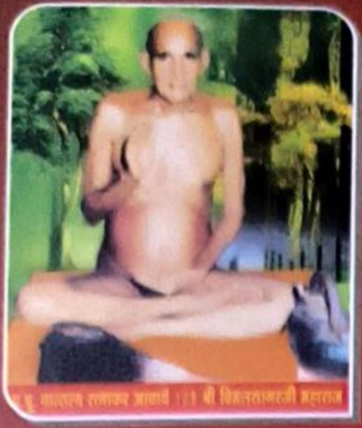

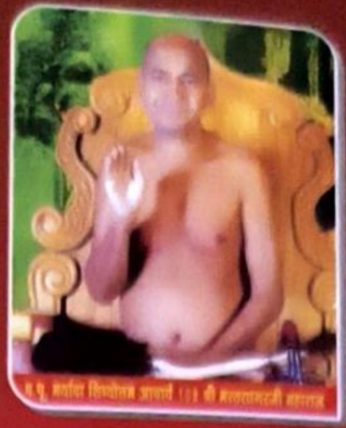

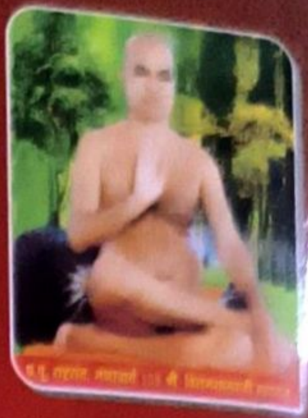

प. पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

पूर्व नाम – रमेश चन्द जैन

(पिता – स्व. श्री नाथूराम जैन माता – श्रीमति इन्दर देवी जैन)

जन्म	: चैत्र कृष्ण चतुर्दशी, 11 अप्रैल 1964, कुपी – छतरपुर
ऐलक दीक्षा	: मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी, 18 दिसम्बर 1993, श्रेयांसगिरी (पन्ना)
मुनि दीक्षा	: फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी, 8 फरवरी 1996, द्रोणगिरी (छतरपुर)
आचार्य पद	: बसंत पंचमी, 13 फरवरी 2005, मालपुरा (जयपुर)

PARAS # 9811374961